Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२



जीवन-चरित्र

महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

प्रथम भाग



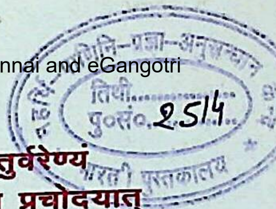
सम्पादक-
स्व० सत्य भूषण
आचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



!! ओ३म् !!

**ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात्**

श्री महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। ओ३म् ।।

महापुरुषों का जीवन पथ–भ्रष्टों को मार्ग दिखाने के लिए प्रकाश स्तंभ है

महात्मा-प्रभु आश्रित स्वामी जी का प्रामाणिक

जीवन-चरित्र



प्रथम भाग





सम्पादक :

स्व० सत्यभूषण आचार्य वानप्रस्थी

वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक (हरयाणा)

प्रकाशक :

श्रद्धालुजन

प्राप्ति स्थान :

वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक-१२४००१

तृतीय संस्करण ११०० प्रति — मूल्य १०.०० रुपये

कार्तिक २०५५ वि० — अक्टूबर १९९८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। ओ३म् ।।

विनम्र निवेदन

तृतीय संस्करण

परम दयालु सच्चिदानंद स्वरूप सर्वान्तर्यामी परमेश्वर की अपार दया से श्री १०८ ब्रह्मलीन पूज्यपाद महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज के जीवन चरित्र प्रथम भाग का तृतीय संस्करण प्रकाशित करते हुए हमें हृदय में अति आह्लाद अनुभव हो रहा है।

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण श्री पूज्य आचार्य सत्यंभूषण ने लिख कर संवत् २०२० विक्रमीय में प्रकाशित करवाया। उस संस्करण के प्रकाशक थे श्रीमान विद्याभूषण जी (आर्य नगर रोहतक)।

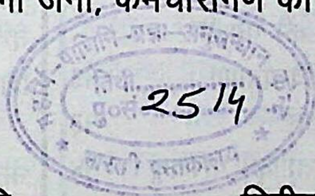
दूसरा संस्करण 'यज्ञ योग ज्योति' के रूप में सन् १९६२ ई० में छपा। उक्त दोनों संस्करणों में पूज्य श्री आचार्य जी ने बहुत योग्यता पूर्ण भूमिकायें लिखीं। इस सम्बन्ध में पाठकों से विनम्रानुरोध है कि जीवन चरित्र के द्वितीय भाग की पूज्य आचार्य जी की भूमिकाओं और विनीत (प्रभुभिक्षुः) के नवलिखित विनम्रनिवेदन को अवश्य पढ़ने का कष्ट करेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तृतीय संस्करण (जीवन चरित्र प्रथम भाग) के प्रकाशन का भार भी उन्हीं श्रद्धालु जनों ने सहन+वहन किया है जिन के प्रति अपनी श्रद्धा भावना और सम्मान विनीत 'श्रद्धा सुमन' पुस्तक के द्वितीय संस्करण में लिखा जा चुका है। पुनरपि उनका अति धन्यवाद और साधुवाद किया जाता है।

ग्रेजुएट प्रैस के संचालक अध्यक्ष श्री रमेश चन्द्र जी शर्मा और उनके सहयोगी जनों, कर्मचारीगण का बहुत–२ धन्यवाद।



कार्तिक संवत् २०५५ वि.
अक्तूबर, ९८
तृतीय संस्करण

विनीत
स्वामी प्रभु भिक्षु
वै.भ.सा. आश्रम, रोहतक
(हरियाणा)



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूचि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँचवां अध्याय

छठा अध्याय

सातवाँ अध्याय

आठवां अध्याय

नौवां अध्याय

दसवां अध्याय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारहवां अध्याय

बारहवां अध्याय

तेहरवां अध्याय



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ ॐ ★

प्रार्थना

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न- आसुव।।

यजु० ३०–३

हे परम पवित्र पतित पावन प्रभो ! हे सवितः देव ! समस्त संसार के उत्पादक, प्रेरक तथा संचालक भगवान्! हे जगज्जननी मंगलमयी मां ! आप की पवित्र प्रेरणा तथा आशीर्वाद से मैं आज शुभ दिन रविवार, फाल्गुण कृष्णाषष्ठी सम्वत् २०१८ विक्रमी, दयानन्दाब्द १३८, स्वाति नक्षत्र प्रातः काल के सुन्दर सुहावने समय में जब आप के रचित दिवाकर की उल्लास तथा जीवन प्रद रश्मियां लेखक के समस्त शरीर को स्पर्श कर रही हैं, अपने पूज्यतम गुरु देव श्री महात्मा प्रभु आश्रित स्वामी जी महाराज की जीवनी लिखने का कार्य आरम्भ करने लगा हूँ। मां ! मैं न तो विद्वान् हूँ न लेखक। श्री गुरु देव जी की कृपा का पात्र अवश्य हूँ और वह तेरी महती कृपा से, इसलिए पुनः तेरे पवित्र चरणों में उपस्थित हो कर आशीर्वाद, सहायता तथा पथप्रदर्शन की याचना करता हूँ कि ऐसे महानतम श्रेष्ठ कार्य में मेरा पथ प्रदर्शन कर क्योंकि "श्रेयांसि बहु विघ्नानि" ऐसा सुन रखा है और भय होता है कि यदि कोई विघ्न बाधा मार्ग में आ जाए तो यह शुभ कार्य अधूरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न रह जाए। अतः अत्यन्त विनम्र भाव से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी इस शुभ कामना को पूर्ण करो।

महान् आत्माओं की जीवनियां, जीवन यात्रा में प्रकाशस्तम्भ का कार्य करती हैं विशेष कर जब कि एक साधनहीन जीवन तेरे ही आश्रय पर अपने कठिनतम मार्ग को भी सुगमता से तय कर पाए। ऐसी घटनाओं को देखकर भूले भटके पथिक प्रोत्साहित होकर श्रेय मार्ग पर चलकर जीवन को सफल बना लेते हैं।

लाङ्गफैलो नामक अंग्रेज कवि ने इस भाव को अपनी कविता में इस प्रकार अंकित किया हैः–

Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime,
And departing leave behind us,
Foot prints on the sands of time,
Foot prints that perhaps another,
sailing o' er life's solemn main
might take heart again.

अतः प्यारी मां ! पुनः प्रार्थना करता हूँ किं प्रतिक्षण मेरी पथप्रदर्शक बन कर सहायता करो ताकि हमारा सब का कल्याण हो।

वैदिक भक्ति साधन आश्रम
रोहतक
२५–२–१६६२ रविवार

सत्य भूषण
आचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावोद्‌गार

भगवान कृष्ण योगेश्वर थे। योग की समस्त विभूतियों से सम्पन्न थे। अर्जुन को रण क्षेत्र में उपदेश करते हुए एक सत्य सिद्धान्त की घोषणा कर गए कि :—

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामी युगे युगे।।

गीता ४—७+८

जब जब पृथ्वी पर भार अधिक हो जाता है, पाप बढ़ ज़ाता है, धर्म का लोप होने लगता है, भक्त और सज्जन पुरुषों को अति कष्ट और पीड़ाएं पहुँचती हैं, दुष्टों के अत्याचार अनाचार का बोल बाला होता है, पापी और दुष्कर्मी पुरुष फलने फूलने लगते हैं तो प्रभु कृपा से कोई न कोई महान् आत्मा इस भूमण्डल पर किसी प्रदेश विशेष में जहां यह सब दुष्कृत्य हो रहे होते हैं, उत्पन्न होकर उस पाप को हलका करती और जीवन का मार्ग सरल सुगम और सीधा बता जाती, दिखा देती और चला देती है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का शुभागमन इसी सिद्धान्त के समर्थन में ही तो हुआ। यह वह समय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था जब भारत की आत्मा अत्यन्त विक्षुब्ध हो रही थी। भारत का स्वातन्त्र्य सूर्य प्रायः अस्त हो चुका था। कुरीतियां, अनेक ईश्वरवाद पाषाणपूजा आदि आदि महारोगों से जनता जनार्दन पथभ्रष्ट होकर दुःख उठा रही थी, भक्ति का सच्चा मार्ग क्या है। कैसे अपनाना चाहिए। यह किसी को शुद्ध रूप में ज्ञात ही न था। प्रत्येक स्वल्प बुद्धि तथा स्वार्थी विद्वान् मण्डल अपनी अपनी डफ़ली बजा, अपनी अपनी दुकान चला रहा था। अनेकों सम्प्रदाय खड़े हो गए। वेद ज्ञान का सूर्य अस्त होने लगा था। वेद का स्थान पुराणों और कपोल कल्पित तान्त्रिक ग्रन्थों ने ले लिया था। ईश्वर की पूजा के स्थान पर माया की पूजा होने लगी थी। माता पिता गुरु आचार्य अतिथि का आदर सन्मान जाता रहा था। एक विकट और दयनीय स्थिति उत्पन्न हो गई थी। उसी समय यदि भगवान दयानन्द के नेत्रों में बैठकर उसे सन्मार्ग न दिखाते और सन्मार्ग की खोज में जो विपदाएं, कष्ट और पीड़ाएं होती हैं उनके सहन की शक्ति न प्रदान करते, निराशा के बादलों को स्वयं न हटाकर हृदय में आशा की झलक न दिखाते और सच्चे, निश्छल, निष्कपट गुरु की भेंट न कराते तो आज न जाने भारत की क्या दशा होती !

भगवान् सर्व शक्तिमान और सर्वज्ञ हैं, सर्व रक्षक हैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वोक्त दयनीय समय में दयानन्द को धर्म रक्षक के रूप में प्रकट कर दिया जिसने वेदों का पुनरुत्थान किया और धर्म का सच्चा, शुद्ध मार्ग दिखा कर भेड़ों की तरह रसातल को जाती हुई जाति को बचा लिया। आर्यसमाज की नींव रखी और संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्योद्देश्य बनाया और न केवल एक अद्वितीय निराकार परमात्मा को ही उपास्य देव बताया अपितु व्यावहारिक, पारमार्थिक, आत्मिक, बौद्धिक, शारीरिक, राजकीय आदि आदि सब प्रकार के शुद्ध, पवित्र और सत् ज्ञान के लिये वेद का भण्डार खोल दिया। आर्यों ने ऋषि का अनुकरण किया, वेद को अपनाया, ईश्वर को अपना एक मात्र उपास्य देव बनाया। अनेकों प्रकार की कुरीतियों–मृतक श्राद्ध, अवतारवाद, सती प्रथा, आदि आदि के विरोध में बड़ा प्रबल आन्दोलन किया और बहुत कुछ सामाजिक सुधार किया। स्त्री शिक्षा को प्रचलित कराया, स्त्री जाति का सम्मान बढ़ाया, अनाथों, विधवाओं और गौवों की पुकार को सुना और इसी प्रकार के सब बाह्यवृत्ति के काम किए परन्तु एक बात, जो मुख्य थी, उस को भूल गए अथवा अवहेलना कर दी अथवा किसी योग्य आत्मा के लिये वह स्थान छोड़ दिया। यह हम नहीं कह सकते। इतना ज़रूर बिना किसी भय के कहते हैं कि भक्ति का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मार्ग ऋषि ने दिखाया था, वह न अपना सके। परिणाम यह हुआ कि ढाक के वही तीन पात। जनता मुख मोड़ने लगी और संभव था कि ऋषि का प्रोग्राम वहां ही समाप्त हो जाता।

परन्तु भगवान की लीला अद्भुत है, उसके बचाने के ढंग निराले हैं,

कया नश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा।।
कया शचिष्ठया वृता।।—यजु ३६—४

आर्य समाज को अपने कार्य में आशातीत सफलता प्राप्त हुई जिससे पांव फिसल गया।

कवि ने कहा है "सहज पके सो मीठा होय" आज कल के वैज्ञानिक अप्राकृतिक ढंग से मशीनों द्वारा मुर्गी के अण्डे से शीघ्र चूज़ा बाहर निकाल लेते हैं अथवा कई प्रकार के फलों को ऋतु आने से पूर्व पका लेते हैं परन्तु अनुभव बताता है कि अप्राकृतिक विधि से तय्यार किया गया फल उतना स्वादु और गुणकारी नहीं होता। ठीक यही अवस्था हमारी हुई। फल तो पका, पर स्वाद नहीं आया। स्वाद दिलाने वाली थी भक्ति, उस का हमने इनजेकशन नहीं दिया और न ही अपना ध्यान उधर गया।

अनेक ईश्वरवाद, पाषाण पूजा, भक्ति का विकृत स्वरूप तो वैसा ही बना रहा। यह कैसे दूर हो ! जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षण और माधुर्य ऊषा काल के आर्यों में था, वह दिन चढ़ने पर धीरे धीरे लोप होता गया, आर्यों का नाम उज्ज्वल् होने के स्थान पर मध्यम पड़ने लगा और शीघ्र ही सूर्य अस्ताचल को भागने लगा। हमने न समझा यह तो भगवान् की एक लीला थी, वह दिखाना चाहते थे कि ओ आर्यो ! असावधान मत हो, देखो आलस्य के बादल तुम्हारे उन्नति के सूर्य–प्रकाश को ढककर तुम्हें पुनः अन्धकार में धकेलना चाहते हैं। उस दयालु परमेश्वर ने स्वयं कृपा की। भारत के पश्चिम से एक अति स्वल्प मेघ आकाश पर दिखाई दिया और वह बढ़ते बढ़ते इतना विस्तृत हो गया कि समस्त भारत देश पर उसकी छाया–मधुर, स्वादिष्ट और शीतल फैल गई। हम उसी नन्हें नन्हें प्यारे प्यारे मेघ का वर्णन करने चले हैं जिसकी न केवल छाया, अपितु अमृत वर्षा ने भक्तिहीन जाति में एक नई जान डाल दी।

आप समझ गए होंगे, हमारा संकेत अपने गुरुदेव महात्मा प्रभु आश्रित जी की ओर है। आने वाले पृष्ठों में हम यह दिखाने का अधिकाधिक प्रयत्न करेंगे कि किस प्रकार उस बालकने भक्ति का राग अलापा, किस प्रकार उसकी मधुर तान ने संतप्त आत्माओं को हिला दिया, रुला दिया, मिला दिया और जिला दिया। किस प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि का भक्ति का सच्चा, सरल, सुगम मार्ग पुनजीर्वित करके अथवा क्रियान्वित करके जनता के सम्मुख रखा, किस प्रकार सहस्त्रों परिवारों को सच्चा आर्य बनाकर ऋषि का अनन्य भक्त बनाया। सोती जा रही जाति को कैसे जगाया। ग्राम ग्राम, नगर नगर, डगर डगर घूम घूम कर वेदों का प्रचार और प्रसार किया, कितना सरल और सस्ता साहित्य जनता को भेंट किया, कि जिससे वह पुनः अपने गौरव को प्राप्त करके उज्ज्वल और पवित्र जीवन बना ले। यह सब कुछ हमने अपनी आंखों देखा, कानों सुना, परीक्षा की कसौटी पर उतारा और सच्च पाया।

पाठक वृन्द ! ध्यान से आपने इस जीवनी को पढ़ा तो निस्संदेह लाभान्वित होंगे।

इतिशम्।

रोहतक
२५–२–६२ सत्य भूषण आचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☆ ॐ ☆

पहला अध्याय

जन्म तथा पूर्वजों का परिचय

श्री महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज का जन्म जिला मुजफ्फरगढ़ की तहसील अलीपुर के जतोई ग्राम में हुआ। ये स्थान अब पाकिस्तान में जा चुके हैं। जन्म तिथि फाल्गुण वदी दोयज सम्वत् १९४३ विक्रमी तदनुसार १३ फरवरी सन् १८८७ ई० शुक्रवार प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में हुआ। बालक का नाम ब्राह्मणों ने सिंह राशी में होने के कारण टेका रखा। टेका मुलतानी भाषा का शब्द है। इस के अर्थ हैं–टेक=आश्रय, सहारा। कौन जानता था कि यह बालक संस्कारी जीव है और यह न केवल अपने परिवार तथा वंश की टेक बनेगा अपितु अनेक नर–नारियों, वंशों तथा परिवारों का आश्रय बनेगा।

पुत्र के जन्म पर माता पिता को स्वभावतः बड़ी प्रसन्नता हुई। आवश्यक और प्रासङ्गिक प्रतीत होता है कि हम यहां उनके वंश का कुछ परिचय दे दें और सब से अच्छा परिचय वह है जो श्री महात्मा जी ने अपनी लेखनी से लिखा है और वह इस प्रकार है :–

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे अपने बड़े चाचा श्री पोखरदास जी और माताजी जो कथा सुनाते थे उस से तो मेरा वंश बड़ा ऊंचा मालूम होगा !"

"मैं और मेरे पिताजी का जन्म तो सिन्धु नदी से पूर्व–तटीय प्रदेश में गाड़ी जात में हुआ और मेरे पितामह का जन्म उसी सिन्धु नदी के पश्चिम तटीय प्रदेश जामपुर तहसील के प्रसिद्ध नगर दाजल में हुआ।"

"हिन्दु जाति में गाड़ी जात में तीन गुट के व्यक्ति थे। एक तो चौधरी की उपाधि से पुकारे जाते थे। दूसरे भक्त और तीसरे 'राय' की उपाधि से सुभूषित किये जाते थे। सब के सब भूमिपति और कई व्यापार भी करते थे। मेरे वंशीय प्रपितामह का नाम राय हेमराज था। बड़े सम्पन्न और भूमिपति थे। माता पिता के इकले पुत्र थे। उनके एक पुत्र श्री चोथूराम जी थे जो मेरे पितामह थे। वह भी माता–पिता की एक ही सन्तान थे। माता पिता के स्वर्गवास हो जाने पर वह प्रायः अपने ननिहाल सलूजा परिवार में राय झांगी राम के पास, जो माना निवासी थे, रहते थे।"

"उन दिनों भग्गी (डाके) पड़ा करती थी। लगान (भूमि कर) न चुकाने पर भूमिपतियों को काट मार दिया करते थे।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे पितामह भय से आतंकित होकर अपने और अपने ननिहाल के गृह को त्याग कर सिन्धु नदी के पूर्वी प्रदेश जिला मुजफ्फरगढ़ तहसील अलीपुर के बस्ती शुमार मौजा कादिरपुर में आ बसे, यहां दुकान का वणिज व्यापार करते रहे। उनका विवाह कादिरपुर में सचदेव जात में हो गया जहां उनके तीन पुत्र पोखरदास, दौलतराम, जेसाराम हुए। दो पुत्रियां भी थीं। ग्राम होने के कारण अक्षर ज्ञान प्राप्ति का कोई प्रबन्ध न था।"

"पितामह जी का व्यवहार विस्तृत हो गया था। पुत्र बड़े हो गए। नगर में बसने का संकल्प किया। ग्रामों में एक–एक दो–दो कमरे होते थे। पितामह बड़े उदार थे। जिनसे ऋण प्राप्त हो सका, कर लिया, न हो सका, क्षमा कर दिया। बहियां रद्द कर दीं। पशु ढोर जो थे, वे भी लोगों को निःशुल्क दे दिए।"

"वहां से १२–१४ कोस की दूरी पर जतोई शहर था वहां आ बसे। अपने समस्त परिवार को साथ लाए और एक गृह किराये (भाड़े) पर लेकर बैठ गए।"

"उन दिनों राज्य की ओर से लवण पर कड़ा पहरा था। चुंगी को जकात (अरबी का शब्द है, अपनी आय का १/४० भाग दान अथवा कर के रूप में दिये जाने को जकात कहते हैं) कहते थे। सरकार के राज्य का अभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैशव काल ही था। पठित व्यक्ति कम मिलते थे। हिन्दी लण्डे पढ़े व्यक्ति को पटवारी बना लेते थे और राज्य कार्यों में हिन्दी लण्डे के अभिज्ञ व्यक्ति को, जो चतुर होते थे, नियुक्त कर देते थे।"

पितामह की नियुक्ति

"पितामह जी एक सुयोग्य व्यक्ति थे। उनको ज़कात का मुन्शी बना दिया गया। इस नियुक्ति से पितामह जी की मान प्रतिष्ठा बढ़ गई। राज कर्मचारी चाहे पांच रुपया मासिक वेतन का भी होता, उस का लोग मान आदर करते थे। नगर में प्रसिद्धि हो गई। पुत्रों को दुकानों पर लगवा दिया।"

पितामह की कुछ मनोरञ्जक बातें

"पितामह की दृष्टि जाती रही। वृद्ध थे। (ज्येष्ट पुत्र पोखरदास जी का और ज्येष्ठा पुत्री मेरी फूफी का विवाह तो वह अपने जीवन काल में कर गए)। मेरे पितामह जी भोपा भी थे अर्थात् भूत विद्या जानते थे। बड़े सज्जन, भक्तिभाव संयुक्त होने के कारण साधारण जनता को उनमें आस्था थी।"

"मेरी माता पितामह जी के सम्बन्ध में दो बातें सुनाती थीं। पहली बात वह अपनी सुनाती थी कि "मैं अल्पवयस्का बालिका थी। सहेलियों के साथ खेल रही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। पितामह जी प्रज्ञा चक्षु तो थे ही, एक ऊँची स्थली पर गली में बैठे हुए थे। कन्याएं उस न देख सकने वाले वयोवृद्ध से छेड़खानी करती थीं। मैं भी शामिल थी। हम सब छेड़ कर भाग जाती थीं, मैं छोटी थी उस ने हाथ फैलाकर मेरी बोछणी (चुन्नी) को पकड़ लिया। मैं खींचने लगी तो उसके मुख से यह वचन निकला कि "जिस छोकरी की यह बोछणी है वह मेरी बहू बनेगी।"

पितामह की भविष्यवाणी

समय आया कि मेरा विवाह उन के मध्यम पुत्र से हो गया।

एक दिन उन्होंने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि "आज बुधवार है। मैं आठवें दिन बुधवार को मर जाऊँगा, तुम उस दिन कहीं बाहर न जाना।" ज्येष्ठ पुत्र ने कहा—"ऐसे मर जाएगा तेरे अपने हाथ थोड़ा है।" मध्यम पुत्र बड़ा आज्ञाकारी और पिता का सेवक था, उसने पिता की बात पर विश्वास रखा। तीसरा छोटा था। आठवें दिन बुधवार आया और पितामह जी ने मेरी दादी से कहा, "लेपा लगा दो और धुसा बिछा दो।" मध्यम पुत्र (मेरे पिता) को कहा कि "पंचायत और मेरे कुल पुरोहित पण्डित बलदेव को बुला लाओ।" दादी ने लेपा लगा धुसा बिछा दिया। आप

दूसरी बात

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पितामह जी उस पर बैठ गये। पुरोहित और पंचायत आ गई, सब राम राम कर बैठ गये, मेरे पितामह जी ने उनसे वार्तालाप किया, अपने पुत्रों की पारत दी और कहा राम ! राम ! मैं परलोक जाता हूँ परन्तु आप आध घण्टा बैठे रहना।" इतना कह कर लेट गए, चादर तान ली और आध घण्टे से पूर्व वह फिर उठ बैठे और कहा, "नाव भर गई थी, मेरे लिए स्थान न था, नाव चल पड़ी। मैं दूसरी नाव में जाऊँगा।" फिर बातें करने लग गये। कुलपुरोहित पण्डित बलदेव ने जो विद्वान भी थे और वैद्य भी, कहा, "चचा, मुझे भी अपनी विद्या दे जाता।, पितामह ने कहा 'शोक ! अब अन्त समय में जब कि कुछ मिनट शेष हैं, पूछता है। पहले क्यों न पूछा !' कुछ मिनट बीतने पर कहा, 'अब मेरी अन्तिम राम राम है' लेट गए और प्राण त्याग दिए।

माता पिता का परिचय

'मेरे पिता का नाम चौधरी दौलतराम था। वह नगर के एक बड़े धनी व्यापारी खोजा जाति के मियां अह्मद अली के गुमाश्ता थे, चौधरी नारायण दास मखीजा उन का बड़ा भागीदार था।

"मेरी माता का नाम सभाई माई था। उनके पिता का नाम चौधरी विशाखाराम और माता का नाम भिरावां

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाई था। जाति के मल्होत्रा थे। सभाई माई अभी गर्भ में थी कि श्री विशाखाराम जी का देहान्त हो गया। उन का भाई श्री भुवानीदास विशाखाराम से छोटा था और अविवाहित था। पुत्री का जन्म हुआ नाम सभाई रखा गया।

"भिरावाँ बाई (मेरी नानी) के मेके मीर हज़ार खान (बस्ती यूसफ़) में रहते थे। मेरे नाना का नाम श्री कोटू राम मादन पोत्रा और भाइयों का नाम श्री नेभाराम और मंघूराम था। उस की तीन बहिनें थी, दो का विवाह उसी ग्राम में सेतिया जाति में हुआ और एक छोटी का विवाह जतोई में एक सम्पन्न जमींदार के घर हुआ। उस के एक पुत्र उत्पन्न हआ ज़िस का नाम किशन राम था। इस किशनराम और सभाई दोनों को भिरावां बाई मेरी नानी दूध पिलाती, पालती थी। सिर पर छत्र छाया न रही थी। जमींदारा तथा जीवन निर्वाह का कोई साधन न था।"

"देवर घबल (मुसलमान जमींदारों से वणिज व्यवहार लेन देन) का काम करता था। दमा का रोगी भी था। स्वगृह में बैठ श्रम कर के जीवन निर्वाह करता। माता और भ्राताओं का बड़ा प्रेम था।"

"वह कई मास निरन्तर अपने पास रखते। सभाई प्रौढ़ावस्था को पहुँच गई। देवर की तबादला में (वट्टा सट्टा की)' सगाई हो गई और विवाह उसी गृह में हुआ जिस की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधाता ने प्रज्ञाचक्षु वयोवृद्ध से भविष्यवाणी कराई थी।"

"पिता की मृत्यु के पश्चात् श्री दौलतराम ने भूमि का एक टुकड़ा क्रय कर लिया, श्री दौलतराम एक सम्पन्न धनीमानी का गुमास्ता था।

बाहर ग्रामीण यवन जमींदारों से वाणिज व्यापार चलता था। पिताजी बड़े शील स्वभाव, उदारचित्त, मिलनसार स्वच्छ पोषी, स्वच्छ पवित्र अन्नाशी थे। दूर तथा समीप के सब सम्बन्धियों से बड़ा प्रेम रखते थे। रियासत बहावलपुर उच्च से सम्बन्धी भी उनके पास आकर ठहरते। यातायात–आवागमन बना रहता और कादिरपुर, यूसफ बस्ती शुमार बस्ती के सम्बन्धी भी उन्हीं के यहां ठहरते। उन दिनों सम्बन्धियों में प्रेम प्रीति बहुत थी। बहुत विज्ञ तो न था। लिखने पढ़ने में चतुर तो बड़ा भागीदार था, बुद्धिमान भी था, परन्तु बाह्य व्यापार व्यवहार के लिए दौलतराम जी थे।

पिता का स्वभाव

मेल जोल रखने से व्यापारियों के बड़े विश्वास पात्र बने हुए थे। आतिथ्य सत्कार में भी प्रसिद्ध थे। अपनी सवारी के लिए एक बढ़िया अश्व (घोड़ा) रखते थे। अश्वारोहण का बड़ा चाव रखते थे। हाट, दौड, मेले ठेले, मल्ल युद्ध तथा कौतुहलादि में अश्वारोहण करके जाते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। विशाल और बलवान शरीर वाले थे अपना निवास स्थान बना लिया था और गौ, मेष और अश्व सदा रखते थे। गौ और घोड़ा उन्हें बहुत प्यारे थे। अपने हाथ से उनकी सेवा करते थे। घर में दुग्ध, दधि, नवनीत (मक्खन) तथा लस्सी सदा रहती थी इसे घर का सौभाग्य समझते थे।

हमारे प्रदेश में विवाहोत्सव पर छेज लगती थी अर्थात् गाटकों के द्वारा खेल तथा नृत्य क्रिया होती थी, यह अच्छी सौभाग्य की रीति समझी जाती थी। शहर् की जनता विवाह वालों के निमन्त्रण पर आदर सम्मान से शामिल होती थी। गाट्के बजाना, एक पाँव अथवा अंगुलियों पर नृत्य करते थे। लोग बड़े प्रसन्न होते थे। मांस, हुक्का, मंदिरा का भी रिवाज था। विवाहों पर और यदा कदा प्रयोग करते थे। मेहमानों के सत्कार में हुक्का तथा मदिरा का कार्यक्रम भी होता था।

पिताजी के विवाह के बाद सर्वप्रथम एक बालिका ने जन्म लिया। जिसका नाम सेवीबाई रखा गया। दो तीन वर्ष बाद एक पुत्र हुआ। जिसका नाम ब्राह्मणों ने प्यारा अथवा प्रीतम पुकारा। चोला की रसम पर उसका नाम टेकचन्द रखा गया। यही हमारे मुख्य व्यक्ति हैं। आप का जन्म जैसे ऊपर बता आए हैं। फाल्गुण बदी, दोयज, सम्वत् १६४३ वि० १३–२–१८८७ शुक्रवार की पवित्र प्रातः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ब्रह्ममुहूर्त में हुआ।

आपके बाद दो और भाई चन्दूराम और ऊधो दास आपसे क्रमशः ३ और ६ वर्ष छोटे हुए। बच्चों की चहल पहल से घर में सब प्रकार से आनन्द मंगल था। हमारे पूज्य बालक के बाल झण्ड के लटा और लिटाएं थीं। बड़ों को प्यारे लगते थे। ऐसी आकृति वाले बच्चों की सरलता और निष्पापता के परमाणुओं से घर में शान्ति और पवित्रता का आलोक रहता है।

माता और नानी बच्चों का पालन पोषण करती थीं। सेवीबाई तो प्रायः नानी के पास रहती । टेकचन्द का जन्म से ही साधु स्वभाव था। देवियां टेकचन्द की माता को कहा करती कि "टेका की मां ! तेरा बच्चा तो खण्ड खीर खा कर पैदा हुआ है।" मां भी जब उठाती, प्रेम से गोद में लेती और कहती, **"मेरा साधु पुत्र, मेरा फ़कीर पुत्र !"** जटाओं को हाथ लगा लगा कर कहती "मेरा ऋषि पुत्र ! मेरा मुनि पुत्र !" इस प्रकार आशीर्वाद तथा साधुवाद के शब्द माँ के मुख से दिन में कई बार निकलतें। सत्य कहा है "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" हम आगे चल कर देखेंगे कि यह आशीर्वाद अक्षरसः सत्य सिद्ध हुआ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा अध्याय

उधर के लोग बालकों का मुण्डन प्रायः वैशाखी के दिन गंगा जी के तट पर अथवा सखी सरवर की कब्र पर जो डेरा गाजी खान से २४ मील दूर थी, वहां जा कराते। और "सरवर पीर लखां दा दाता"—ऐसी लोकोक्ति प्रायः हिन्दु मुसलमानों में थी। टेकचन्द का मुण्डन भी सखी सरोवर में हुआ। लोग सरवर के लिये संघ बना कर जाते और ऊंटों की सवारी करते। सरवर में कुआं बहुत गहरा है, मुसलमान लोग मशक भर पानी मोल देते थे, सब पीते थे, हिन्दु भी मुसलमान भी। मज़ार के पुजारियों को मुजावर कहते थे। उन की साल भर की रोजी इन्हीं बैशाखी के दिनों में निकल आती, क्योंकि वहां एक बहुत बड़ा मेला लगता था, सहस्त्रों नर नारी, बाल बच्चे, जवान, बूढ़े इस यात्रा में दूर दूर से आते थे।

मुण्डन संस्कार

टेकचन्द की आयु जब ५ वर्ष के लगभग हुई तो स्कूल में बिठाया गया परन्तु पिता के मुख मोड़ते ही रोने लगा और मास्टर ने बाहर निकाल दिया। यह देखकर पिता ने हिन्दी लण्डे सिखाने के लिए कई

स्कूल में प्रवेश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुकानों पर बिठाने का प्रयास किया परन्तु सफलता न हुई। अन्ततः जतोई शहर के स्कूल में प्रविष्ट करा दिया।

"एक दिन" श्री महाराज जी स्वयं लिखते हैं, "मैं पिता की दुकान पर गया। पिता जी ने हुक्का पी कर रखा मैंने भी नड़ी मुँह में लेकर सूटा लगाया तो मेरे पिता जी ने मुझे जोर से एक तमाँचा मारा और कहा कि बच्चा होकर हुक्का पीता है। मैं बेसुध हो गया। रोता हुआ घर माता के पास चला गया।"

कुछ दिनों बाद एक और घटना हुई। वह स्वयं लिखते हैं कि "एक दिन मैं दुकान से घर को जा रहा था, दुकान के पास फूफी के पुत्र आशानन्द भटेजा की दुकान के पास से गुजरा, तो ऊंटों की पंक्ति खड़ी थी। एक ऊंट ने मुझे (दड़ा) लात लगाई, मैं गिर कर बेसुध हो गया। मुझे उठा कर घर ले गए।"

"मेरे पिता की दुकान घबल (असामी वणिज) की थी। मेरे छोटे चाचा जेसाराम की परचून की दुकान थी। जेसाराम और पिता इकट्ठे रहते थे। मेरी माता उसे बड़े पुत्र के समान समझकर पालन पोषण करती थी। मेरे बड़े चाचा पोखरदास का साहूकारा व्यापार था। मेरे पिता से अलग था चौका भी उनका जुदा था। उस का अपना मकान न था। पिता ने अपने दो कमरों में से एक कमरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाचा पोखरदास को दे रखा था। चाचा जेसाराम अभी अविवाहित था। उसकी सगाई हो गई। उसके विवाह के पूर्व मेरे पिता ने आंगन में एक कमरा और बनवा दिया कि नव वर वधु सुविधा से स्वतन्त्र रूप से उसमें वास कर सकें। विवाह हो गया। दहेज में नई रज़ाई और कुछ और सामान मिला।"

टेकचन्द की खर्ची

टेकचन्द को प्रतिदिन खर्ची का पैसा, अधेला अथवा कसीरा (एक चौथाई पैसा) मिलता था और वह भी तब, जब वह पिता की हुण्डी चाचा के पेश करता। पिता जी उस की हथेली पर खर्ची की राशि लिख दिया करते, वह चाचा जी को दिखाकर हुण्डी वसूल करता और मध्याह्न के पश्चात भोजन के लिये पकोड़े लिया करता।

"मेरी दादी वृद्धा थीं। मेरे पिता उसकी बड़ी सेवा करते थे, वह बहुत आशीश देती थी। चाचा पोखर दास उपराम रहता और छोटा चाचा जेसाराम क्रूर स्वभाव था। दूध की धार निकाल कर जब पिता जी उसे घर ले जाने को देते तो वह मार्ग में दूध में तृण मिला देता। जो बच्चों को पीते समय चुभते थे और खांसी आ जाती। माता उसे बहुत समझाती परन्तु वह बाज़ न आया, अपनी शरारत पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृढ़ रहा। एक दिन वह आवेश में आकर एक लकड़ी का बक्सा मेरी माता के सिर पर मार कर भाग गया। बक्से की लोहे की मेखे मां के सिर पर लगी, जिनसे रुधिर प्रवाहित हो रहा था। मेरे पिता बहुत गम्भीर थे। बलवान और बड़े भी थे, चाहते तो जेसाराम को दंड दे सकते थे, परन्तु बच्चा समझ कर क्षमा कर दिया।

सर्दी की ऋतु थी, मेरे पिता जी ने मेरे चाचा जेसाराम को कहा कि आप के दो तोषक हैं, एक नई तोषक माता जी को दे दें। हमारी पुरानी हैं, परन्तु बच्चों के प्रयोग से वह अपवित्र हो चुकी हैं, उसे अच्छा न लगा। यहां से कलह प्रारंभ हुआ। इन दिनों नानी जी रुग्ण हो गई। मेरे पिता जी दूध लेकर नानी के घर गए और पूछा कि रात्रि की सेवा के लिये आज्ञा दें तो यहां सो जाऊं। नानी ने आज्ञा न दी।

"पीछे दोनों चाचाओं ने षडयन्त्र रच लिया। जब पिता जी नानी के घर से लौट कर आए तो उस समय जेसाराम ने पिता जी के सिर पर, जब पौड़ियों पर चढ़ रहे थे, एक मोटी शहतीरी (कड़ी) जोर से मारी, जिस से पिता जी धड़ाम से गिर पड़े। शहतीरी के आघात की ध्वनि सुन माता उठी और कहा कि जेसा क्या किया? माता नीचे गई, और सब नीचे चले गए। माता ने बावेला कर दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अड़ोसी पड़ोसी सब इकट्ठे हो गए। रात्रि का समय था रात्रि की आवाज दूर तक जाती है। वास्तविक घटना को दबाने के भाव से प्रकट किया गया कि सरसाम हो गया है। चौकीदार मौके पर पहुंच गया। उसे कहा गया कि मुर्गा लाइए। पिता जी को उठा कर अन्दर ले गए। सब बच्चों को आंगन में सुला दिया। पिता जी के प्राण पखेरू उड़ गए थे। मुझे निद्रा न आई।

प्रातः मैंने स्कूल जाना था। मेरी पुस्तकें आले में पड़ी थीं और वहां पिता का शव पड़ा था। मुझे ज्ञान न था क़ि पिता मर गया है। मैं बस्ता लेकर स्कूल चला गया। स्कूल में अब्दुल्ला मास्टर ने मुझ से पूछा क्यों रोता है ! क्या तुम्हारे पिता को सर्प ने काट खाया है ! मास्टर ने मुझे घर वापस भेज दिया।

गौ का प्रेम

जब मैं स्कूल से वापस आया तो मेरे पिता का शव निकाला जा रहा था। मेरे पिता की गाय थीं, उसे जल पिलाएं न पीती थी और न चारा खाती थी। पिता जी गौ की बड़ी सेवा किया करते थे। अन्ततः गौ को जब शव के पास लाया गया, गौ ने शव को देखा तो गौ ने वहां प्राण त्याग दिए।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशु का अपने स्वामी से इतना प्रेम था

माता और नानी की उदारता

"पुलिस भी मौके पर पहुँच गई। थानेदार ने बयान लिया तो माता जी ने कहा कि जेसाराम ने लठ मारी और मेरा पति मर गया। पुलिस ने जेसा राम पोखरदास को हथकड़ी लगा दी। पंचायत ने पुलिस के पास जा कर पोखरदास को तो क्रियाकर्म करने के बहाने से कारावास से छुड़ा लिया। थानेदार ने कहा कि सरदार कौड़ा खान मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी के समक्ष माता और नानी के बयान करा दें। लोगों ने देवियों को समझाया इन्हीं बयानों से जेसाराम को मृत्यु दण्ड मिल जाएगा और नव विवाहित बहु विधवा हो जाएगी। पहले तुम दो भी विधवा बैठी हो। माता नानी के रक्त ने पलटा खाया और बयान से मुकर गई। मजिस्ट्रेट के समक्ष कह दिया कि जेसाराम ने नहीं मारा, पौड़ियों से गिर पड़ा और अपनी आई मर गया। थानेदार ने दोनों देवियों को धूप में बिठा दिया। जेष्ठ मास की कड़कती धूप पसीने से देवियां शराबूर हो गईं। इधर मेरे छोटे दुग्धाहारी भाई मां का दूध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीना चाहे, पुलिस आज्ञा न दे। बच्चा तो बिलख बिलख कर मर गया। घर में सहानुभूति प्रकट करने लोग आवें, तो कोई स्वागत करने वाला नहीं।"

अन्ततः पञ्चायत ने सरदार कौड़ाखान को सच्चा सच्चा वृत सुना कर देवियों के भावी दुःख और परिवार की तबाही का भयानक दृश्य दिखा कर प्रार्थना की कि किसी प्रकार से बचाएं। सरदार कौड़ा खान ने डेढ़ वर्ष का जेसाराम को घोर कारावास का दंड दिया और देवियों ने इतनी आपत्ति और यातना को अपने ऊपर सहन कर के जेसाराम को और परिवार को बचा लिया और बहुत काल तक इस घटना को अपने बच्चों से भी छिपाए रखा।

धन्य हैं ऐसी माताएं जिन्होंने अपने ऊपर सारा बोझा लेकर भी बच्चों के हृदय में द्वेषाग्नि के अंकुर तक को घुसने न दिया

"पिता की मृत्यु के बाद १३ वें दिन धर्मशाला में हमें दुकान पर पग बन्धवा कर ले गए। चौधरी नारायण दास दूसरा भागीदार दुकान पर रहा। हमारे साहूकार अहमदअली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोजा ने मुझे कहा, अंगूठा लगा दो। मुझ से और मेरी नानी से भी अंगूठा लगवा लिया और कहा कि उधार तथा लेन देन से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। ज्येष्ठ मास में नया अनाज उतरता था। उधार मेरे पिता जी वसूल करते थे। अब के नारायण दास ने वसूली कर ली। घर में खाने को अन्न न था, पहला अन्न समाप्त हो गया।

"मेरा छोटा दुग्धाहारी भाई डेढ़ वर्ष का मर गया, दादी भी मर गई। मैं अनाथ हो गया। मेरी माता छापा कल्ली जानती थी और दो पैसे के ५ सेर दाने पीसती थी। मेरी माता नानी दोनों श्रम करती थीं। ३ बजे प्रातः उठ कर दानें पीसती थी। कल्ली छापा में चार आने प्रति बोछन मिलता था जिस पर कई दिन लग जाते थे। उसी आय पर हमारा निर्वाह होता।

"शीत ऋतु में बिनोलों का बेलना चलातीं। एक दिन का शाक दो दो तीन तीन दिन खाते। सख्त सर्दी में बाजरा की और फाल्गुन में जुआरी की और बाद में चावल की चपाती लस्सी (तक्कर–छाछ) के साथ खाते थे।

मेरी नानी गोबर इकट्ठा कर लातीं और उसी का ईंधन बना लाती। मेरी माता बड़ी बुद्धिमत्ता से काम लेती।

'पिता, दादी और छोटे दुग्धाहारी भ्राता के एक ही गृह से उठ जाने और जेसाराम चाचा के कारावास में चले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने से हम अनाथ हो गए। कुछ काल बाद सम्बन्धियों ने हमारे पास आना जाना बन्द कर दिया। चाचा पोखरदास भी हमारा संरक्षण करने से बचने के लिए इस भाव से किसी और स्थान पर चला गया कि इन का घर निर्जन भाग में है, स्वयं भय से घर छोड़ जायेंगे और मैं अधिकार में ले लूंगा। परन्तु चाचा का यह षडयन्त्र सफल न हो सका। गर्मी के दिनों में मेरा प्रज्ञाचक्षु फूफा आकर हमारे घर सोता था और सर्दी में मेरी नानी आ सोती थी। मेरी चाची, जेसाराम की धर्मपत्नी, अपने मेके चली गई। पंचायत ने हमारा उत्साह बढ़ाया और कहा कि घर न छोड़ो। हम ने न छोड़ा।"

अनाथ और षड्यन्त्र

जिस स्त्री के सिर से पति की छत्र छाया उठ जाए और पति छोटे छोटे बच्चे छोड़ जाए, खाने के लिये पाई पल्ले न हो तो देवी के लिये सन्तान का पालन पोषण कितना कठिन हो जाता है इसका अनुमान लगाना सुगम नहीं। परन्तु जो मां सुघड़ हो वह बच्चों पर आंच नहीं आने देती वह दुःख को भी सुख में परिवर्तित कर देती है।

दुःख से सुख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे महाराज जी की माता समय भी बचाती थी और पैसा भी, बड़े कटोरे में सब्जी चढ़ा देती और आप पास बैठ कर छापा करती रहती। घर के सामने एक ब्राह्मणी का घर था। वहां से दो पैसे में एक सेर रोटियां (चपातियां) ले आतीं जहां पकाने और घृत से बचत आती वहां इस ढंग से ले आती कि बच्चों को ज्ञान तक न हो सके कि मां ने स्वयं पकाई हैं अथवा कहीं से मोल ले आई है।

चोर पकड़ा गया

रहस्य प्रकट हो गया

एक दिन टेकचन्द ने स्कूल से वापसी पर आकर देखा तो मां ब्राह्मणी से रोटियां तोलकर ले रही है। मां को लज्जित होना पड़ा। रहस्य खुल गया।

दिल बहलावा

एक दिन महाराज जी ने फरमाया था कि "मेरे नाने का भाई मेरा दिल बहलाता था। जब मैं तीसरी में था तो वह कहता, टेका ! मापो। कितने कदम हैं। अपने बक्स से इस्टाम्प निकाल कर मुझे कहता—सुनाओ, क्या लिखा है। मैं पढ़ कर सुनाता। वह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहता मन कि .... मैं कहता .... मुहम्मद बखश .... वह कहता .... वलद .... मैं कहता करीमबखश जात....स्वयं कहता जाता और मुझे शिक्षा देता जाता। यह अनुभव मुझे हो गया। रात्रि को पहाड़े याद कराता।"

"एक दिन अद्धा और चाचा ने; जब मात्तम पुरसी (संवेदना प्रगट करने) को लोग आते, हम रोते रहते तो मुझे हुक्का पीना सिखा दिया।" (और क्या करते? जो काम वे स्वयं करते थे उसी की शिक्षा ही देनी थी–सम्पादक)

"मेरा एक अध्यापक टिक्कन राम था। मैं उस के घर जाकर एक मटका जल का भर आता था। मटका बड़ा था। गली में जब गुज़रता तो गली वाली देवियाँ कहती, देखो ! अनाथ पर कितना अत्याचार है, छोटा सा बालक है, और इतना बड़ा मटका उठवाते हैं। मुझे न अपने अनाथपन का विचार आता न मटके के भारी या बड़ा होने का ख्यांल आता।"

एक बार मौलवी अल्लाह यार ने पढ़ाया :–

"मेरी प्यारी अम्मां ! मेरी जान अम्मां।
न कुछ मुझ में ताकत थी जिस आन अम्मां।
तुम्हीं को था हरदम मेरा ध्यान अम्मां।"

जब वह पढ़ता था तो स्वयं रोने लग जाता और मैं भी रोने लग पड़ता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां नानी रात्रि को कथा सुनने जातीं, टेकचन्द तथा उस के छोटे भाई चन्दू को भी साथ ले जाती, मार्ग में जहां जहां ज्योति होती, उन से माथा टिकवाती। ये दोनों तो सो जाते, माताएं मट्टर निकालती रहतीं और कथा भी सुनती रहतीं। आरती के समय बालक जाग पड़ते। बालकपन के झुकने के संस्कार जवानी और परिपक्व अवस्था में वह फल लाए कि संसार को झुका दिया।

संस्कार

"दोनों चाचे हमें" श्री महाराज जी लिखते हैं। "छोड़ गए। हम (एक मैं और दूसरा मेरा भाई) अनाथ थे। मेरा माता मेरी भगिनी के तबादला में एक निर्धन परन्तु प्रभावशाली परिवार में कर दिया गया। मेरे बहनोई (जीजा जी) का नाम नेभ राज था।

परमात्मा के रक्षा के अलौकिक ढंग

"एक बार ऐसी घटना घटी कि घर में आटा समाप्त होने को आ गया। माता भोजन खा लेने पर प्रतिदिन हाथ जोड़ भगवान का धन्यवाद करती और कहती, **"डेंदा पलेंदा जीवें"** (दाता पालक सदा जीवित रहे !) पहिले दिन तो बच्चों को तृप्त कर खिला दिया और सुंधड़े में रात्रि को भी बच्चों के लिए दो चपातियां रख दीं। माता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए केवल एक चपाती बची, माता ने बड़े सन्तोष से खा कर भगवान का धन्यवाद किया। दूसरे दिन केवल आधी रोटी बची। तीसरे दिन बच्चों को तो खिला दिया, न माता के लिए चपाती बची और न रात्रि को बच्चों के लिए रखी गई। प्रभु की लीला, बच्चों को तो सांय काल ही निद्रा देवी नें अपनी गोदी में विश्राम दे दिया और माता ने केवल जल पान कर दिन भर उपवास किया भगवान का पूर्व प्रकार अपने शब्दों में धन्यवाद किया परन्तु साथ ही मेरी माता को चिन्ता हुई कि बालक कल क्या खायेंगे। चैत्र मास था। मेरा बहनोई आनरेबल सरदार कौड़ाखान जैलदार तथा आनरेरी मैजिस्ट्रेट का कारदार (भृत्य) था। सरदार कौड़ाखान नदी पार अपनी भूमि पर गया। खिलवाड़ गाही जा चुकी थी। सरदार घंर लौटने को तय्यार था। प्रभु कृपा से वायु जो कई दिनों से बन्द थी, चल पड़ी। कृषकों ने सरदार साहिब को कहा कि सरदार साहिब ! प्रभु कृपा से आज वायु चल पड़ी है, नदी का जल भी बढ़ने लग पड़ा है। खिलवाड़ में से अन्न और भुसी को केवल जुदा करना बाकी है। हम रात ही रात में अन्न जुदा कर देते हैं, आप रात्रि को यहां विश्राम करें। प्रातः अन्न बांट कर लेते जाएं। सरदार साहिब ने स्वीकार कर लिया और अपने कारदार नेभराज को संदेश भेजा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि कल प्रातः सूर्योदय से पूर्व खिलवाड़ पर पहुंचकर अन्न बांटों।

परमेश्वर ने नामालूम कैसे नेभराज की वृद्धा माता को प्रेरणा दी कि उसने अपने पुत्र नेभराज को कहा कि अपने श्याला टेका को बार (स्फाति) पर साथ लेते जाओ। गरीब आदमी है, न जाने उनके घर में खाने को अन्न है कि नहीं। सरदार से कुछ दाने दिलवा देना।

नेभराज ने पहले तो न माना परन्तु जब घर के बाहर द्वार तक आई और कहा कि बच्चा ! मेरे चिट्टे चूण्डे (सफेद बालों) की लाज रखना, श्याले को जरूर साथ ले जाना। नेभराज ने कहा, क्या कहूंगा और कैसे करूंगा। मां ने उत्तर दिया, कुछ नहीं, दो पैसे के पतासे ले देना वह सरदार को प्रणाम भी कर देगा और पतासे सामने रख देगा। नेभराज ने माता के परामर्श को स्वीकार कर लिया।

आधी रात्रि तक मेरी माता जागती रही और कहती रही ओ कृष्ण कन्हैया ! मेरी लाज रख ! मेरे घर के दाने नहीं, कल बच्चे क्या खांएगे?

प्रातःकाल नेभराज ने मुझे आवाज दी। माता के कहने पर मैं नीचे उतर आया। नेभराज ने कहा आओ, चलो द्वार खोल मैं साथ हो लिया। प्रभु की लीला ! रात्रि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को जल वेग से बह रहा था, प्रातः हमारे नदी तक पहुँचने पर जल का वेग कम हो गया था। हमने नदी पार की और जब वहा पहुँचे तो मैंने कौड़ाखान को प्रणाम किया और पताशे उसके सामने रख दिए। खिलवाड़ पर उस समय कोई साधु, फकीर भिक्षुक नहीं था न किसी को ज्ञान थां कौड़ाखान ने समझा कि यह निर्धन बालक प्रतीत होता है, कारदार को बुलाया और कहा "कज्जकुलाह"–(टेढ़ी टोपी वाले)– उसे कज्जकुलाह कह कर पुकारता था। रोम के सम्राट को भी इसी नाम से सम्बोधन किया जाता था–इस बालक को एक पाई–आधमन दाने (अन्न) भर दो और गर्दभ वाले को कहा कि इस बालक को घर पहुँचा दो।

माता व्याकुल हो रही थी 'टेका कहां गया?' सूर्य उदय हो चुका था। गर्दभ वाले ने जाकर कहा "माता जी। यह अपना बालक और दाने (अन्न) संभाल लो।" माता गद् गद् हो गई। मेरा भाई अभी सोया हुआ जागा ही न था। मुझे स्कूल जाने में देर हो गई थी। मैंने अपना बस्ता उठाया और स्कूल चला गया। भाइ उठा तो उसके मित्र खिलाड़ी बच्चे उसकी प्रतीक्षा में खड़े थे, वह निद्रा से उठते ही उनके साथ हो लिया। आज मां से किसी ने रोटी न मांगी। परमात्मा ने मां की लाज रख ली।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता ने दाने साफ करके आटा पीसा और समय पर अपने पुत्रों को खाना खिला अति प्रसन्न हुई। एक मास का निर्वाह चल गया। प्रभु की क्या ही अद्‌भुत लीला है, किस प्रकार उसने वायु को गति करने की, जल को मन्द गति हो जाने की, सासु को पुत्र को परामर्श देने, सरदार को उदारता से दान देने की प्रेरणा की। इन्हीं घटनाओं को देख, सुन कर भक्त के हृदय में प्रभु चरणों में प्रीति का प्रवाह उमड़ पड़ता है।



तीसरा अध्याय
स्कूल की कुछ बातें

पहली घटना

हमारा वीर बालक टेकचन्द तीसरी कक्षा का विद्यार्थी था। इन्सपेक्टर साहिब आये स्कूल का निरीक्षण परीक्षण करने। सरदार कौड़ाखान साथ था। इन्सपैक्टर ने पूछा मुजफ्फरगढ़ की कितनी तहसीलें हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे टेकचन्द जी ने हाथ आगे कर के कहा 'तीन' 'कौन कौन सी?'

उत्तर– 'मुजफ्फर गढ़, सिनावाँ और तीसरी .... याद न आई। कौड़ाखान ने कहा, "हां, हां, शाबाश ! शाबाश ! कहो बच्चा कहो।"

बालक फिर–मुज़फ्फरगढ़, सिनावां और तीसरी... फिर याद न आई।

कौड़ाखान ने कहा, "अपना नाम लिखो। बालक ने झट अपना नाम लिखा, टेका, जमाअत (कक्षा) तीसरी सकना, (निवासी) जतोई तहसील अलीपुर।"

कौड़ाखान ने कहा, हां अब बताओ ! अब भी अलीपुर का नाम न ले। कौड़ाखान ने कहा लड़के को याद तो है शरम कर जाता है।

पुरस्कार

"मैं तीसरी कक्षा में पढ़ता था 1894-1895 की बात है। मेरे स्कूल के अध्यापक ला० देवीदास जी थे (दायरा दीन पनाह के निवासी थे)। नार्मल पास थे। उन दिनों नार्मल पास को 8 रुपये वेतन मिलता था। उन की पगड़ी मल मल की बहुत फट चुकी थी। एक दिन वे नई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पगड़ी ले आए और पुरानी उतार कर मुझे दे दी कि लो टेकचन्द तुम अपनी कक्षा में चतुर हो, तुम्हें पुरस्कार देता हूँ। मैं लेकर माँ के पास आया और कहा, उस्ताद जी (अध्यापक महोदय) ने पुरस्कार दिंया है। मेरी मां ने हाथ लगाया तो वह मलमल और फटने लगी। मन में मां ने विचार किया कि निर्धन अनाथ जान कर सहायता की है। ऊपर से पुरस्कार शब्द का प्रयोग किया है। मेरी मां की आंखों से अश्रु टपके और अपने को संभाल भी लिया ताकि टेका पर कोई कुप्रभाव अनाथपन तथा निर्धनता का न पड़े। पगड़ी को बड़ी सावधानी से धोकर सुखा कर उसकी तहबन्दी कर दी। सब फटे पुराने जर्जरित भाग अन्दर छिप गये और मुझे बन्धा दी और कहा कि तह बनाकर बांधने से कपड़ा चिरायु होता है, और सुन्दर भी लगता है। देखना ! इसे खोल कर न बांधना। जब कभी खुल जावे तो आप न बांधना न किसी से बंधवाना। मैं बांध दिया करूंगी। मेरा उस पगड़ी से न जाने कितना काल बीत गया।"

दूसरी घटना

दीवाली के दिन थे। नेभराज की दुकान पर मिट्टी की हाण्डियां रखी थीं। उनमें मिष्ठान्न भरा जा रहा था। एक बड़ी हाण्डी थी उस पर हमारे वीर टेकचन्द ने लिख दिया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौड़ाखान कुत्ता"। उन्हें यह ज्ञान न था कि इसका क्या परिणाम होगा। नेभराज अक्षर ज्ञान से अनभिज्ञ था। दैववशात् वही हाण्डी मिष्टान पूरित सरदार कोड़ाखान को भेंट की गई। कौड़ा खान ने देखा और नेभराज को बुलाकर कहा "कजकुलाह! इस हाण्डी पर किसने लिखा है–जो लिखा है बहुत ठीक लिखा है।" नेभराज खुश हो गया। कहा मेरे श्याले ने लिखा है।

नेभराज ने पूछा, सरदार साहिब क्या लिखा?

सरदार–लिखा है "कौड़ाखान कुत्ता।"

यह सुनकर नेभराज विस्मित और लज्जित हो गया। कौड़ाखान ने कहा, "नहीं बच्चे ने ठीक लिखा है। लाखों की सम्पत्ति है और कुत्ते की तरह हम पराई आश लगाये रहते हैं। इस लड़के को बी०ए० तक पढ़ाना।"

पांचवीं तो जतोई में पास कर ली। अब हमारे टेकचन्द की माता निर्धनता के कारण उसे विद्या दिलवाने को तैयार न थी नेभराज ने तो कौड़ाखान के परामर्श को सींचना था। अतः उसे अलीपुर मिडिल स्कूल में जो जतोई से १० मील दूर था, प्रवेश कराने के लिये नेभराज ले गया। मुख्याध्यापक का नाम जैनुलाब्दीन बी०ए० था। जब स्कूल में पहुंचे तो मुख्याध्यापक नहीं था;

तीसरी घटना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक विद्यार्थी मानीटर श्रेणी में खड़ा हुआ पढ़ा रहा था, हमारे वीर ने समझा मुख्याध्यापक यही होगा, झट चरणों पर हाथ रख कर प्रणाम किया। बालक तो किसी से परिचित न था। थोड़ी देर में मुख्याध्यापक आ गया और सब खड़े हो गए। इस ने भी प्रणाम किया।

मास्टर साहिब ब्लैक बोर्ड पर (Black Board) पर अंग्रेजी का शब्द COMFORT लिखकर पढ़ाने लगे और विद्यार्थियों से कहलवाने लगे C-O-M-F-O-R-T कम्फर्ट–सब बोले परन्तु अध्यापक महोदय ने पूछा तो किसी ने उत्तर न दिया। हमारे वीर सेनानी ने कहा, मैं बताऊं। बोले बताओ–झट कहा C-O-M-F-O-R-T कम्फर्ट। मास्टर साहिब बड़े प्रसन्न हुए और पूछा कहां तक पढ़े हो। कहा, कुछ नहीं, आज ही स्कूल में आया हूँ। मास्टर साहिब पर हमारे वीर की बुद्धिमत्ता की छाप लग गई। झट स्कूल में प्रविष्ट कर लिया।

नेभराज जी ने कहा, "यह ज़िर्धन अनाथ बालक है इसे शुल्क से मुक्त किया जाय"। मास्टर जी ने उत्तर दिया कि "तुरन्त माफ नहीं हो सकती।"

नेभराज चला गया। वीर को छात्रावास में स्थान तो मिल गया परन्तु रात्रि को रोता रहा। छात्रावास के प्रबन्धक ने विद्यार्थियों से पूछा कि कोई इसका सम्बन्धी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ? एक बालक ने कहा कि मेरा सम्बन्धी प्रतीत होता है। मैंने इस के रोने से पहचाना। इस का पिता मर गया था, मैं अपने पिता के साथ सहानुभूति प्रकट करने गया था, वहां इसे रोता देखा था, ऐसे ही रोता था।' यह सुन कर सब बालक हंस पड़े।

शनिवार को जब घर वापस आया तो वीर ने स्कूल जाने से इन्कार कर दिया। मुख्याध्यापक ने अनुपस्थित देख थानेदार को लिखा कि इस विद्यार्थी को भिजवाओ। हमारे वीर ने उदास हो जाने के नाते स्कूल जाने से निषेध कर दिया। पं० अमीर चन्द थानेदार था उसने कहा कि मेरा पुत्र देशराज सहपाठी साथ चलता है दोनों इकट्ठे रहोगे। स्कूल चले गए। देशराज रात्रि को डेरागाजी खान निवासी दीवान कन्हैयालाल तहसीलदार के घर चला जाता और दिन को हमारे वीर के पास रहता।

वृत्ति मिली

मुख्याध्यापक ने मुझे शुल्क से विमुक्त कर दिया परन्तु आटा लेने के लिये प्रति शनिवार मुझे घर जाना पड़ता था। एक दिन मुख्याध्यापक ने पूछा कि घर को क्यों जाते हो, मैंने कहा आटा लेने जाता हूँ।

मुख्याध्यापक—कितना आटा लाते हो?

मैं—पांच सेर।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्याध्यापक—इतना ! हम दो जीव हैं मैं और मेरी पत्नी, हम तो इतना सप्ताह भर नहीं खा सकते। हमारा तो आध आध पाव खर्च होता है।

फिर मुख्याध्यापक ने छात्रावास के सुपरिन्टेन्डिन्ट (प्रबन्धक) को बुलाकर कहा कि अब से छात्रों की चपातियां गिनकर उनके नाम लिखा करो।

अब मेरा आटा तो बहुत कम हो गया।

मुख्याध्यापक—क्या खर्च आता है।

मैं—एक रुपया मासिक।

फिर मुख्याध्यापक महोदय मुझे श्री जयदयाल मुनसिफ के पास ले गया और कहा कि एक रुपया इस छात्र की छात्रवृत्ति लगा दें। मुनसिफ ने बड़ी कठिनाई से स्वीकार किया। मुनसिफ ने कहा कि प्रति मास की पहली तिथि को आ जाया करो।

मैं गया। मुझे कहा कि कचहरी के द्वार पर ठहर जाओ। जो अभियुक्त आता उस से एक पैसा मुझे दिलवाता। मेरे जब ६४ पैसे हो जाते मैं चल देता।

(मेरे पिता ने किसी व्यक्ति से ३०) रु० वापस लेना था। मेरा बहनोई ने वसूल करके हमें ला दिए। जैसाराम मेरे चाचे ने ऋणी पर अभियोग दायर कर दिया। उसने कहा मैं तो अदा कर चुका हूँ। जैसाराम ने जयदयाल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनसिफ़ को घूस देकर जहां अभियोग अपने पक्ष में डिग्री करा लिया वहां १) रु० मासिक मेरी छात्रवृत्ति भी बन्द करा दी।

वृत्ति बन्द

तो कचहरी के कर्मचारियों को दया आई। एक अहलमद (कर्मचारी) ने टेका को बुला कर कहा कि तुम यह समन ले जाया करो और इस प्रकार से उनके रिक्त स्थान भर दिया करो, एक आना उसके बदले में टेका को मिल जाता। तब तो बालक होने के नाते उनका धन्यवाद करता या न, यह नहीं कह सकते परन्तु अब तो उनकी स्मृति आ जाने पर प्रभु की इस असीम कृपा और गुप्त सहायता के लिये प्रेम के अश्रु–धारा प्रवाह बह जाते हैं।

हमारा नायक स्वयं लिखता है कि "एक दिन ऐसा भी आ गया कि शनिवार को छात्रावास के प्रबन्धक ने बुलाकर कहा कि टेकचन्द ! तुम्हारे जिम्मे पांच सेर आटा निकलता है, ले आओ नहीं तो रोटी आगे के लिए बन्द हो जायेगी। जाओ मां से आटा ले आओ।

छुट्टी लेकर घर चल पड़ा। दस मील की यात्रा थी। मार्ग में विचारों की क्या उथल पुथल होती रही कि पांच मील पर ही थक गया हालांकि पहिले कभी थकावट न होती थी। सड़क के कुछ दूरी पर एक कूप था, वहां जा कर बैठ गया और विचार करने लगा कि जा तो रहा हूँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान जाने मां के पास आटा होगा भी कि नहीं। क्या कहेगी? अच्छा पुत्र पढ़ने लगा कि इस की आटे की मांग भी समाप्त होने को नहीं आतीं। यदि उसके पास आटा न हुआ तो वह यह जान कर कि टेका की रोटी बन्द हो जाएगी, सिवाय रोने के और क्या करेगी और मेरा पढ़ना भी बन्द हो जाएगा। अब तो फिर किसी हलवाई की दुकान पर बर्तन ही मांजने पड़ेंगे। परन्तु वाह रे प्रभु ! तेरी लीला।

दैवी सहायता

एक बार शनिवार सांय को हमारा चरित्र नायक अकेला ही अपने घर जतोई को जा रहा था। मार्ग में थक गया और समय भी बीतता जा रहा था। कुछ घबरा सा गया कि कब पहुंचूंगा। लगभग आधा ही मार्ग तय किया होगा कि पीछे से एक अश्वारोही आ मिला। उन्होंने देखा कि बालक घबराया हुआ और थका हुआ प्रतीत होता है, पूछा "वत्स, कहां जाते हो" वीर ने उत्तर दिया कि जतोई घर जाता हूँ, "अश्वारोही ने जब उत्तर सुना तो उसका हृदय आर्द्र हो गया, और कहा कि मेरे पीछे चढ़ जाओ।" चुनांचि टेका चढ़ गया, अश्वारोही लाला रेमलदास अर्जी नवीस था। जो मूलचंद विद्यार्थी का जिस ने पहले दो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन हमारे वीर का भोजन से स्वागत किया था मामा (मातुल) था, मूलचंद इस वर्ष के प्रारम्भ में स्कूल छोड़कर घर चला गया था। लाला रेमलदास का घर छोटी जतोई में था वह वहां जा रहे थे। अब वीर से जो बातचीत हुई, वह महाराज जी के अपने शब्दों में नीचे दी जा रही है।

लाला साहिब–वत्स ! तुम्हारा क्या नाम है? किस कक्षा में पढ़ते हो?

टेका–मेरा नाम टेका है। छठी कक्षा में पढ़ता हूँ।

लाला साहिब–किस के पुत्र हो?

टेका– चौधरी दौलतराम गाडी का।

लाला साहिब–क्या काम करते हैं ?

टेका का मन भर गया और भरे स्वर से बोला कि वह मर चुके हैं।

लाला साहिब–अब खर्च तुम को कौन देता है और घर अब क्या लेने जा रहे हो? अकेले, बिना साथी के और इतनी देर में !

टेका का दिल तो पहले ही भर गया था अब यह प्रश्न सुन कर बोल न सका, दो तीन मिन्ट तक लाला साहिब ने प्रतीक्षा की फिर पीछे मुड़ कर देखा तो टेका की आंखों से आंसू टपक रहे थे इसीलिए जवाब न दे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता था। लाला के मन में दैववशात् करूणा तो पहले ही उत्पन्न हो चुकी थी अब बालक की यह दशा देख दया के भावों से आर्द्र हो गया, और बड़े वात्सल्य भाव से फिर पूछा, तो टेका ने उत्तर दिया कि "मैंने बोर्डिंग का आटा देना है। मास समाप्त हो रहा है आटा ज़रूरी लाना था और कोई साथी आने को तैयार नहीं था। शरद् ऋतु है। चार बजे अवकाश मिला, सूर्य जल्दी अस्त हो जाता है, इसीलिये देर हो गई," यह सब कुछ दर्द भरे स्वर से टेके ने बतलाया। लाला जी के मन में दया उपजती गई। लाला—अच्छा, पुत्र परसों सोमवार मैं वापिस अलीपुर आऊंगा, तुम मेरे साथ चढ़ आना, जितना आटा देना है केवल उतना ही बांधना आगे के लिये माता से न लेना। तुम मेरे घर चल कर रहो। मेरे घर में रोटी खाया करो, और मेरी बैठक में अपना बिस्तर सामान लगा दो, वहीं पर तुम सोते रहो। मैं मूलचंद हसीजा का मामा हूँ, मेरी बहिन तुम्हारे बड़े शहर में विवाहित है। तुम मुझ को अपना मामा कह कर पुकारा करो और मेरी स्त्री को मामी कहकर बुलाना। वह भी जतोई छोटे की है तुम को अपने शहर का जानकर प्रेम करेगी। तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा। परसों से बोर्डिङ्ग छोड़ देना।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेका को इन के करुणामय शब्द सुन कर प्रेम के आंसुओं से रोना आ गया सहसा ही उस के मुख से निकला–मैं इतना भार बिना बदल कैसे उठाऊंगा?

लाला साहिब– अच्छा पुत्र ! भार तो कोई नहीं, घर में बालकों की तरह रहोगे, यदि तुम्हें भार प्रतीत होता है तो तुम अपनी मामी को पानी का घड़ा भर कर दिया करो।

टेका–बहुत अच्छा।

ऐसी बातें करते–करते जतोई पहुँच गए। छोटी जतोई उस से आगे थी टेका को उस के घर के आगे उतार दिया, और कहा परसों सवेरे इसी स्थान पर आ बैठना–मैं तुम्हें ले चलूंगा। टेका घर गया माता, नानी, आदि सब के चरण स्पर्श किये, "तुम तो कह गए थे नहीं आना, आज कैसे आ गये? मार्ग में भय तो नहीं हुआ।" टेका ने उत्तर दिया "आना तो नहीं था, परन्तु मेरा आटा कुछ समाप्त हो गया था हिसाब चुकाना था अब नया मास चढ़ गया है तो प्रबन्धकर्ता ने कहा आटा ले आओ और पिछला लेखा चुका दो और आगे के लिए भी लाओ, नहीं तो रोटी बन्द हो जाएगी। इसीलिए मुझे अकेला आना पड़ा। मार्ग में ला० रेमलदास मिल गए और वह कृपा कर के मुझे अपने घोड़े पर ले आए, सारा वृत्तान्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाया, माता की आंखों में आंसू आ गए। पहिले तो चकित और उदास सी हो गई फिर भगवान का धन्यवाद किया कि उसके पुत्र को घोड़ी पर पहुँचा दिया।"

सोमवार को मां ने रोटी खिला आटा बान्ध दिया और ला० रेमलदास टेका को घोड़ी पर अपने पीछे बिठा अलीपुर स्कूल छोड़ गए। टेका ने आटा प्रबन्धक को दिया। उस ने कहायह तो पिछला लेखा चुका, आगे क्या खाओगे। टेका ने कहा "मैं छात्रावास में नहीं रहूँगा,"। स्कूल टाईम के बाद टेका अपनी पुस्तकें तथा बिस्तर उठा कर ला० रेमलदास के घर में रहने लग गया। ला० रेमलदास ने गृह पत्नी से कह दिया कि मैं एक अनाथ लड़के को ले आया हूँ, वह मूले का साथी है। तुम्हारे ही शहर का है। लड़का अच्छा, सज्जन और दरिद्र है। तुम्हें घड़ा पानी का भर देगा और छोटा मोटा काम भी कर देगा। हमारी सन्तान नहीं, शायद भगवान् इसके बदले में हमें भी हरा भरा कर दे।"

शिक्षा

ला० रेमलदास की धर्मपत्नी दयालु देवी थी, टेका को बड़े प्रेम प्यार से रखने लगी। ला० रेमलदास जी कुछ क्रूर और तीव्र स्वभाव के थे। टेका को रहने के लिए बैठक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कमरा और खाने के लिए भोजन मिल जाता। घर में जल का घड़ा भर देता। श्री रेमलदास की पत्नी टेका से प्यार करती, उसकी अपनी सन्तान न थी। घर में एक सांय खिचड़ी पकाई गई। टेका को खिचड़ी से घृणा थी। ला० रेमलदास भोजन कर आए और टेका को आज्ञा की कि जाओ खिचड़ी खा आओ, टेका ने उत्तर दिया कि मुझे खिचड़ी नहीं भाती। इस पर ला० रेमलदास ने कटु स्वर से कहा कि अनाथ और फिर मुफ्त खोरा होकर नाज़ करता है, शरम, शरम ! बस इतने शब्दों में न जाने क्या जादू था कि टेका चला गया और मामी से खिचड़ी मांग कर जो खाई तो इतनी स्वाद लगी कि जीवन भर के लिए खिचड़ी का मतवाला बन गया।

(२) टेका को बैठक में निवास करते तीन दिन हो गए, कमरे में किसी ने सफ़ाई न की। चौथे दिन ला० रेमलदास ने क्रोध में आकर कहा कि अरे ! कितना मूर्ख है। तुम से तो कुत्ता भी अच्छा है जो जहां बैठता है, दुम फेर कर पहले सफाई कर लेता है। टेका को यह बात रुच गई और तब से प्रतिदिन प्रातः काल ही कमरे की सफाई कर देता और लाला जी के बैठक में आने से पहले उन के लिए हुक्का तैयार कर रखता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा अध्याय

मास्टर दरबारीलाल

अलीपुर में पहिले फारसी वर्नेक्यूलर मिडल स्कूल था, उसके मुख्याध्यापक श्री मास्टर दरबारीलाल जी प्रसिद्ध अनुभवी और निपुण शिक्षक थे। उनका अनुभव इतना विशाल था कि परीक्षा के दिनों में जब आठवीं श्रेणी के विद्यार्थी मिडल की यूनिवर्सिटी की परीक्षा देने जाते, प्रातः के परचे के लिए रात्रि को बता देते कि "अमुक अमुक प्रश्न देख लो, अमुक अमुक पाठ पढ़ लो।" प्रभु कृपा से परचे में बहुत से प्रश्न वही आ जाते। अब अंग्रेजी स्कूल बन जाने से मुख्याध्यापक एक बी०ए० आ गया। अंग्रेजी चौथी श्रेणी से प्रारम्भ होती थी। पांचवीं पास तथा मिडल पास जूनियर स्पेशल क्लास में दाखिल किए जाते थे। टेका को भी जूनियर स्पेशल क्लास में दाखिल किया गया। मास्टर दरबारीलाल जी आङ्गल भाषा (अंग्रेजी) से कोरे थे, वह छात्रावास में जब विद्यार्थियों को पढ़ाने आते तो स्पेशल क्लास के लड़कों को भी बुला लेते। उनका अपना पुत्र नेभराज भी स्पेशल क्लास में था। मास्टर जी वयोवृद्ध होते हुए भी अंग्रेजी सीखने लग गए। अंग्रेजी की वर्णमाला का ज्ञान तो उन्होंने अपने पुत्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्राप्त कर लिया था। टेका तो स्कूल में जब दाखिल हुआ, तो विद्यार्थी १२ पाठ पढ़ चुके थे। संभवतः मास्टर जी ने टेका की कुशाग्र बुद्धि का परिचय जब उसने पहिले ही दिन COMFORT शब्द के बिना पूर्व पाठ मुख्याध्यापक को दिया था, पा लिया होगा कि मास्टर जी ने एक दिन प्रातः बुलाया जबकि आठवीं के विद्यार्थी उनके पास पढ़ रहे थे। एक मूढ़ा (सरकण्डों का बना स्टूल) बिछा रखा था, कहा, यहां बैठ जाओ और कहा कि जो पाठ तुम स्कूल में पढ़ आया करो, वह मुझे भी पढ़ा दिया करो।

टेका लज्जित होने लगा और भय भी करने लगा उसे तो ज्ञान न था कि मास्टर जी अंग्रेजी पढ़े हुए नहीं है। उन्होंने तो टेका का मुख देखकर बड़े प्यार से आश्वासन दिलाया कि अच्छा ! मुझे सुना दिया करो। टेका प्रसन्न हो गया। टेका को मूढ़े पर बिठाते, आप चारपाई पर बैठते और आठवीं के विद्यार्थी नीचे चटाई पर बैठते।

प्रतिदिन मास्टर जी छात्रावास में आते, टेका से पाठ सुनते और उन्हें तुरन्त स्मरण हो जाता। प्रातः को यह पाठ मानो स्कूल में दोहराना मात्र ही होता, इस से मुख्याध्यापक और विद्यार्थी चकित हो जाते, इस दानादान में टेका अंग्रेजी में होशियार हो गया और मास्टर जी का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष दयापात्र बन गया।

अभी छः मास बीते थे कि शहर में आर्य समाज का प्रचार शुरू हुआ। पण्डित और विद्वान् आते और बाजार में खड़े होकर व्याख्यान देते, खूब खण्डन करते। साधारण लोगों पर और पढ़े लिखों पर उस खण्डन का बड़ा प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज का प्रचार

अलीपुर में एक भक्त लालचन्द नाम के प्रज्ञाचक्षु वेदान्ती रहते थे। बड़े विद्वान् थे, एकान्त सेवी थे। भाइयों से अलग रहते, परन्तु भोजन उन के घर खा आते और पढ़ाते हिन्दी संस्कृत थे। उनके शिष्यों ने जब इस प्रकार खण्डन के व्याख्यान सुने तो उन्होंने भक्त जी को जाकर कहा, "भगवन् ! आर्य समाजी पण्डित आते हैं और हमारे अवतारों, श्राद्धों और मूर्ति पूजा का खण्डन करते हैं, यह लोग तो भ्रष्ट हैं, इससे भ्रष्टाचार फैल जाएगा, आप उन से वार्तालाप करके उनको समझा दो।"

भक्त जी प्रतिदिन सुनने जाते। प्रभाव यह पड़ा कि भक्त जी स्वयं आर्य समाजी बन गए और शिष्यों को कह दिया कि आर्य समाजी सच्चे हैं, वेद ही हमारा ज्ञान है और वेद ही हमारा धर्म है, पौराणिक लोग और पुराण सब झूठे हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब परिणाम यह निकला कि आर्य समाज की स्थापना हो गई। भक्त जी के मकान पर समाज के सत्संग होने लगे। अब ब्राह्मणों को भय हो गया कि जब हमारा गुरु आर्यसमाजी बन गया है, हमारी आजीविका मारी गई।

अब ब्राह्मणों ने दौड़ धूप की और एक पण्डित श्यामलाल शास्त्री को शास्त्रार्थ के लिये ले आए और आर्य समाज को शास्त्रार्थ की चुनौती दे दी।

आर्य समाज की ओर से पण्डित गिरधारीलाल शास्त्री आ गए।

पं० श्याम लाल–मैं संस्कृत में शास्त्रार्थ करूंगा।

पं० गिरधारीलाल–स्वीकार है।

शास्त्रार्थ

पं० श्यामलाल ने जब संस्कृत में लिख भेजा तो पं० गिरधारी लाल ने लोगों को बताया कि पं० जी इसलिए संस्कृत शास्त्रार्थ करते हैं कि लोगों को यह मालूम न हो सके कि वह पराजित हो गए है। पं० गिरधारी लाल ने पं० श्याम लाल के लेख से अनेकों अशुद्धियां निकाल कर जनता को दिखाई और सुनाई।

इससे गिरधारी लाल की धाक मच गई और भक्त जी ने कहा, "ऐ लोगो ! इन को संस्कृत में शास्त्रार्थ का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या लाभ? हम कैसे सत्यासत्य का निर्णय कर सकेंगे" सब लोग सहमत हो गए।

अब पं० गिरधारीलाल के व्याख्यान धड़ाधड़ होने लगे। छात्रावास के विद्यार्थी तो रात्रि को ही भाग ले सकते थे। एक बार पं० गिरधारी लाल का व्याख्यान रविवार को हुआ जिस में छात्र भी उपस्थित थे। सहस्रों की उपस्थिति थी। पण्डित जी ने जहां मद्य, मांस का खण्डन किया वहां आर्य हिन्दुओं के लिए **गायत्री मन्त्र को पूजा का श्रेष्ठ मन्त्र बताया।** उस समय जनता में से बहुत से लोगों ने मद्य और मांसका परित्याग किया। टेका ने भी सहयोग दिया। जब गायत्री मन्त्र का उपदेश कर रहे थे तो टेका को भीतर से ऐसी प्रबल् इच्छा उत्पन्न हुई (जिसे अब सविता देव की प्रेरणा ही कही जा सकती है), कि आगे के व्याख्यान को छोड़ कर टेका ने मास्टर जी से प्रार्थना की कि उसे यह मन्त्र उसी समय ही लिखा दिया जाए।

गायत्री का ज्ञान

मास्टर जी टेका पर दयालु तो थे ही, उन्होंने भी प्रभु से प्रेरणा से प्रेरित होकर एक एक शब्द टेका को याद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करा दिया। उपदेश समाप्त होने तक टेका ने सारा मन्त्र खूब याद कर लिया।

टेका को इस मन्त्र में ऐसी रुचि हो गई कि कूप के रहट की ध्वनि में लीन होकर जप करता।

आर्य समाज का उदय काल

लोगों में आर्य समाज के नाम से धर्म चर्चा की बातें श्रवण करने में बहुत रुचि हो गई। जतोई में खैरपुर सादात का एक महाशय खट्टूराम डाहरा आया करता था उस का ननिहाल यहां था। अराई वाले कूप पर जब वहं प्रातः स्नान करने आता तो लोग उसे आर्यसमाजी जान कर धर्म चर्चा छेड़ देते और खूब वादविवाद होता और यदि कोई भी न छेड़ता तो महाशय जी स्वयं प्रारंभ कर देते। उन दिनों नवीन आर्यसमाजियों की यह स्वाभाविक वृत्ति बन रही थी कि अनायास किसी न किसी विषय को चला ही देता। टेका भी जब जतोई होता तो सारा दिन उस के आगे पीछे रहकर सुनने का प्रयास करता। परिचित तो वह था नहीं परन्तु इसे उन की बातों में प्रेम आता था। प्रत्येक नगर में बुद्धिमान् पूजक आर्य समाज के सिद्धान्त सुनकर मूर्ति पूजा छोड़कर आर्य समाजी बनते जा रहे थे।

छोटी जतोई के लोग बड़ी जतोई के लोगों की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपेक्षा धनाढ्य और भूमिपति अधिक थे। एक स्वामी नित्यानन्द जी (डण्डे मार) छोटी जतोई में चौधरी आसानन्द, चौधरी छत्ताराम के गृह पर आकर ठहरते थे अतः वहां के लोग स्वभावतः अधिक आर्य समाजी बन गए। वह स्वामी बाजार में प्रतिदिन प्रचार करता। कुरआन का विद्वान् था, अंग्रेजी पढ़ा हुआ भी था। निर्भीक सन्यासी था। पण्डित ज्वाला दत्त उत्तर प्रदेश के लघ्वाकार के थे, उन्होंने बड़े वेग से प्रचार किया और फलस्वरूप जतोई में आर्य समाज बन गया।

आर्य समाज की लग्न

हमारा वीर जब जतोई में आता तो अब छोले बेचने के स्थान पर सारा दिन रविवार को लोगों के साथ इसी धर्म चर्चा में बिताता। आश्चर्य की बात यह है कि अपठित समाजी भी खूब वाद विवाद करता और लोगों को निरुत्तर कर देता।

आर्य समाज का बाल्यकाल

बाल काल में आर्य समाज सच्चे अर्थों में आर्य समाज था। उस समय के आर्यों के जीवन में सादगी थी। चित्त में स्थिरता और विचारों में दृढ़ता, आचार में पवित्रता थी। उन दिनों लोग अपने कल्याणार्थ प्रवेश करते थे। कोई फार्म प्रवेश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र का न था अपना अपना सत्य ही प्रवेश फार्म था बालक युवक, वृद्ध बिना लज्जा तथा संकोच के भजन गाने तथा ताल बजाने में रस लेते थे और झूम झूम भक्ति के हिलोरे ले मस्त हो जाते थे। आज तो उसका चिन्ह मात्र भी देखने में नहीं आता।

'नमस्ते' शब्द में वह जादू था कि किसी ने नमस्ते की सुनने वाले आर्य समाजी का मन प्रेम से पुलकित हो उठता। इतना पारस्परिक प्रेम था।

एक बार हमारे वीर ने पण्डित ज्वालादत्त जी से प्रश्न किया कि "पण्डित जी ! यह बतलाइए कि जिस समय परमात्मा ने सृष्टि उत्पन्न की थी उस समय भूमि में गेहूँ के दाने उगे हुये थे अथवा लोगों के घरों में आटा रख दिया था कि वह पका के खावें।"

पण्डित जी ऐसे विद्वान् तो न थे परन्तु प्रारम्भ में तो लग्न ही काम कर रही थी। वह वेद शास्त्र तो बहुत पढ़े हुए न थे। बड़ा विद्वान् तो कोई बिरला ही होगा। बोले, "अरे! उस समय मेरी मां तो न बैठी थी, कि कहूँ चक्की पीस कर ही मेरी माता ने खिलाया होगा, इन बातों का हमें क्या ज्ञान।"

हमारे वीर ने एक बार गायत्री के सम्बन्ध में पढ़ा। "कि सब सागर तूं पार करे।" उन दिनों उस प्रदेश में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का नामोनिशान भी न था। **'सागर'** का अर्थ तो जानता न था। परन्तु **'सब'** और **'पार'** को समझता था।

जप में श्रद्धा बढ़ी

उसके मस्तिष्क में यह वस्तु बैठ गई कि गायत्री सब कष्टों से बचाने वाली और आपत्तियों को दूर करने वाली है। शैशव काल था, संसार के वातावरण से अभी अछूता था, बड़े प्रेम से सन्ध्या के साथ गायत्री जाप करता। ऐसी एकावृत्ति हो जाती कि कोई और विचार तक न आता।

सफलता के चिन्ह

एक बार शनिवार स्कूल से घर पहुँचा और अपने स्वभावानुसार अपनी गली की माताओं को नमस्कार करने गया। अपने घर से दूसरे तीसरे

पहला परीक्षण

मकान में एक अति वृद्धा देवी बोदल माता रहती थी, उसे नानी कहकर पुकारता था। जब वीर ने माता के पग स्पर्श किए और प्रणाम किया तो उस ने कहा "टेका ! फारसी पढ़े कलाम रखा करते हैं, मेरे हाथ में बड़ा भारी फोड़ा है छूटने में नहीं आता, इस पर कलाम रख दे (अर्थात् मन्त्र फूंक दे) मुझे आराम हो जावे, तुम्हें आशीर्वाद दूंगी।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेका ने सुनते ही तुरन्त उस माता के हाथ को पकड़ फोड़े पर हाथ फेरने लगा और तो उसे कुछ न आता था, मुसलमानों की 'दुआ गंजुल अर्श' भी जानता था। अब सन्ध्या के पहले तीन मन्त्र जो उसे आते थे और गायत्री का जप करके फूंक मारता रहा। प्रभु जाने क्या मोजजा (आश्चर्य) हुआ, वृद्धा नानी को आराम आ गया। दर्द जाता रहा। बहुत आशीश दी। दो समय प्रातः सांय पढ़ाया फोड़ा भी जाता रहा जो सूजा हुआ था। इससे बहुत–बहुत आशीश करने लगी। हमारे वीर को बड़ा हर्ष हुआ और इस मन्त्र पर श्रद्धा बढ़ गई।

दूसरा परीक्षण

दूसरी बार आया तो अपनी गली में नोतन नागपाल की माता के चूतड़ों पर फोड़ा वैसा ही था जैसे बोदल की माता के हाथ पर था। यह नोतनदास और टेका सहपाठी थे। एक ही गली के थे। टेका की आयु अभी साढ़े दस वर्ष की थी, बच्चा ही था। चाची ने क्या लज्जा करनी थी। अहा, अबे टेका ! मेरा फोड़ा भी पढ़ दे। इस पर टेका ने पूर्व प्रकार क्रिया की और उसे भी आराम आ गया।

एक बार टेका की माता को बिच्छू लड़ गया। मां ने कहा, टेका ! पानी पढ़कर मुझे पिला दे। टेका ने पानी का लोटा भर कुछ क्षण गायत्री मन्त्र पढ़ता रहा तो मां ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा पानी को फूंक मार दो। चुनांचि टेका ने फूंक मार दी और मां को वह पिला दिया। प्रभु कृपा से उसी समय से दर्द जाता रहा।

तीसरा परीक्षण

खुशी राम चुघ टेका का समकालीन था, धनी का लड़का था। एक दिन स्नान करते करते उसे तत्तिया ने डंक लगा दिया, उसने धाड़ धाड़ की। टेका उसकी अंगुली को दबाकर गायत्री मन्त्र पढ़ कर फूंकता रहा, दर्द हट गया।

चौथा परीक्षण

इन घटनाओं से टेका की श्रद्धा गायत्री में बढ़ गई और टेका को एक रसायन प्राप्त हो गई। **अब बड़े विश्वास और श्रद्धा से जप करने लगा।** जब कभी स्कूल में देर से पहुंचे अथवा पाठ स्मरण न हो तो अध्यापक की ताड़ना के भय से बचने के लिए गायत्री मन्त्र का जाप करता और वस्तुतः बच जाता, न जाने इसमें क्या रहस्य था कि एक बार भी तो दण्ड प्राप्त नहीं किया गायत्री को तरनतारनी सिद्ध कर लिया। 'सब सागर को पार करे' का पाठ तो मस्तिष्क में स्थान पा चुका था। पण्डित गिरधारी लाल का व्याख्यान भी श्रवण कर चुका था। जप में सदा यही कहता कि भगवान ! 'मुझे परीक्षा में उत्तीर्ण करना' और उत्तीर्ण ही होता रहा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचवा अध्याय

स्पेशल श्रेणी की परीक्षा को १८६८–६६ ई० में उत्तीर्ण कर टेका अब छठी कक्षा का विद्यार्थी बन गया।

विद्या सम्बन्धी वृत्त

छठी कक्षा के विषय उर्दू, फारसी, विज्ञान और इतिहास के अतिरिक्त शेष सब आङ्गल भाषा में थे और नई पुस्तकों और कापियों के क्रय पर बहुत व्यय आया। अब जतोई से भी कई हिन्दु, मुसलमान बालक अलीपुर स्कूल में प्रविष्ट हो गए और अब हमारे वीर नायक को अकेला आना जाना न पड़ता अपितु एक का संघ मिल गया। मीताराम एक विद्यार्थी तो साथी मिल ही गया। उसके ननिहाल अलीपुर में थे। पहले तो वह नाना के घर रहता परन्तु टेका को यह बड़ा सुख हो गया कि शनिवार को इकट्ठे जाते और सोमवार को इकट्ठे लौटते और साथ ही मीतासाम का जीजा ला० टाकणमल दफ्तर कानून गो भी अलीपुर का था। वह प्रति सप्ताहं जतोई जाता और टेका की माता नानी के कहने पर आटा भी ले आता।

एक दिन सांयकाल को टेका ने जल लाने के लिये घड़ा उठाया तो ला० रेमलदास के चचेरे भाई के पुत्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकूराम ने भी घड़ा उठाया और बाहर आंगन के द्वार पर पहुँचा तो टेका से कहा यदि मेरा घड़ा भी भर दे तो एक अधेला (आधा पैसा दूंगा)। वह भी लड़का ही था, न जाने किस भाव से यह शब्द उसके मुख से निकले, परन्तु टेका के मन पर अपनी निर्धनता के परमाणुओं ने इतने वेग से आघात पहुँचाया कि टेका अति दुःखी होकर रो पड़ा। दोनों चले गये। घर के पास ही बाजार और कूप था, वह किसी और जगह से भरता था। टेका भरकर ले आया परन्तु कहा किसी से नहीं। अपने मन में ही इस दुःख को पी गया। वह बालक बहुत अच्छा स्याना था, परन्तु स्वल्प काल में ही पागल होता गया। सारी आयु ६० वर्ष तक भी उसका जीवन निकम्मा रहा।

एक घटना

लाo रेमलदास साहिब के घर पर रहते छः मास गुजर गए। उनको मिलने के लिये शहर और बाहर के लोग आ जाया करते थे। शहर वाले तो अपने समय पर शतरंज खेलने प्रतिदिन आते और बाहर के परदेसी मेहमान एक दो दिन रह जाते। लाo रेमलदास के दो चचेरे भाई थे, आसुराम और

बिस्तर गोल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोचाराम। लोचाराम बड़ा सज्जन, परिश्रमी और टोपियां सीने का काम करता था, निरामिष भोजी निर्व्यसनी। परन्तु आसुराम यद्यपि टोपियां सीने का काम तो करता था, विलास मद्य, मांस और जुआ खेलने की उसे लत थी। रेमलदास का लंगोटिया मित्र था हम निवाला हम प्याला। आसुराम जब आता तो उसका डेरा लाला रेमलदास के पास होता, मद्य मांस सेवन करता और ऊपर की मंजिल में सोता। उन दिनों मांस और तम्बाकू में कोई दोष न गिना जाता था।

ग्रीष्म ऋतु थी, एक दिन ऐसा हुआ कि आसुराम किसी को पता दिए बिना चला गया। ला० रेमलदास सारा दिन न्यायालय में रहे और टेका स्कूल में। लाला दैववशात ऊपर गए, टेका पानी का घड़ा भरने गया हुआ था, वापस आया, तो कहने लगे अनाज की ढेरी में से दाने निकले हुए हैं। बतलाओ तुम ने कहां दिए हैं। यह सुनते ही टेका के पांव तले से जमीन निकल गई, चकित विमूढ़ हो गया। लाला साहिब को क्रोध आ गया और बड़े अपशब्द प्रयोग करके कहा कि "चोर कहीं का, बेहया, बेशर्म। एक हम अन्न खिलायें, दूसरा हमारे चोरी भी करे।" टेका ने कहा "लाला जी ! मुझे कोई ज्ञान नहीं, आप आवेश में न आवें।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला जी–तुम्हारे सिवाए यहां और कौन रहता है? सब कुछ तो तुम्हारे अर्पण है, फिर कहता है मुझे पता नहीं बस यहां से चले जाओ। बिस्तर गोल करो।

टेका के मन में तो मैल था ही नहीं, परन्तु आज्ञाकारी था। अनुनय विनय करना जानता न था। निर्धनता अवश्य थी परन्तु माता ज़ी ने संतोष की घुटटी पिला रखी थी। देर भी न की, बिस्तर उठाया और बस्ता उठा ला० जी के पांव पर हाथ रखा और बोर्डिंग मे पहुँच गया ! ईश्वर जाने उस समय एक निर्धन अनाथ के मन में क्या गुज़र रहा होगा। बोर्डिंग में बिना आटे कैसे रोटी खायेगा बिना मुख्याध्यापक की आज्ञा के कैसे बोर्डिंग में दाखिल होगा। भविष्य में निर्वाह कैसे करेगा, अभी तो ढ़ाई साल पढ़ना है। वार्तालाप करने की विधि नहीं आती। पर वाह प्रभु। तेरी लीला अद्भुत है।

प्रभु लीला

एक द्वार बन्द दूसरा खुला

टेका का उस समय न कोई आश्रय था न माध्यम (वसीला), विवशता की दशा में छात्रावास में जा खड़ा हुआ। न वह समय घर जाने का था, न कोई परिचित, न सम्बन्धी, न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई और ठिकाना। ला० छबीलदास छात्रावास के प्रबन्धक थे, स्वभाव के दयालु थे, टेका से पूछा कि तुम बिस्तरा सामान क्यों ले आए? टेका ने उत्तर दिया कि लाला रेमलदास जी ने घर से निकाल दिया है।" वह थे दयालु, परन्तु क्या करते। अभी खड़ा ही था कि मुख्याध्यापक सरदार रांझाखान बी०ए० मुसलमान लड़कों की किसी शिकायत की जांच के लिए आ गए। प्रबन्धक और टेका खड़े थे, दोनों ने प्रणाम किया। वह आवेश में आए थे और मुसलमान पाचक से कटु भाषण कर रहे थे। प्रबन्धक भी डर रहा था। परन्तु प्रभु लीला क्या विचित्र है, उस विश्वंभर की दया कैसे प्रेरक बनती है ! मुख्याध्यापक ने मुसलमान लड़कों से मुख मोड़ टेका की ओर मुख किया, टेका हाथ बांधे, निमानी आकृति बनाए खड़ा था, मुख पर उदासीनत: की झलक थी, क्योंकि अब तो उस को शिक्षा पाना असंभव सा प्रतीत हो रहा था। प्रबन्धक ने डरते डरते कहा कि श्रीमान् ! जिस से टेका को भोजन मिलता था, आज उस ने इसे जवाब दे दिया है, और आप जानते हैं कि वह नितांत निर्धन अनाथ बालक है।" टेका उनसे पढ़ता था। परमेश्वर ने झट मुख्याध्यापक के मुख से यह शब्द निकलवाए कि "आज से यह बालक निःशुल्क छात्रावासी समझा जाए, कोई खर्च इससे आटा सब्जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि का न लिया जावे।" यह कहा और मुख्याध्यापक चले गए।

लाला रेमलदास का क्रोध

ला० रेमलदास अपनी बैठक में थे, रात को जब टेका के सहपाठी पढ़ने आए तो पूछा कि टेका कहां है तो क्रोध में आकर अपशब्द कहे और कहा कि वह तो नमक हराम निकला, हम ने कहा जाओ अपना बोरिया बिस्तरा ले जाओ।" लड़कों ने कहा कि लाला जी ! वह तो ऐसा न था।" लड़के वापस चले गए। घर में भोजन तैयार था, खाने वालों की प्रतीक्षा हो रही थी। देर हो गई। लाला साहिब खेल से निवृत होकर जब भोजन करने गए तो धर्मपत्नी ने पूछा "आज देर लगा दी है, टेका भी अभी तक नहीं आया"। टेका का नाम सुनते ही पुनः आवेश में आ गया कि हमने उसका बिस्तरा बोरिया उठवा दिया है। स्त्री ने कहा "क्यों" उत्तर मिला कि "ऐसा नमक हराम निकला कि हमारे दाने भी चुराकर बेच दिए।" टेका की मामी सुनः कर दुःखी हुई और कहने लगी कि उस अनाथ निरअपराधीको व्यर्थ का आरोप लगा कर निकाल दिया। दाने तो आप के भाई आसु ने लिए हैं। टेका तो सवेरे स्कूल गया हुआ था, आप कचहरी थे, तो आसु आया और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझ से चाबी लेकर एक टोपा दाना आप के दानों में से भर लिया और कहा मेरे दानों से कुएं पर काट लेना।"

लाला साहिब–तो फिर मुझे क्यों नहीं कहा–

मामी–आज की तो बात है। आप तो अभी घर में आ रहे हैं, किस से कहती और कब कहती?

उस वंश की सब देवियां यह सुन कर विस्मित हो गई और सब को उस बिचारे की निर्धनता पर दया आई और शोक प्रकट करने लगी। टेका की मामी को तो दिल में बड़ा दुःख हुआ और कहा "सायं के इस कुसमय में गरीब निरपराध को निकाल दिया, उस बेचारे को तो भूख लगी होगी। यहां उस का न कोई 'राही' न 'पाही' न सगा न सम्बन्धी, न परिचित। कहां जा आश्रय लेगा, कहां उदर पूर्ति करेगा। गरीब क्षुधा से ठंडी आह निकालेगा। अब भी आप जाएं और उसे ढूंढ़ लावें (जैसे माता समझती है कि बालक रूठ कर इधर उधर छिपा बैठा होगा, ढूंढ़ती है–ऐसे कहा कि ढूंढ़ लाओ)।"

परमेश्वर ने स्त्री जाति को दिव्य गुणसम्पन्न किया है। कितनी दया और करुणा का भाव इस देवी के हृदय में था।

लाला जी ने कहा "अब बहुत देर हो गई है छात्रावास में गया होगा।" देवी ने जितना भी अनुनय विनय किया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति ने एक न सुनी और कल पर टाल दिया। दूसरी प्रातः जब लाला जी कचहरी जाने लगे, तो देवी ने पुनः याद दिलाया।

छात्रावास में पहुँच कर द्वार पर खड़े होकर टेके को बुलाया। टेका आया और स्वभाव अनुसार चरण स्पर्श कर नमस्ते की। लाला साहिब ने कहा वत्स ! मुझे पता चला है कि तूं निरपराध है। तेरी मामी बहुत दुःखी है, वह तो मुझे कहती थी कि अभी रात ही को वापस ले आओ परन्तु चूंकि देर हो गई थी, रात को मैं न आया। अपना बिस्तरा उठाओ और चलो।" बालक के मुख से क्या उत्तर निकला यह आप सुनकर चकित होंगे कि उस बाल के हृदय में छोटी अवस्था में कितना धैर्य और गम्भीरता थी। हाथ जोड़ कर कहा "आप की और मामी जी की बड़ी कृपा है, अब यहां मेरा स्थाई प्रबन्ध हो गया है। मुख्याध्यापक और प्रबन्धक महोदय ने मुझे निःशुल्क छात्र बना दिया है। अब मैं चलने से क्षमा मांगता हूँ। लाला जी ने बड़ा आग्रह किया और कहा कि "माता पिता बच्चों को समझाने के लिए ताड़ना किया करते हैं। तुम जरूर चलो, क्रोध न करो तुम्हारी मामी बहुत उदास है।"

टेका—मैं आपका नमक खाता हूँ। मैं सदा के लिए आप का कृतज्ञ रहूँगा। मुझे कोई रोष नहीं है। मामी जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मुझ पर बड़ी दया रही है। माता की तरह मेरी पालना की है। मैं कभी कभी आता जाता रहूँगा। कभी उनके चरण स्पर्श कर आया करूंगा। कभी आप को हुक्का भर कर पिला आया करूंगा। मुझे कोई रोष नहीं रहा है।

लाला जी निराश हो कर चले गए। मामी जी को हाल सुनाया, सब चुप हो गए।

परदा उठा

कुछ दिन बीते आसु राम फिर आ गया। लाला साहिब के पास जब बैठक पर आया, किसी चीज की आवश्यकता पड़ी तो पूछा–'काका जी–टेका कहां गया?'

लाला साहिब ने कहा–उसे तो मैंने चोर समझ कर निकाल दिया कि दाने चुराए। लाला जी अभी पूरी बात न कर पाए थे कि आसुराम कहने लगा कि "दाने तो मैंने भर लिए थे। भरजाई से कह गया था।" तब लाला जी ने कहा। "हां–यह बाद में मालूम हुआ।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छठा अध्याय

मास्टर दरबारी लाल की विदाई

ला० दरबारीलाल साहिब फारसी के मास्टर थे, उनकी टेका पर विशेष कृपा दृष्टि रहती थी। सदाचारी, परोपकारी आर्य समाज के सच्चे हितैषी और सेवक थे। लड़कों पर उनके जीवन का विशेष प्रभाव पड़ता था। विद्यार्थी बिना रोक टोक समाज में आते थे। मास्टर जी की तबदीली हो गई। उनकी तबदीली पर आर्य समाज और शहर के प्रतिष्ठित लोगों ने विदाई जलसा किया। मास्टर जी का पुष्प मालाओं से सत्कार किया गया। कई एक भाषण हुए। उन की विदाई से प्रायः जनता तथा शिष्य मण्डली बड़ी शोकातुर हो उठी, अनेकों सज्जनों ने अपनी–२ श्रद्धा के पुष्प भेंट करने चाहे, टेका तो श्री मास्टर जी का प्रेम पात्र था ही, वह भी अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने को उठा। यह उस के लिए पहला ही अवसर था। उठते ही पहला बन्द जो बोला, वह था:–

टेका की कुशाग्रबुद्धि

दिल ! मत टपक नजर से कि पाया न जाएगा।
जो अश्क (अश्रु) ....

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी कह ही रहा था कि नेत्रों से अश्रुओं की धाराएं बह निकली। दिल भर गया। मण्डेरे के पास बैठा था वहां ही खड़ा होकर बोला। लोगों को भय लगा कि यह गिरने वाला है, उसे उठ कर थाम लिया।

प्रभु देव ने ऐसे अवसर पर समुचित शब्द टेका के मुख से निकलवाये कि श्रोतागण साधु साधु कहने लगे और उसकी कुशाग्रबुद्धि की प्रशंसा करने लगे। और उसके अश्रुओं को मास्टर जी के अश्रुओं ने अपना योगदान दिया कुछ देर हूं का आलम था, सन्नाटा छाया रहा। फिर बोला :—

दिल ! मत टपक नजर से कि पाया न जाएगा।
जो अश्क फिर ज़मीं से उठाया न जाएगा।
रुखमत है बागवान की ज़रा देख लें चमन।
जाते हैं वहां जहां से फिर आया न जाएगा।।

बस इतना ही कह पाया

टेका अभी छठी श्रेणी का ही विद्यार्थी था, ग्रीष्मावकाश के दिनों में जब जतोई आया तो मन में चाव उत्पन्न हुई कि गुरमुखी सीखूं। शहर में पहले तो निर्धनता के कारण किसी के पास बैठता नहीं था, परन्तु अब कुछ कुछ आर्य समाज के सिद्धान्तों से परिचय हो रहा था और लोगों में आर्यसमाज

गुरमुखी चाव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चर्चा चल रही थी, अब सब दुकानदार उसे अपने पास बिठाना चाहते थे। अब बिठाएं कैसे? टेका को हुक्का पीने की लत लग चुकी थी, अतः हुक्का के बहाने से उसे अपने पास बिठाते और समाज सम्बन्धी वार्ता चलती। टेका का एक स्वभाव था कि जो भी रद्दी छपा हुआ कागज पन्ना गली में पड़ा देखता उठाकर उसे पढ़ने लग जाता, चाहे समझ न भी आए। अंग्रेजी के रद्दी कागज़ों को प्रायः देखा करता।

एक दिन एक अंग्रेज भ्रमण करता उधर आ गया। उसे बड़ी प्यास लग रही थी, जिस दुकान पर टेका वर्तमान था, वह बाजार के चौक में एक कूप के पास थी। अंग्रेज ने टेका को अंग्रेजी कागज़ं पढ़ते देख उचित अवसर समझा और उस के पास आकर खड़ा हो गया। टेका ने उठकर दोपहर का समय था झट कहा Good Noon! अंग्रेज ने भी प्रत्युत्तर में Good Noon । हाथ मिलाया बड़ा खुश हुआ और कहा

I am very thirsty, Can you please give me some water to drink.

अर्थात् मैं बहुत प्यासा हूँ, क्या आप मुझे कुछ जल पिला सकते हो?

Teka- Yes Sir, very gladly. Come please, Here is a well.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेका–हां महाशय ! बड़ी प्रसन्नता से। कृपया आइए, यहां एक कूप है !

टेका अंग्रेज को खाड़े पर ले गया। अब सोचने लगा कि अपने विचार किन शब्दों में प्रगट करूं। इसलिए कहा:–

Please say, what should I do? I want to know the word.

कृपया कहिए, अब मैं क्या करूं। मैं वह शब्द जानना चाहता हूँ।

अंग्रेज–Please round the well !

कृपा करके कुआं चलाओ !

टेका ने कुआं चलाया और अंग्रेज ने तृषा निवारण की, जल बड़ा ठण्डा था। अंग्रेज ने Thank you कह कर, धन्यवाद दिया। और साथ होकर हिमताराम की दुकान पर जहां टेका बैठा था, आ बैठा। उन दिनों सिगरेट का नामो निशान भी न था, उस प्रदेश में सब हुक्का अथवा चिल्म पीते थे। बड़े बड़े अफसर भी न्यायालयों में हुक्का साथ रखते और पीते रहते थे। अंग्रेज लोग सिगार पीते थे। उसके पास सिगार भी न था अतः उस अंग्रेज ने एक रद्दी कागज मांगा। टेका ने दे दिया। अंग्रेज ने थोड़ा तम्बाकू लेकर उसे बहुत सूक्ष्म कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कागज में रख सिगरेट का आकार दे, दीपशलाका (दियासलाई) लगा पीने लग पड़ा। अब उस अंग्रेज ने टेका का सारा परिचय लिया। टेका ने भी पूछा तो उसने कहा कि मेरा नाम Peter the France पीटर दी फ्रांस है और I am a carpenter मैं एक तरखान का काम करता हूं, यह अंग्रेज एक सरकारी ठेका पर काम कर रहा था। टेका की योग्यता दक्षता और उत्तर परायणता देख कर बड़ा खुश हुआ और धन्यवाद करता चला गया।

हिमताराम भी टेका का समकालीन युवक था। अंग्रेज के साथ टेका की बातचीत सुनकर प्रभावित हुआ और कहा कि टेका। मुझे भी अंग्रेजी सिखाओ। चुनांचि उसी दिन से ए०बी० सिखानी शुरू कर दी। अब टेका को

टेका का शिक्षक रूप में मान बढ़ा

बाजार में निश्चित होकर बैठने का अवसर मिल गया। इससे पूर्व टेका छब्बा (खोंचा) बेचता था। अब जब कि समाज की चर्चा भी करने लगा, लोग मान से अपने पास बिठाने लगे। खोंचा बेचने से ग्लानि होने लगी और मन में इच्छा जाग्रत होने लगी कि विवाह न करूं और लाहौर उपदेशक विद्यालय में दाखिल हो जाऊं।

परन्तु यह केवल मात्र इच्छा की झलक ही थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमताराम को अंग्रेजी पढ़ानी शुरू की तो मन प्रसुप्त वासना कि गुरमुखी सीखूं, जाग उठी और हिमताराम से, चूंकि वह जानता था, कहा कि "मुझे गुरमुखी सिखाओ परन्तु उसकी लग मात्र फारसी से मिला कर समझा दो।" हिमताराम ने उसी समय रात्रि को अक्षर लिख दिये। टेका ने ऊपर गुरमुखी नीचे उर्दु लिख कर एक घण्टे में सीख ली और मात्राएं भी याद कर लीं।

रात्रि को जब सोने लगा तो सोते सोते उन अक्षरों के आकार बना मात्राओं से विचार श्रृंखला से लिखता रहा।

दूसरे दिन हिमताराम को परीक्षा दी और उत्तीर्ण हो गया तों हिमता राम चकित हो गया कि इतने जल्दी कैसे गुरमुखी अक्षर याद हो गए।

अब पोथी बालोपदेश मांगा, उसे एक दिन में समाप्त कर दिया। हिमताराम ने कहा अब पंच ग्रन्थी पढ़नी होगी वह तो धर्मशाला में रखी है, वहां जाकर पढ़नी होगी। धर्मशाला में प्रायः लोग ताश, चोपड़ शतरंज आकर खेलते और भंग भी पीते थे। धर्मशाला का पुजारी ओझा सज्जन पुरुष था। टेका में सेवा का भाव बालक पन से ही कूट–कूट कर भरा था। अब धर्मशाला में जा जल का घड़ा भर देता इच्छानुसार हुक्का पीने को मिल जाता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुजारी से पंचग्रन्थी भी पढ़ता। टेका के सहपाठी भी पढ़ते। चौधरी पोखरदास जी लुल्ला शहर के प्रसिद्ध माननीय व्यक्ति थे। धनी भी थे, भूमिपति भी थे। प्रातः वह अपनी भूमि पर नियमानुसार चले जाते और सांय को प्यारा भक्त की बाटिका में चले जाते और वहां सत्संग में शामिल होते। हुक्का पीते थे। टेका हुक्का भर लाता, टेका के इस स्वभाव को देख बड़े प्रसन्न हुए।

परीक्षा

एक दिन टेका और एक सहचारी मीताराम चौधरी साहिब के पास बैठे थे। चौधरी बड़े बुद्धिमान गंभीर पुरुष थे। थे अनपढ़ परन्तु टेका को इसका ज्ञान न था।

चौधरी साहिब ने पूछा, बोल टेका ! "मीताराम से तू अज्ञार है या ज्ञार ।" टेका को तो अर्थ न आते थे। मीताराम से पूछा वह भी चुप। तो चौधरी साहिब ने कहा वाह ! बस ! इस छोटे से प्रश्न का उत्तर भी नहीं दे सकते। टेका को लज्जा आई कि चौधरी साहिब क्या कहेगा? अंग्रेजी पढ़ते हैं और उत्तर नहीं दे सकते। अपने मन में विचारा कि 'अ' – निषेधवाचक होगा। इसलिए कह दिया "अज्ञार हूँ"।

चौधरी साहिब ने कहा, "टेका ! उत्तर तो तेरा ठीक है, पर है तो यह अहंकार।" मीताराम को तू ने ज्ञार बना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। टेका को और अधिक लज्जा आई और पूछा, क्या अर्थ है?

चौधरी जी ने कहा, "हमारी भाषा में जो निकम्मा, निखद हो, उसे ज़ार कहते हैं, गया गुजरा और जो आगे आगे चलने वाला हो, उसे अज़ार कहते हैं।"

सातवां अध्याय

इस ग्रीष्मावकाश में टेकचन्द जी ने तीन कार्य सिद्ध कर लिए थे :-

१. गुरमुखी पढ़ ली।

२. संध्या के सारे मन्त्र याद कर लिए।

३. कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ जान पहचान कर ली।

क्या पुत्री के घर का अन्न जल वर्जित है?

ऊपर कह चुके हैं कि टेकचन्द जी के अन्दर सेवा का प्रशंसनीय स्वभाव विद्यमान था और इसी से स्वल्पायु में सर्व प्रियता प्राप्त हो रही थी। धर्मशाला में एक प्रज्ञाचक्षु चेला राम नाम का प्रति दिन कथा सुनने आता थां और नेत्रहीन होने के कारण प्रायः सारा दिन धर्मशाला में ही बिता देता। अनेकों बार ऐसा हुआ कि वह कूप पर हुक्का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरने के लिए जाता, टेकचन्दजी देख कर पहुँच जाते और चुपके से गेड़ने (चलाने) लग जाते। जब रहट की ध्वनि बंद होती तो वह पूछता, कौन सन्त प्यारा कुआं चलाता रहा? तो टेका ने कहा—टेका ! कौन? टेकाराम गाडी? (इनकी उपजाति गाडी थी)। तो वह कहता—हां श्रीमान ! तो वह भरे हुए हुक्के अथवा लोटा का पानी गिरा देता। टेका पूछता—क्यों गिरा दिया? तो कहता—बाबा !

तू हम से लेने वाला है हम तेरे हाथ का पानी पीएं ?

टेकचन्द जी के चाचा श्री जेसाराम का वह प्रज्ञाचक्षु श्वशुर था।

चन्दू टेकचन्द जी का एक भाई था जो उस से छोटा था। शरद ऋतु में दोनों बालकपन में एक ही रजाई में इकट्ठे सोते थे और प्रातः जागृत होते ही माता से रोटी मांगते, मां झट चपाती पर कभी घी चुपड़ कर नमक मिरच बखेर देती, कभी पलाण्डू (प्याज) और वड़ियां मिला कर देती, तो दोनों भाई चक्के चक्के (अर्थात् दांतों से तोड़ तोड़ कर) खा जाते। घर में गरीबी थी, कमाने वाला कोई था नहीं। मां नानी श्रम करतीं और बच्चों का पेट पालती। मां तो युक्ति करती रोटी न पकाती, ब्राह्मणी के घर से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टके सेर हंदे (चपातीयां) ले आती और सुंघड़ा भर रखती। बहुत काल तक बच्चों को पता ही न लगने दिया।

नानी धनियों के घर की सेवा करती इसलिये वहां से वह कुछ न कुछ खाने की वस्तु लाती। टेका माता को कष्ट देना न चाहता हुआ भी इस भाव से नानी के पास चल पड़ता कि वह कुछ न कुछ लाई होगी और कभी यह विचार भी सम्मुख आ खड़ा होता कि वह अकेली है, उसने कहां रोटी बचा रखनी है। मां तो हमारी खातिर बचा ही रखती है। फिर भी चल पड़ता और जब नानी के घर पहुंचता तो नानी समझ जाती कि टेका भूखा है और पूछती "भूख लगी है बच्चा" ! "हां, नानी जी" ! यह सुनते ही नानी जो कार्य आगे होता उसे छोड़ देती और कहती, बैठ जा बच्चू ! अभी ५-१० मिनट में ही रोटी देती हूँ।" झट आग सुलगा, आटा गूंथ फुलका बना देती और टेका प्रसन्न होकर खा लेता। **नानी साहस, श्रम और स्फूर्ति से बहुत काम थोड़े समय में कर लेती और माता युक्ति से थोड़े समय में समस्या हल कर लेती। स्फूर्ति से, तन से नहीं कर सकती थी।** मां तो ब्राह्मण से रोटियां मोल ले लेती परन्तु नानी इस बात को पसंद न करती, न रोटियां मोल लेती, न ही ब्राह्मण के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर की सेवा सवैतनिक करती। वह समझती कि ब्राह्मण को देना हमारा कर्त्तव्य है, लेना नहीं और न ही ब्राह्मणों के घर की कोई चीज बच्चों के पेट में डालनी। **कितना ऊंचा, उत्कृष्ट और निष्काम सेवा का भाव है यह !!! और कितना बच्चों के संस्कारों की रक्षा का यह पवित्र भाव है!!!**

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है

एक दिन बालक टेकचन्द जी को इस का साक्षात् ज्ञान हो गया और वह इस प्रकार कि वह और मीताराम दोनों पढ़ने इकट्ठे अलीपुर जाते थे। मीताराम विवाहित था। धनी का लड़का था। चाहता तो वह घोड़ी पर जा सकता था, परन्तु वह सदा टेकचन्द जी के साथ पैदल जाता। सोमवार का दिन था। टेकचन्द जी और मीताराम दोनों अलीपुर जा रहे हैं जब दो मील के पत्थर पर पहुँचे तो सूर्य निकल रहा था। टेकचन्द जी की दृष्टि अकस्मात् पड़ी तो क्या देखा कि पृथ्वी सूर्य के गिर्द परिक्रमा कर रही है, प्रतिबिम्ब प्रतीत होता है। भूगोल में पढ़ता था कि पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूमती है। झट मीताराम से कहा कि सामने देखो ! ओह ! सामने देखो,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य के गिर्द क्या घूम रहा है? वह भीं देखकर आश्चर्य में पड़ गया। टेकचन्द जी ने कहा यह पृथ्वी घूमती है, उसका प्रतिबिम्ब वहां प्रतीत हो रहा है। यह ज्ञान न हो सका कि इस में क्या रहस्य है, न कोई मास्टर बता सका। फिर कई बार देखने का प्रयत्न किया परन्तु वैसा प्रतीत न हुआ।

हमारे टेकचन्द जी में हुक्का पीने की आदत थी। छात्रावास में और विद्यार्थी भी पाचक की सहायता से पीते और यह भी पीता था और जब तक लाला रेमलदास के घर पर रहा, तब तक तो हुक्का की मौज थी, जब मन चाहा पी लिया, परन्तु लाला जी के सामने नहीं, चोरी चोरी पीता। और जब वहां से निकल कर निःशुल्क छात्र के रूप में छात्रावास में स्थान मिला तो मीताराम भी हुक्का पीता था। सांय के ४ बजे जब स्कूल से अवकाश मिलता तो चौधरी खट्टूराम नासा जो मीताराम का एक सम्बन्धी था, उस की दुकान पर हुक्के की बाड़ निकाल आते।

एक दिन बाजार में मुख्याध्यापक ने टेकचन्द को हुक्का पीते देख लिया, तो टेकचन्द हुक्का छोड़ कर स्कूल भाग गया। जब मुख्याध्यापक के पास पढ़ने गया तो मुख्याध्यापक ने उसको गर्दन (ग्रीवा) से पकड़ कर कहा कि तुम हुक्का पीते रहते हो ! टेकचन्द ने मुख नीचे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2515

कर लिया और उत्तर दिया कि हां श्रीमान् ! टेकचन्द को बचपन में पिता की चाट (ताड़ना) याद थी, अतः दिल में निश्चय कर लिया कि यदि अध्यापक महोदय पीटेंगे तो हुक्का पीना छोड़ दूंगा। परन्तु मुख्याध्यापक ने इस भाव से कि यह समझदार बालक है, इतना दण्ड पर्याप्त है, छोड़ दिया। इस का टेकचन्द जैसे विज्ञ बालक पर उलटा प्रभाव पड़ा। हुक्का न छूटा। हाय हुक्का ! **तू इतना लाड़ला बन गया कि उस नन्हें शरीर में रहने वाली आत्मा को जिस ने एक दिन विख्यात होना था, तेरा वियोग सहना अति दुस्तर हो गया !** इस से पूर्व अनेकों नाममात्र के व्यसन एक संकेत पर ही उसने सदा के लिए त्याग दिए थे, परन्तु विधाता का चक्र कहिए या भाग्य का फेर कि हुक्का छोड़ना स्वीकार नहीं किया।

सूखी रोटी और भोलापन

लाला रेमलदास के घर से निकल आने पर मुख्याध्यापक ने टेकचन्द को योग्य बालक समझ कर छात्रावास में निःशुल्क छात्र के रूप में स्थान दे दिया था। न पढ़ाई और न खानपान का शुल्क था। छात्रावास का पाचक उस समय जुगला नाम का था, भोला भाला और अनाड़ी। प्रायः रोटी सड़

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(जल) जाती या कच्ची रह जाती। कभी चूल्हे में अग्नि का ताप अधिक हो जाता तो कभी कम। छात्र प्रायः प्रबन्धक से गिला करते तो वह कह देता–

'दाल करारी, रोटी साड़ी' । जुगला नाम धारी।।'

तो सब हंस पड़ते। और वह जिव्हा पर निम्न तुकबन्दी की रट लगाए रखता।

राम रहीम दोनों भाई कस्बी.।
उस लई माला, इस लई तस्बी।।
दोनों की मति ले गया चोर।
उस लई चिखा तां उस लई गोर।।

ऐसे ऐसे चुटकलों से हंसाया करता परन्तु था वह निष्कपट।

परन्तु काठ की हण्डिया कब तक चढ़ती। अन्ततः एक दिन उसे सेवा से विमुक्त कर दिया गया और उसके स्थान पर एक बड़ा स्थूल शरीर, हृष्ट, पुष्ट, बलवान् रौशन नाम का व्यक्ति चार रुपये और रोटी पर पाचक बनाया गया। वह स्याना आदमी था। लड़कों की चाल ढाल और बोल चाल से सब की स्थिति को भांप गया। टेकचन्द गरीब का लड़का था और फिर निःशुल्क? सर्दी में १० बजे स्कूल लगता था, अतः लड़के अपना अपना घी लेकर पाठशाला में पहुँच जाते और ताजी रोटी खाते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु हमारे भोले भाले बालक को साहस न होता कि वह पहले जाकर खा ले। प्रतिदिन सबसे पीछे जाता। पाचक ताड़ गया। ठण्डी ताज़ी जैसी भी चपाती देता, टेकचन्द जी स्वीकार कर लेते और कुछ भी गिला न करते। अब पाचक ने चपाती कम देनी शुरू कर दी। पहले दो फुलके दिए फिर एक सहर्ष अथवा विवशता से देता और कहता कि "बीच में पानी भी पी लिया करो, सारा जोर रोटी पर नहीं लगाना चाहिये।" अपने लिये अच्छी रोटी निकाल रखता और टेकचन्द जी को सड़ी सूखी देता और वह भी कुढ़ते कुढ़ते।

टेकचन्द जी सहम गये और भूखे रहने लगे। प्रभु ने इन को धैर्य्य से सुभूषित कर रखा था और जबान पर ताला लग गया था जो कभी किसी के सामने न कहता। एक पैसे के भुन्ने छोले लेकर पास रखे और जब विद्यार्थी रात्रि को अपने अपने दीपक पर पढ़ते, यह रजाई में घुस जाते और मुरक मुरक करते रहते और भूख निवारण करते। प्रातः लड़के रोटी खाने जाते और यह अपना पाठ याद करता अथवा कभी शौचालय में कभी बिस्तर पर पड़े—पड़े दोहराता रहता।

प्रजापति को यह कब गवारा था कि ऐसा होनहार बे जबान बालक भूखा रह जाए। उन दिनों मारवाड़ में भूख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरी पड़ गई और लोग ठठ के ठठ मेहनत मजदूरी के लिए इधर निकल आए। भूख से व्याकुल हुए बाज़ार में पलाण्डू (प्याज) की नड़ें (बूखें) उठा उठा कर खाते और रोगी होकर अस्पताल में दाखिल हो जाते। डाक्टर नरसिंहदास बड़ा दयालु था।

इक दर वद्धेस दर खोले

उनको Indoor Patients (अन्तः प्रविष्ट रोगियों) के रूप में दाखिल कर लेता। उन के लिये दाल रोटी बनती और पाचक को आज्ञा कर दी कि इन रोगियों को खूब रजाओ। पाचक ऐसा ही करता रहा परन्तु कुछ दिनों बाद उन मारवाड़ी रोगियों की दाल से रुचि हट गई। डाक्टर साहिब उनके लिए दाल का कुन्ना चढ़वाता, वे न पीते, दाल बहुत बच जाती। पाचक होतूराम था, जो एक नेत्र से हीन था। इस वर्ष गालाराम एक विद्यार्थी स्पेशल कक्षा में प्रविष्ट हुआ, बड़ा मिलनसार, क्रिकेट खेलने में प्रवीण प्रबन्धक का प्यारा बन गया। गालाराम ने देखा कि अस्पताल वाले पाचक होतूराम के पास हुक्का पीने का अच्छा स्थान है। टेकचन्द जी को साथ ले जाकर होतूराम से मित्रता गांठ ली और प्रतिदिन सायं को दोनों गालाराम और टेकचन्द जी अस्पताल में चले जाते बे खटके हुक्का भी पीते और चूंकि होतूराम के पास दाल बहुत बच जाती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी, वह उन दोनों को खाने पर विवश करता। टेकचन्द जी तो भूखे होते ही, उन्होनें तो इस अवसर को प्रभु प्रदत्त समझा और खूब रज कर दाल पीने लगा और उस रौशन के उपालम्भ तथा कुदृष्टि व कुव्यवहार से भी बहुत कुछ मुक्ति मिल गई। सत्य कहा है, 'इक दर बंद्धे, सै दर खोले। विश्वंभर प्रजापति ने बालक के भोग का साधन बना दिया। कुछ काल तक ऐसा चक्र चलता रहा।

वीरता

एक दिन शनिवार सांय को छुट्टी मिलने पर जतोई अपने घर जाने लगा। उस दिन अलीपुर से जतोई को एक बारात भी जा रही थी। बारात में बहुत से घुड़सवार अपनी घोड़ियों को श्रृंगार से अलंकृत कर जाने लगे। गेलाराम ने कहा, टेकचन्द आज ऐसे वेग से चलें कि जाने वाले अश्वारोही बरांती से पहले हम जतोई में दाखिल हों। गेलाराम कद का लम्बा और कदम भी उसके लम्बे थे, टेकचन्द जी उस से न्यून परन्तु चलने में तीव्र गामी। दोनों चल पड़े, दौड़ते, हांपते, १ घण्टे में में १० मील की यात्रा तय कर प्रथम अश्वारोही के साथ ही शहर में दाखिल हुए। यह एक वीरता और साहस का कार्य था। प्रभु कृपा से हमारे महाराज जी अब भी अपनी पैदल यात्रा में बहुतों को पीछे छोड़ जाते हैं जिन दिनों की यह चर्चा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है उन दिनों तांगा मोटर अभी प्रचलित नहीं हुए थे। मंजिल पर पहुँच तो गए परन्तु थक कर चूर–चूर हो गए। मां ने देखा आज बालक बहुत थका हुआ है, रात्रि को खूब तेल से मालिश कर के शरीर को हल्का कर दिया।

टेकचन्द जी अब सातवीं में पढ़ते थे। एक दिन जिलाधीश अपनी धर्म पत्नी सहित स्कूल में आए। विद्यार्थी डेस्कों पर बैठे थे, सर्व प्रथम टेकचन्द द्वार के पास बैठा था। जिलाधीश तो आगे चला गया, मेम साहिबा की दृष्टि इस छोटे बालक टेकचन्द पर पड़ी।

प्रसिद्धि और पुरस्कार

उसके सिर पर हाथ रखकर अपने पति से कहने लगी, 'Well ask this tiny boy please ! कृपया इस छोटे बालक से पूछिये। तो जिलाधीश ने मुड़ कर टेकचन्द से कोई प्रश्न किया जिसका उसने तुरन्त उत्तर दे दिया। दोनों दम्पत्ति–प्रसन्न हो गए और मेम साहिबा ने कहा–"Very good, very good." (बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा) जब सारे स्कूल में दम्पत्ति भ्रमण कर चुके तो स्कूल के आंगन में जलसा हुआ जिस में नगर के प्रतिष्ठित सज्जन उपस्थित थे तो आदेश मिला कि कोई बालक अंग्रेजी की कविता सुनाए।

मेम साहिबा टेकचन्द पर प्रसन्न थी और चाह रही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी कि वही सुनाए। मास्टर साहिब भी जानते थे कि टेकचन्द का उच्चारण शुद्ध है इसलिए उसको आज्ञा की कि सुनाओ। टेकचन्द ज्यों ही उठा मेम साहिबा ने ताली बजाई और सब ने करतल ध्वनि की। बोला–

Try Try Try again,
Tis a lesson you should heed.
If at first you do'nt succeed.
Try Try Try again.

अर्थात यह ऐसा पाठ है जिस का सदा ख्याल रखना चाहिए। यदि तुम पहले सफल नहीं हो सके तो पुनः पुनः कोशिश करो।

इस सारे सम्मेलन में अंग्रेजी जानने वाले केवल जिलाधीश, उस की पत्नी और तीन स्कूल मास्टर थे। जिलाधीश और उनकी पत्नी ने कविता को समयानुकूल प्रशिक्षण समझ कर बड़ा पसंद किया और बार बार करतल ध्वनि करते हुए आदेश किया कि इस समाचार को समाचार पत्र में भेज दिया जाए।

कुछ दिनों बाद समाचार पत्र में वह समाचार छप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर आ गया तो सरदार अल्लहदादखान रईस ने पत्र का वह भाग कई लोगों को सुनाया कि जतोई का लड़का इतना होनहार निकला। टेकचन्द को न जानता था।

इस सूचना को सुनकर शहर के सरदारों को बड़ा हर्ष हुआ। चुनांचि जब सरदार मुहमदनसीर खान ने अपने भांजों से जो छटी कक्षा में पढ़ते थे यह सुना तो टेकचन्द को बुलाया। उसने आते ही सलाम (नमस्ते) की और खान साहिब ने **दो आने** निकाल कर टेकचन्द को दिए और सिर पर हाथ फेरा।

टेकचन्द के लिए दो आने रूपये के बराबर थे। कुछ काल से बेचारे ने पैसे का मुंह न देखा था। अलबत्ता उस की मां नानी कभी कभी दो चार पैसे उस की गांठ खर्च के लिए बन्धा देती थीं। उन्हीं पैसों से अधेले (आधा पैसा) के छोले लेकर पास रखता और जरूरत के समय खाता था।

प्रारम्भ से ही भगवान ने तपस्वी जीवन बनाने की नींव डाल दी थी। इस घटना से जहां टेकचन्द जी की प्रंसिद्धि हो गई वहां पुरस्कार भी मिल गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठवाँ अध्याय

दुकान निकालने का विचार और फटकार

हमारा वीर बालक अब सातवीं का विद्यार्थी था। मास्टर रामकिशन तृतीय अध्यापक आर्य समाजी थे और छात्रावास के अध्यक्ष भी थे। सांय को हिन्दू विद्यार्थियों को छत पर ले जा कर सन्ध्या सिखाते और संस्कृत पढ़ने की रुचि दिलाते। मुसलमानों को कहते, नमाज़ पढ़ा करो, पुण्य का काम है। रविवार को समाज के साप्ताहिक सत्संग में भी ले जाते। टेकचन्द के जीवन निर्माण में मास्टर जी का बड़ा हाथ था। चुनांचि शीत ऋतु में टेकचन्द जी जतोई में स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र की कथा बांचते, यद्यपि स्वयं कुछ न समझ सकते थे। सुविज्ञ श्रोता समझा देते थे।

विज्ञापन की पुस्तक में साबुन बनाने की विधि पढ़ी। मीताराम सहपाठी था, धनी मानी का लड़का था। ग्रीष्मावकाश में जब दोनों घर आए तो मत्ता बांधा कि अब पढ़ के क्या करना है, साबुन बनाना सीख लिया है, दुकान निकालें। मीताराम ने झट मान लिया और टेकचन्द सरलता के कारण बन्ध गया। स्कूल का काम करना भी छोड़ दिया। बस्ता ठपा ठपाया आले में रखा रहा। दिन भर धर्मशाला में गुजारना, हुक्का पीना और समय नष्ट करना।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां नानी से ज़िक्र तक न किया। उन से छिपाए रखा। मीताराम ने पिता माता से कहा तो उन्होंने कहा, अच्छा है, हम ने कोई नौकरी थोड़ी करानी है। दुकान निकाल देंगे, यह बात स्त्रियों से चलती चलती नानी के कानों तक पहुँच गई। नानी ने मीताराम के घर वालों से पता निकाला और टेकचन्द को ढूंढने धर्मशाला चली गई। टेकचन्द चिल्म हाथ में लिये तम्बाकू भर रहा था, नानी ने देखा क्रोध आ गया। छुट्टियां समाप्त हो चुकी थी, शनिवार का दिन था। सोमवार को स्कूल खुलना था और बुज्जा (हाथ की हथेली फैलाकर पांचों अंगुलियां उधर) करके कहा "टेका ! लाख बार धिक्कार ! लाख बार धिक्कार । निर्लज्ज, लज्जा नहीं आती। हम विधवा स्त्री जात के श्रम की भी शर्म नहीं, सातवीं पढ़ता है, शेष केवल आठवीं रह गई। सारा परिश्रम अपना और हमारा विनष्ट कर रहा है? तुझे किस ने मती दी है? साबुन की दुकान खोलेगा? तू साबुन बना सकता है? लज्जा (हियावाला) है तो चल। अपना पढ़। सम्पूर्ण मास ऐसे व्यतीत कर दिया, पुस्तक और कापी को हाथ तक नहीं लगाया।"

इस फटकार से टेकचन्द को बड़ी लज्जा आई और विशेष कर इसलिए कि धर्मशाला वालों में उस का मान था, वह इसे अच्छा समझते थे और आज उनके सामने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको फटकार पड़ रही थी। परिणाम यह निकला कि टेकचन्द ने चिल्म वहीं छोड़ दी और घर जाकर शनि की सायं तक और रविवार को सारा दिन बैठकर लिखने का काम तो समाप्त कर लिया, पढ़ने का रह गया। मीताराम को कहा, भाई ! मैं तो स्कूल जाऊंगा, तेरी इच्छा। मीताराम ने कहा—मैंने तो कुछ भी काम नहीं किया। चलो, साबुन न सही, कोई और दुकान निकाल लूंगा।

प्रभाव-सुधा

टेकचन्द सोमवार को स्कूल पहुँचा। अध्यापकों ने लिखाई का काम देखा और भगवान ने लाज रख ली। टेकचन्द जी का पतन से सुधार हो गया। आठवीं की घटनाएं कुछ कम मनोरंजक नहीं है, इसलिए चंद एक का यहां दिया जाना पाठकों को रोचक प्रतीत होगा। अस्तु ।

अब आठवीं चढ़ गए। प्रभु की कृपा से स्मरण शक्ति, सेवा सत्कार, सरलता और ग्रहण तथा धारण शक्ति का बाहुल्य प्राप्त था। पुरुषार्थी भी थे। निर्धनता के कारण किसी से बहुत मेल मिलाप न था, इसलिए एकाग्रवृत्ति से पाठ को सुनना और धारण करने का स्वभाव बन गया था। अध्यापक उपदेशक पर पूरा विश्वास था, कभी शंका की

पहली घटना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही नहीं। पुस्तक में पढ़ी, देखी बात पर दृढ़ विश्वास बन जाता जैसे पत्थर पर लकीर। इसलिए सन्ध्या करते समय रहट की चीं चीं में तल्लीन हो कर आनन्द लेते। इस का कभी त्याग नहीं किया। गायत्री का तो कई बार परीक्षण कर चुके थे। उसे अपना त्राण कवच बना लिया।

एक बार रात्रि को श्री तीर्थदास बत्रा अलीपुर से जतोई आया, आत्माराम पहूजा के द्वारा जो उन का सम्बन्धी और टेकचन्द का सहपाठी था, सब लड़कों को जमा किया और कहा कि देसराज को थाना से बुलाओ। थाने के मार्ग में शून्य निर्जन स्थान और खज्जियों के पेड़ थे, भय से कोई न जावे। टेकचन्द सबसे गरीब था, कुरः (Lot) उसी पर पड़ा कि जाओ। उसने कहा कि मुझे डर लगता है। तीर्थदास ने कहा मन्त्र मैं देता हूं, आज़मा लो। मेरा नाम कहते–कहते तीर्थराम तीर्थराम जपते रटते चले जाओ, कोई बला (आपत्ति बाधा) मार्ग में न आएगी। टेकचन्द तीर्थराम तीर्थराम कहते कहते दौड़ पड़ा ज़रा भी भयभीत न हुआ और देसराज को बुला लाया। अब जब गायत्री मन्त्र में पढ़ा "सब सागर तूं पार करे"–तो इस पर अगाध श्रद्धा और विश्वास हो गया और अब तो गायत्री को ही अपने हर प्रकार के भय से त्राण करने का जामिन बना चुका था। अपनी श्रेणी में प्रथम रहता यद्यपि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्याध्यापक ने अपने प्रिय विद्यार्थी को मॉनीटर बना रखा था।

अंकगणित तथा मसाहत के सब प्रश्नों के उत्तर याद कर रखे थे। क्रिया से वह उत्तर न निकालता था अपितु उत्तर के बल पर टकसंज कर जवाब लिख देता था मास्टर उत्तर को देख लेते इसलिये गणित में प्रथम गिना जाता था।

भूगोल की यह हालत थी कि आबनाय (Strait) और खाकनाय (Gulf) द्वीप (Island) और झील (Lake) का अन्तर मस्तिष्क में नहीं बैठा था परन्तु अपने कुछ चिन्ह बना रखे थे। इतिहास रटने का विषय था। अंग्रेजी फारसी में प्रभु प्रदत्त समझ थी और दोनों के व्याकरण को शौच के समय प्रतिदिन रट लिया करते।

औरियंटल टीचर अब मौलवी खुदाबख़्श जतोई से तबदील हो कर आए, टेकचन्द ने एक बार उनके प्रति कोई अनुचित चेष्टा की थी, अब उस के अध्यापक बन कर आ गए। इसलिए स्वाभाविक इस के मन में भय रहता कि अब ज़रूर प्रतिशोध लेंगे और संभवतः प्रतिदिन पीटेंगे भी। मौलवी साहिब S.V. थे परन्तु जीवन भर प्राइमरी स्कूल में पढ़ाते रहे, अनुभव ने

दूसरी घटना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और स्थूल बुद्धि के स्वामी थे। सारा समय स्वगृह पर छठी, सातवीं, आठवीं तीनों कक्षाओं के उर्दू, फारसी, और विज्ञान के कोर्स (पाठ्य पुस्तक) देखने पढ़ने और पढ़ाने के लिये तैयार करने पड़ते थे। फारसी का कोई अध्यापक न था, भाष्य पुस्तकों से सहायता लेते। वृद्ध होने के कारण भूल भी जाते, भाष्य साथ न ला सकते और स्कूल की पुस्तक पर भी न लिख सकते थे। अपनी तरफ से बड़ें सावधान रहते परन्तु लड़के बड़े चालाक (काक) होते हैं, फारसी में इन को "अखवानु शयतीन" अर्थात् शैतान का बड़ा भाई, दुष्टों के भी दुष्ट कहा जाता है। पहले ही दिन जब लड़कों को पढ़ाने लगे तो मस्तिष्क चकरा गया। लड़कों की योग्तया का भी ज्ञान हो गया, प्रतिदिन कहीं न कहीं भूल भी जाते। टेकचन्द से प्रतिशोध लेने का भाव मन ही मन में रह गया। पीट भी न सके। टेकचन्द प्रतिदिन का पाठ सुना देता।

एक दिन पाठ पढ़ाया, बहुत कठिन था। टेकचन्द ने विचारा कि यह पाठ कल तक मौलवी साहिब को याद नहीं रह सकता। दूसरे दिन आए तो पहले लड़के से एक शब्द का अर्थ पूछा, उसने बताया परन्तु वह अर्थ अशुद्ध था। मौलवी साहिब को संदेह हुआ कि यह अर्थ अशुद्ध है दूसरे से पूछा, उसने उत्तर ही न दिया। एक और से पूछा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भी मौन ! टेकचन्द ने मौलवी साहिब के मुखमण्डल को देख कर भांप लिया कि मौलवी साहिब को स्वयं नहीं आते।

टेकचन्द जी ने बचपन में हस्त रेखा तथा मुख आकृति देखने का कुछ अभ्यास तेली राजा ब्राह्मणों के द्वारा किया था। जब तेली राजा आते, स्त्रियों के बालकों की हस्त रेखा देखते, टेकचन्द डटकर उनके पास बैठ जाता और बड़े ध्यान से देखता कि वे क्या कहते हैं? ऐसे सब के हाथों की रेखाओं को तथा मुख आकार को देखता और अनुभव करता जाता। परमेश्वर ने स्मरण शक्ति और ग्रहण शक्ति तो प्रदान कर ही रखी थी, कई कई घण्टे गलियों में उन के साथ रहता और रेखा तथा आकार ज्ञान को सुदृढ़ करता और उससे परिणाम भी निकालता।

Palmist–रेखाविज्ञ

मौलवी साहब को टेकचन्द पर विश्वास था कि यह चतुर भी है और स्मरण शक्ति भी ठीक है। अब अन्त में उसी से पूछा। टेकचन्द ने जान बूझ कर कहा कि श्रीमान्! वह लड़का ठीक कहता है। अब मौलवी साहब चुप हो गये और दूसरा पाठ पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। जब पढ़ा चुके तो टेकचन्द के मन में विचार आया कि परीक्षा तो हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुकी अब अपना विश्वास भी न खोए और लड़के भी अशुद्ध याद न कर लें इसलिये अन्त में कहा, मौलवी साहिब! उस शब्द का शुद्ध अर्थ यह है, लड़के ने अशुद्ध बताया था, मुझे अब याद आया। मौलवी साहिब ने कहा "मुझे तो अशुद्ध मालूम होते थे और लड़कों को आया न, तुम पर मुझे विश्वास था। तुम ने भी पुष्टि कर दीं, तो मैंने समझा, स्यात् मैंने ही अशुद्ध यही अर्थ पढ़ाए होंगे, अब मुझे भी याद आ गया है कि अब जो अर्थ तुम कहते हो, यही मैंने पढ़ाए थे।"

मौलवी साहिब को टेकचन्द पर और भी विश्वास हो गया कि सत्य वक्ता और अपने दोष स्वीकार करने वाला है।

हठ दुराग्रह

एक बार मौलवी साहिब ने कहा कि टेका ! तुम आर्य समाजी हो, आर्य समाजी भजन गाते हैं, एक कविता गाकर सुनाओ। टेकचन्द ने कहा कि मुझे गाना नहीं आता, मेरी स्वर नहीं है। मौलवी साहिब ने कहा, नहीं तुम अच्छा गा सकते हो, जरूर सुनाओ। टेकचन्द ने फिर इन्कार किया। मौलवी साहिब ने आग्रह किया, टेकचन्द ने दुराग्रह, बात बढ़ गई। मौलवी ने कहा अच्छा बैंच पर घुटने टेक खड़े हो जाओ। टेकचन्द खड़ा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया और घण्टा पक्का खड़ा रहा, घुटने दर्द करने लगे परन्तु टेकचन्द ने फिर भी न माना, कहा, मुझे गाना नहीं आता। ऐसा दुराग्रह !!! अब याद आता है।

यह अवज्ञा उनको अब तक स्मरण है। मौलवी साहिब के विषयों में वह उन से सदा साधुवाद ही लेता रहा।

सत्संग और अध्यापकों के उपदेश का प्रभाव ऐसा था कि टेकचन्द ने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया (प्रतिज्ञा कर ली) कि मिडल तक तो असत्य बोलूंगा, क्योंकि कई बार शिक्षकों की मार से बचने के लिए असत्य बोलना ही पड़ता है। जतोई से देर से आना हुआ अथवा लड़कों से मिल कर षडयन्त्र रच लिया कि सोमवार न आकर मंगलवार ही आना है और मंगलवार पहुँचकर मार से बचने के झूठ घड़ लिये गए। टेकचन्द ने कहा मैं तो कहूँगा कि मुझे बिच्छू ने डंक लगाया था। उस दिन ऐसा झूठ बोल कर ताड़ना से जान तो बचा ली परन्तु बाद में बड़ा शोक हुआ और अब मन में प्रतिज्ञा कर ली कि मिडल के बाद असत्य न बोलूंगा। यह प्रतिज्ञा उस असत्य प्रतिज्ञा को निर्बल बनाने के लिए तब हुई जब समाज मन्दिर में प्रायः सुनता :–

सत्य की प्रतिज्ञा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत् धर्म बिना कोई दाद नहीं—तेरी बंदेआ कुछ बुनियाद नहीं।।

हंसमुख रहने की प्रवृत्ति

एक दिन टेकचन्द किसी दुकान पर बैठा हुक्का पी रहा था कि उधर से चौधरी आसानन्द का लड़का टोपणदास जो ५वीं या छठी का विद्यार्थी थां, पिता की चिल्म में अंगारा रखने के लिए गुजरा। उसके मुख मण्डल पर सदा मुस्कान अठखेलियां ले रही होती। हंसता हसंता गुजरा, टेकचन्द जी के मन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उस ने अंब अपनी आकृति में हंस—मुख क्रिया का अभ्यास प्रारंभ कर दिया। संध्या करने बैठे तो हंस मुख और उस लड़के का आकार सदा हंसता सामने आए। अब टेकचन्द ने समझा यह बालक बहुत पवित्र आत्मा है। बाजार में लुकछुप की खेल में एक दिन पिता की मृत्यु के बाद रात्रि को दुकान के एक कोने में जा छिपा, परन्तु दैववशात् चौधरी नारायण दास जो टेकचन्द के पिता का उन के जीवन काल मे भाईवाल था, आ गया और पूछा कि कौन है? टेकचन्द ने कहा मैं टेका हूँ। नारायण दास ने कठोर अप—शब्द "कुस्त जन" से सम्बोधित करते हुए कहा कि अब तेरा क्या मतलब, भाग जा यहां से। तब से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाज़ार में खेलना तो बन्द कर दिया, परन्तु नानी की गली में चांदनी रात में गली मुहल्ला के बच्चों से खेलता।

टेकचन्द स्कूल में एक दिन अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा था टोपण आया और नमस्ते करके चला गया। उ दुकान पर भी प्रतिदिन सायं को गुज़रता और हंसते हंस नमस्ते करके जाता। अब टेकचन्द आश्चर्य में में प गया। एक दिन उसे अंग्रेज़ी व्याकरण (Grammer) की पुस्तक की ज़रूरत पड़ी, टेकचन्द के कमरे में झट आया और कहा कि मुझे व्याकरण की पुस्तक की आवश्यकता है, आप दे सकते हैं। टेकचन्द ने झट अपने बस्ते से पुस्तक निकाल दे दी, लड़कों ने टेकचन्द से पूछा वह न दे तो क्या करोगे? कहा कोई बा नहीं मुझे आवश्यकता नहीं। उनको यह तो मालूम न था कि टेकचन्द व्याकरण को शौचालय में ही रटा करता है लड़कों ने ताक लगाई परन्तु यहां तो कोई बुरा विचा तथा आचार था नहीं, क्या करते ?

टेकचन्द का पियार



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौवां अध्याय

एक बार गालाराम अनुपस्थित था। वह मास्टर रामकिशन का भोजन बनाया करता था। एक दिन मास्टर जी का एक अतिथि आ गया। भोजन छात्रावास के पाचक ने बनाया। मास्टर जी टेकचन्द को प्रेम करते थे क्योंकि वह उन के उपदेश ध्यानपूर्वक सुनता था, अतः पाचक को कहा कि "थाली टेका के हाथ भेज दो" टेकचन्द सब से पीछे खाता था। भोजन परोसा गया, पाचक ने थाली टेकचन्द के आगे करके कहा, यह लो, ले जाओ।" टेकचन्द ने देखा मांस है। लेने से इन्कार कर दिया। पाचक आवेश में आ गया और झट मास्टर के पास जाकर शिकायत की कि वह थाली नहीं उठाता, कहता है "मांस है, मैं नहीं उठाऊंगा"। मास्टर की ताड़ना प्रसिद्ध थी, इतनी सख्त ताड़ना करता था कि कई बार तो बालकों का मूत्र निकल जाता, मुख्याध्यापक भी उन का लोहा मानते थे। लड़के थर थर कांपते थे।

धर्म का बल बालक का जादू

मास्टर ने कहा "उसे इधर भेजो और भोजन किसी और के हाथ भेज दो।"

टेकचन्द आया कांपता, कांपता, परन्तु अन्दर से कोई दैवी शक्ति उसके मन को थामे हुई थी। मास्टर जी के साथ उन का मित्र भी बैठा था। पूछा "क्यों? थाली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं उठाते?" कहा–उस में मांस है और उस की गन्ध से मुझे वमन आ जाता है।"

मास्टर सुन कर सुन्न हो गया। उस की ज़बान पर प्रभु ने ताला लगा दिया। कहा–"अच्छा किसी और लड़के को कहो अथवा पाचक ले आवे।" टेकचन्द वापस अपने कमरे में चला गया। मास्टर जी ने मित्र सहित भोजन खाया।

लड़कों को भय था कि टेकचन्द को मार अवश्य पड़ेगी, मित्र के कारण मास्टर जी चुप हो गए। टेकचन्द को लेशमात्र भी भय न था। भीतर से कोई शक्ति उस को उत्साह दिला रही थी।

सांय के समय सब लड़के संध्या में इकट्ठे हुए और मास्टर जी ने कहा कि "निसंदेह मेरी यह बड़ी त्रुटि है कि मैं तुम लोगों को उपदेश करता हूँ और स्वयं दोषी हूँ। टेकचन्द की निर्भयता देखकर मैं समझता हूँ कि यह धर्म का बल है। धर्म उसे निर्भय बना रहा है। टेकचन्द का जादू मेरे ऊपर असर कर गया है। कालिज में हम दोनों मासं खाते थे, यहां एक समय खाता हूँ, अब मैं इसे सर्वथा छोड़ने का प्रयत्न करूंगा। **आज से मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अब सप्ताह में दो या तीन बार खाया करूंगा, परन्तु प्रतिदिन नहीं खाऊंगा और एक दिन अवश्य ही छोड़ दूंगा।**

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला जीवनदास पटवारी का लड़का चन्द्रभान पाँचवी कक्षा में तरक्की पाते ही बीमार हो गया। नौ मास रोगी रहा। दिसम्बर मास में स्वस्थ होकर स्कूल में आया, कमजोर भी था और नौ मास पढ़ा भी कुछ न था।

दूसरा चमत्कार

उन दिनों इन्सपैक्टर स्कूल की परीक्षा लेकर पास फेल करते थे। दिसम्बर में इन्सपैक्टर आ गया। स्कूल मास्टर ने चन्द्रभान को श्रेणी से निकाल दिया कि "इन्सपैक्टर पूछेगा, तू फेल हो जाएगा तो मेरी बदनामी होगी।" चन्द्रभान कमरे के बाहर खड़ा था कि इतने में टेकचन्द जी पहुँच गया। पूछा "क्यों खड़े हो।" चन्द्रभान ने सब समाचार सुना दिया। उस समय इन्सपैक्टर कमरे में दाखिल हो चुका था, टेकचन्द ने कहा, अन्दर चले जाओ, क्या पता इन्सपैक्टर तुम से वही पूछ ले जो तुम्हें आता है। प्रारब्ध की बात है। इन्सपैक्टर के सामने तो मास्टर कुछ नहीं कहेगा। चन्द्रभान डरता डरता अन्दर दाखिल तो हो गया। दैववशात् अथवा भाग्य देखिए, इन्सपैक्टर ने पुस्तक के पहिले पृष्ठ से ही चन्द्रभान से प्रश्न किया जो उस ने धाराप्रवाह सुना दिया। गणित के प्रश्न भी एक दो ठीक हो गए, **चन्द्रभान पास हो गया, टेकचन्द जी के गायत्री जाप का स्कूल में यह दूसरा चमत्कार था।** तब से चन्द्रभान को टेकचन्द से श्रद्धा प्रेम हो गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब लड़के अज़मायशी परीक्षा **(Trial Examination)** में उत्तीर्ण हो गए। अब यूनिवर्सिटी परीक्षा का ५ रु० प्रवेश शुल्क देना था। मुख्याध्यापक ने सब लड़कों से शुल्क मांगा, सब ने दे दिया। टेकचन्द के पास तो थे नहीं, वह रोटी भी छात्रों से निःशुल्क खाता था। उस ने कहा, भगवन् ! मेरे पास तो नहीं हैं।" टेकचन्द जी और मुख्याध्यापक के बीच जो वार्त्ता हुई वह निम्न प्रकार की थीः

मास्टर–लाओ, लाओ कहीं से लाओ, मां से लाओ उधार ले आओ, ले आओ।

टेकचन्द–मां से क्या जा कहूँ वह बेचारी चक्की पीस कर निर्वाह करती है। दो पैसे के दाने तीन घन्टे में पीसती है, बच्चों का पेट पालती है, मैं क्या जा कहूँ? और कहां से, कौन उधार हम को देगा?

दिन बीतते गए और वह प्रायः प्रतिदिन तकाजा करते और कहते :–

टेकचन्द ! आठ वर्ष पढ़े, बिना आठवीं पास किए क्या करोगे? प्रवेश शुल्क दिए बिना कैसे परीक्षा में बैठ सकोगे। तुम्हारी खातिर सब के दाखले रुके पड़े हैं।"

सब मास्टरों को बुलाया और कहा कि "टेकचन्द को समझाओ, शुल्क नहीं देगा तो परीक्षा से रह ज़ाएगा।"

मास्टर महोदय टेकचन्द को तो कुछ न कहते,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानते थे निर्धन है। अलबत्ता मुख्याध्यापक से कहते कि "अन्तिम तिथि तक तो प्रतीक्षा करें, शायद भगवान कोई साधन बना दें?

दो चार दिन अभी शुल्क की अन्तिम तिथि में रहते थे कि फिर मास्टरों को बुलाया और कहा तो प्राईमरी के अध्यापक मौलवी निजामुद्दीन ने कहा, "शैख साहिब। परमेश्वर दुःख निवारक हैं, आप अन्तिम दिवस तक तो प्रतीक्षा करें।"

अन्तिम दिन आ गया। मौलवी निजामुद्दीन ने कहा "कि Settlement Officer आज डाक बङ्गला पर आए हैं, टेकचन्द आवेदन पत्र लिख दें और श्रीमान सम्पुष्टि कर दें, कि लड़का वस्तुतः निर्धन अनाथ है, योग्य भी है, इसके पास परीक्षा में बैठने का शुल्क नहीं है, सहायता दी जावे।"

चुनांचि टेकचन्द ने आवेदन पत्र लिखा, मुख्याध्यापक ने सम्पुष्टि कर दी। टेकचन्द वह पत्र लेकर बङ्गला पर चला गया, डरता डरता गया कि इतने बड़े अधिकारी के पास कैसे पहुँचूं। आवेदन पत्र लिये टेकचन्द कॉप रहा था, प्रभु गुप्तं प्रेरक की ऐसी प्रेरणा हुई कि अरदली ने उस को देखलिया और जो अरदली Tip घूंस लिए बिना किसी को पास नहीं फटकने देते, वह स्वयं चलकर टेकचनद के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आया जिस पर टेकचन्द को और भय हो गया परन्तु उसने कहा, "क्यों बच्चा ! कैसी दरखास्त है।" टेकचन्द तो भय से एक शब्द भी मुंह से न निकाल सका, उस ने स्वयं आवेदन पत्र लेकर साहिब के सामने जा रखी।

साहिब पण्डित हरिकिशन कौल थे जो बाद में ज़िलाधीश और मण्डलाधीश (कमिश्नर) बने, आज्ञा की, लड़के को बुलाओ। टेकचन्द ने अन्दर जाकर प्रणाम किया।

कितनी फीस है? पांच रुपया–टेकचन्द ने कहा। साहिब ने ५ रु० दिए और टेकचन्द प्रणाम कर रु० लेकर वापस आ गया।

अब परीक्षा केन्द्र को जाने का दिन आ गया। केन्द्र मुलतान था। अलीपुर से मुफ्फरगढ़ लगभग ५० मील था और १६ मील वहां से मुलतान था। मुजफ्फरगढ़ से मुल्तान के बीच रेल चलती थी, उन दिनों सरकारी डाक मुजफ्रगढ़ एक तांगा पर जाती जिसका ठेका सरदार जान मुहम्मदखान हाजी ने लिया हुआ था। मोटर बस सर्विस का अभी जन्म भी न हुआ था। मेल कार्ट का किराया ४ रु० प्रति सवारी था। आठ सवारियां अधिक से अधिक बैठ सकती थी, कच्ची सड़क थी। घोड़े मार्ग में पड़ाव–पड़ाव पर बदला करते थे। मुख्याध्यापक ने मास्टर राधूराम को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज्ञा की कि विद्यार्थियों के साथ जाएं। पांच विद्यार्थी थे टेकचन्द को शामिल करके। चार ने तो अपना किराया देकर टिकट प्राप्त कर ली थीं और तांगा में मास्टर जी सहित सवार हो गए। निमाना निर्धन अनाथ नायक बस्ता लिये नीचे खड़ा है। मेल कार्ट अर्थात् तांगा पर इस बार सरदार जानमुहम्मदखान भी चल रहा था। वह कभी कभी जाता था। उन के भृत्य कोचवान, बड़े ईमानदार और धर्मात्मा थे।

सवित: देव की प्रेरणा दया के रूप में

सरदार जान मुहम्मद खान की दृष्टि प्रभु देव ने टेकचन्द की ओर फेरी और पूछा; मास्टर साहिब ! यह लड़का बिस्तरा और बस्ता उठाए क्यों खड़ा है? क्या इसने भी चलना है?

मास्टर—हां इसने भी परीक्षां देने जाना है।

सरदार—इस ने टिकट तो नहीं ली। चार की रकम आपने दी।

मास्टर—हां, यह लड़का निर्धन है, अनाथ है, इस के पास रुपये कहां?

सरदार—(घोड़े की ओर देखकर) कच्ची सड़क है, तांगा पर आठ सवारियों का बैठना कठिन है। एक कोचवान, एक स्वामी, चार विद्यार्थी; एक मास्टर, आठवां टेकचन्द।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्टर–यह लड़का आठ वर्ष पढ़ा, परिश्रम किया बड़ा योग्य है, अब बेचारा रह जाए तो बड़ा दुःख होगा।

सरदार–(सरदार दूसरी बार टेकचन्द की निमानी मूर्ति को देखकर) ठण्डी सांस लेते हुए "वत्त ही अल्लाह, वत्त ही अल्लाह" (अर्थात् प्रभु आश्रय, प्रभु रक्षक हैं) ऐसा कहते उस सज्जन, भक्त की आंखों में नमी (अश्रु) भी आ गई।

और कहा–आ जा बच्चा! बैठ जा, परमेश्वर भली करेगा।

टेकचन्द चढ़ गया। खान ने घोड़े को प्यार देते हुए प्रभु से प्रार्थना की और बड़े आराम और प्रेम से पुचकार कर चला दिया। मुज़फ्फरगढ़ पहुँच गए। मुज़फ्फरगढ़ से मुलतान का रेल किराया किसने दिया, यह अभी तक रहस्य में है।

रोटी कहां से खाएगा? पैसे पल्ले नहीं, परीक्षा देने चला है। पर वाह रे प्रभु ! तेरी दया और लीला। मास्टर रामकिशन जी आ गए, उनका घर मुलतान था, लड़कों को लोहारी दरवाजा के अन्दर सेवाराम के बंगले पर ठहराया गया। रात्री को तो ढाबा पर भोजन कराया गया। प्रातः से मास्टर जी के घर से कई प्रकार की सब्जी, दाल, पापड़ आदि आते और लड़के आनन्द से खाते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेकचन्द के भाग्य के साथ सब के भाग्य खुल गए।

परीक्षा समाप्त हुई। बच्चों ने जाते समय मुलतान के गोल गप्पों का भी स्वाद लिया और सुखपूर्वक अपने अपने घरों को लौटे।

माता और नानी देख कर खुश हुई कि अब कष्ट की घड़ियां समाप्त हुई, टेकचन्द अब नौकरी करेगा और आराम से जीवन बिताएंगे।

परीक्षा परिणाम तक तो व्यवसाय का कोई कार्य न बन सकता था। टेकचन्द तो अभी आगे ही पढ़ना चाहता था।

अन्तिम कक्षा में एक दिन मुख्याध्यापक ने सब लड़कों से पूछा, "परीक्षा के बाद क्या करोगे"? टेकचन्द से पूछने पर उसने कहा "मैं बी.ए. तक पढूँगा।" "तो क्या जिलाधीश बनोगे?" कहा "हां"। मुख्याध्यापक ने पूछा यदि हमारे ऊपर कोई अभियोग बन जाए और तुम्हारे सामने आए तो हमारा पक्ष लोगे नां।" कहा "कदापि नहीं।" मुख्याध्यापक ने कहा "अच्छा बच्चू! तब तू जिलाधीश भी बन चुका।"

उड़ते उड़ते यह बात कहीं की कहीं जा पहुंची। ना मालूम भगवान कहलवा रहा था, भावी मार्ग खोलने के लिये?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दसवाँ अध्याय

नेभाराम के मन में भी टेका की विचार धारा ने घर कर रखा था। ४०) रु० अपने लेखे चौधरी तुलसाराम से ले आया और टेकचन्द रूपये लेकर मुलतान पहुँच गया। छात्रावास में लाला रामचन्द पंगू (लंगड़ा) रहते थे और भी विद्यार्थी थे।

हाई स्कूल में प्रवेश

दूसरे दिन प्रातः प्रमाण पत्र दिखा अर्द्ध शुल्क पर प्रविष्ठ हो गया। मुख्याध्यापक ने कहा कि तुम देर से आए हो, अधिक गुंजायश नहीं। लाला रामचन्द दसवीं में पढ़ता था, योग्य था। कहते हैं एक बार इन्सपैक्टर स्कूल आया और पूछा कि स्कूल में कौन कौन विद्यार्थी होशियार हैं तो मुख्याध्यापक ला० गोकुलचन्द जीं ने उत्तर दिया चार लड़के स्कूल में अग्रणी हैं। टुण्डा, मण्डा, चुन्धा और मन्धरा (बौना)। साहिब हंस पड़ा। चारों को छात्रवृत्ति मिलती थी। टुण्डा थारूलाल सराय सिद्दू का था जो बाद में मुजफ्फरगढ़ का प्रसिद्ध वकील बना, मण्डा रामचन्द अलीपुर का था। कुछ काल मुखत्यार बनकर प्रसिद्ध हुआ चुन्धा सुन्दर दास सलूजा कमालिया का था जो ए०डी० आई रह कर गवरमिन्ट स्कूल का मुख्याध्यापक बन कर Retire (मुक्त) हुआ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्धरा ज्वाला दास था, तहसीलदार का पुत्र था। अब कहां है, पता नहीं।

लाला रामचन्द के परामर्श पर नवीं में टेकचन्द ने संस्कृत ले ली। संस्कृत की टेकचन्द ने मास्टर रामकिशन जी से प्रशसां सुनी हुई थी, परन्तु जब संस्कृत के घण्टे में पण्डित जी के सामने गया तो 'क, ख' भी नहीं जानता था। शेष उस के सहपाठी तो संस्कृत का पाठ लेते और टेकचन्द उनके मुख को ताकता रहता। दो दिन गया, पल्ले कुछ न पड़ा, उदास हो गया और ला० रामचन्द के समझाने बुझाने पर भी कोई युक्ति उदासीन मन पर अपना प्रभाव न कर सकी। अतः संस्कृत छोड़ फारसी में विद्यार्थियों के साथ जा बैठा। उस श्रेणी के दो भाग थे–ए और बी प्रत्येक भाग में ७०, ७० विद्यार्थी थे।

फारसी मास्टर नत्थुराम कमालिया निवासी, अंग्रेजी पण्डित भगवान दास चिनियोटी, विज्ञान मास्टर मैय्यादास चिनियोटी और गणित लाला बेलीराम मुखिया आंगलाध्यापक, भूगोल लालां रामदित्तामल झंग निवासी पढ़ाते थे।

अभी एक सप्ताह भी पूरा नहीं हो पाया था कि नवमी की फारसी की परीक्षा ली गई। टेकचन्द की देर से आने के कारण प्रायः सब विषयों में कमी थी। परीक्षा में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैवयोग से उस के पढ़े हुए पाठ से प्रश्न आ गया और एक भाग ऐसा था कि जिसके अंग्रेजी में उल्था करने वाले को अतिरिक्त अंक मिलने थे। टेकचन्द ने दोनों का लाभ उठाया। चार दिन बाद जब परिणाम निकला तो टेकचन्द 95/100 और एक मुसलमान लड़का 95/100 अंक ले गए। दोनों बराबर रहे। टेकचन्द से सब मास्टर और विद्यार्थी प्रेम तथा आदर करने लगे। इस से पूर्व बाल कृष्ण, जो पञ्जाब भर में मिडिल में प्रथम रहा था, अध्यापकों में मान की दृष्टि से देखा जाता था।

परीक्षा और परिणाम

प्रातः स्कूल जाते समय मार्ग में एक दुकान से लस्सी (तक्र) बनवाकर पीते, टेकचन्द एक धेले की १।। छटांक दही से लस्सी बनवाकर एक गिलास भर पी लेता और अर्द्धावकाश में लड़के हलवाई की दुकान पर मिठाई आदि खाते और यह जेब से छोले निकाल कर जो पास रखता था, खा लेता मध्याह्न पश्चात् जब स्कूल से लौटते तो ग्रीष्म ऋतु के कारण भूख लगी होती और छात्रावास स्कूल से काफी दूर होने के कारण लड़के पहले पहुँचने की होड़ लगाते ताकि पहले पहुंच कर पाठशाला में अपना घी पहले गरम कर सकें और भोजन

विद्यार्थियों का दैनिक कार्यक्रम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले सकें। ला० रामचन्द था तो मण्डा (पंगू) परन्तु चतुर बड़ा था, उसका कमरा पाकशाला के साथ था और अलीपुर के लड़कों का घी सब उस कमरे में रखा रहता। टेकचन्द को चाबी देकर कहते शीघ्र जाकर घी निकाल कर तपाओ और तब सब रोटी खा कर पढ़ाई में लग जाते।

टेकचन्द के लिये दोनों विषय कठिन थे। लाला रामचन्द समझाने की कोशिश करता, परन्तु टेकचन्द की रुचि न होती। इन दोनों विषयों में बहुत घबराता। ऐसे तो बहुत विद्यार्थी थे जो चट दिमाग (स्थूल बुद्धि) के थे और प्रतिदिन पीटे जाते, वह तो न घबराते थे परन्तु टेकचन्द बिना मार खाए भी घबराता था।

बीज गणित और रेखा गणित कठिन

टेकचन्द की प्रीति लाला रामचन्द से अधिक थी। वही उनका परमार्श दाता और सहायक था। टेकचन्द कभी कभी उन से विनोद भी कर लेता। दोपहर को जब आते तो द्वार खोल देता और दौड़ कर लाला रामचन्द की डांग (सोटा) छीन लेता और वह बेचारा धूप में बिना आश्रय कैसे चले। खड़े हो जाते और अपशब्द कहते, नामाकूल (धृष्ट), मूर्ख! टेकचन्द कहता, मास्टर जी! लेथब्रिज़ साहिब का रचित

विनोदी स्वभाव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास याद है, इसी सोटे से हमें पीटते थे। वे हंस पड़ते और कहते, बदमाश (दुष्ट) लाओ नहीं तो फिर पीटूंगा। दो चार मिनट की दिल्लगी हो जाती।

टेकचन्द सम्पूर्ण व्यय तो लाया नहीं था। अभी बालक ही था और घर वालों ने भी गिनती करके तो नहीं दिया था रुपया समाप्त हो गया, अपने बहनोई को लिखा, कि रुपये समाप्त हो चुके हैं और भेजें। रुपये तो उन्होंने भेज दिए परन्तु लिखा कि टेका ! यहां तो कभी पैसा भी खर्चने वाला न था, वहां मुलतान में इतना पैसा थोड़े दिनों में कैसे खर्च कर दिया? निर्वाह कैसे होगा। हम तो यह सब रुपया तुम्हारे लेखे उधार लेकर भेजते हैं।"

व्यय का लेखा देना पड़ता

उसने लिखा "मैं तो एक आधे पैसे की दही की लस्सी प्रतिदिन पीता हूँ और थोड़े छोले खाता हूँ। मुझे जबान का चसका तो है नहीं। सब लड़के बाजार में जाते हैं। एक दिन मैं अलीपुर वालों के साथ गया था, उन्होंने एक रूपया खर्च किया, मेरा भाग चार आने का था वह मैंने दिया। उस के बाद बाजार जाना बन्द कर दिया है।"

"पुस्तकों पर दाम खर्च हुआ, किराया लगा, फीस अदा की। पहले मास का व्यय आपको अधिक मालूम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता होगा डेढ़ मास के करीब पढ़ाई हुई।" फिर गरमी की छुट्टियां हो गई। सब अपने अपने घरों को चले गए।

छुट्टियों में टेकचन्द जी अपनी पढ़ाई लिखाई में लीन रहते, अवकाश के समय उनका उठना बैठना पूर्व प्रकार अपने समकालीन समावस्था के मित्र गोविंदाराम पंसारी की दुकान पर होता।

बाल विवाह की तैयारी और विवाह

गोविंदाराम चौधरी डासूराम डुडेजा का पुत्र था। पंसारी और वैद्यक का काम करता था। अलीपुर में उन के बहुत सम्बन्धी रहते थे। एक दिन गोविंदाराम किसी निजी काम के लिएं छात्रावास में किसी को मिलने आ गया, तो टेकचन्द बाहर के आंगन में खड़ा था। स्वाभाविक रूप से उसने गोविन्द का आदर सत्कार किया, नमस्ते की और प्रेम से उत्तर दिया। गोविंदाराम भी मिलनसार, मधुरभाषी था। कोई पूर्व जन्म का संस्कार ऐसा जगा कि दोनों में प्रेम बन गया। तभी से टेकचन्द जी जतोई में उसकी दुकान पर जा बैठते।

गविंदराम की नीति और प्रीति

इतनी अल्पावस्था में ग्राहक को मोह लेना उसका कोई नैसर्गिक स्वभाव था। जो दूर ग्रामों से आते उन से अन्न जल भी पूछता। एक ऐसी चतुराई करता कि जिस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से न घर को हानि पहुँचे और न ग्राहक को लूटे। युक्ति ऐसी करता कि ग्राहक कभी दूसरे स्थान पर जावे भी न।

ग्राहकों से व्यवहार

दवाई के पुड़े बांधे, दाम गिने तो एक आना अधिक जमा करके बतलाता, उदाहरण—यदि चार आने दाम हैं तो पांच आने कह दिए, और उसे कहता, "देखो भाई ! मेरा घर दुकान से काफी दूर है। बक्स से एक आना निकाल कर उसे देता कि यह तुम्हारी रोटी है।" ग्रामीण लोग बड़े सरल स्वभाव होते हैं, बड़े खुश हो जाते और उसके गुण गाते। यद्यपि यह असत्य अनृत है।

परन्तु दुकानदार इस सत्यासत्य को क्यां समझें? वह इसे अपनी बुद्धिमत्ता समझते हैं। गोविंदा राम एक तो शहर के प्रसिद्ध वैद्य ला० टिकायाराम डुडेजा का शिष्य था, दूसरा शहर के हकीम, मौलवी गौसबखश साहिब और मौलवी सिराजुदीन साहिब आदि आदि उसकी दुकान पर जा बैठते और वह उनकी सेवा करतां। सेवा से प्रसन्न होकरे वे रोगियों को इसकी दुकान का संकेत करते कि यहां से दवाई अच्छी मिलेगी। इस प्रकार गोविंदाराम की नीति सफल हुई।

हमारे श्री टेकचन्द जी चूंकि प्रायः उस की दुकान पर बैठते थे, उसके भाइयों को संदेह हो गया कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेकचन्द इस चलती चलाई दुकान में शायद भाईवाल बनना चाहता है। ईर्ष्या बढ़ गई, गोविंदा राम से उस के भाइयों ने पूछा, तो गोविंदाराम ने कहा कि "टेकचन्द न तो वैद्यक जानता है न भाईवाल बनने की उसकी इच्छा है। हां यदि वह बनना चाहे तो मैं उसे अवश्य बना लूंगा। हर एक का भाग्य अपना अपना है, आप क्यों ईर्ष्या करते हैं?

विवाह की बात चल रही थी, यह तो विषयान्तर आ गया। गर्मी की छुट्टियां समाप्ति पर आ गईं। घर वालों ने उन के विवाह की तैयारी शुरू कर दी। टेकचन्द जी को इस तैयारी का ज्ञान तब हुआ जब उसके सम्बन्धी का जगन्त्रा (टेवा लिखने की रीति) का दिन था।

विवाह आदि के अवसर पर प्रायः सर्वत्र यह दस्तूर चला आता है कि रुष्ट बिरादरी (भाइयों को) और विशेष कर घनिष्ठ सम्बन्धियों को मनाया जाता है। सब लोग

चाचा जेसाराम का रोष

आए। चाचा जेसाराम न आया। रात्रि को पंचायत इकट्ठी हुई, चाचा के साथ टेकचन्द जी का तो कोई द्वेष था नहीं, दोषी तो वही था, अपने अन्दर झांकी न लगाई उल्टा मनाना टेकचन्द जी को पड़ा। बहनोई नेभाराम ने टेकचन्द को समझाया कि यदि वह गृह विभाजन का प्रश्न उठाए तो आप पंचायत से कहना कि चाचा जी से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पूछा जाए कि वह हमारे साथ इकट्ठा है कि जुदा ! यदि वह कहे कि इकट्ठा हूं तो जो सम्पत्ति उस के पास है सब बांट दें और यदि कहे जुदा हूँ तो फिर जुदा ही रहे, मकान का विभाजन कैसा?

जेसाराम आया और उसने उज़र किया कि पहले मकान बांट दे। टेकचन्द जी के प्रश्न पर जेसाराम उलझन में फंस गया। पंचायत ने टेकचन्द की बुद्धिमत्ता की सराहना की। जेसाराम निरुत्तर होकर विवाह में शामिल होना माना गया। उन दिनों में पाणिग्रहण से प्रायः आठ दिन पूर्व का जगन्त्रा होता था। काजगन्त्रा हो गया।

ब्राह्मण आता, नवग्रह पूजा करने। टेका कह देता, "पूजा अपनी आप करते रहो, मैं नहीं करूंगा," जब कहे **"पैसा रख दो"** तो पैसा रख देता। समय आ गया

टेका की पूजा आदि की उपेक्षावृत्ति

वधुपक्ष वाले बारात का खर्च तथा कष्ट सहन न करते थे, इसलिये लड़की वाला परिवार जतोई में विवाहार्थ आ गया।

जौलाई का मास था, गर्मी अधिक थी। बरात चढ़ी विवाह का समय आया। वधु पक्ष की ओर से चेलालाल ब्राह्मण वेदी पढ़ने वाला था। कार्यवाही आरम्भ हुई। उस ने ग्रह स्थापित किए और कहा, हाथ जोड़ो ! टेकचन्द ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "मुझे पहले समझा दीजिये, यह क्या देवता है? क्या इन का काम है? आपने बनाए और आप ने मिटा दिए, मैं इन के आगे कैसे हाथ जोड़ूं।

टेकचन्द के प्रश्नों का उत्तर तो न दे सकता था क्योंकि वह अपठित था। टेकचन्द के श्वशुर को सम्बोधन कर उच्च स्वर से कहने लगा, अब बोलो ! चौधरी साहिब! विवाह कैसे पढ़ूं। यह तो आर्य समाजी बन गया। हाथ नहीं जोड़ता तो क्रिया कैसे हो?'

टेकचन्द जी का श्वसुर चौधरी तेज़ाराम था तो अपठित पर बुद्धिमान् था। कहा, "मिसिर जी ! जामाता तो मेरा यही है, विवाह भी लड़की का इसी से होना है, आ भी गए हैं। अब तू हमारा पुरोहित है, कार्य निभाना बुद्धिमत्ता है,।"

टेकचन्द के बहनोई नेभाराम ने कहा "मिसिर जी ! अब वह युग तो रहा नहीं, हां अब तुम अपने पैसे लेते जाओ और आप ही पढ़ो, आप ही हाथ जोड़ो। मुख्य क्रिया तो पाणिग्रहण की है, उससे इन्कार नहीं। शेष तुम्हारी रोजी (जीवन निर्वाह) का है, उसमें अन्तर नहीं पड़ेगा। पढ़े लिखे लड़के को हम क्या समझाएं, कार्य निभाओ।"

मिसिर ने वैसा किया और विवाह पढ़ा गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेकचन्द जी आर्य समाजी थे, हाथ में आए शिकार को कैसे छोड़ते? कहा मिसिर जी ! विवाह तो पढ़ा गया, उसका अभिप्राय तो समझा दीजिये"। उसने कहा –

"अभिप्राय समझाने का यह समय नहीं होता"

वधु को लिटा दिया गया, रजाई से ढक दिया गया और टेकचन्द को कहा, इस के ऊपर चढ़ बैठो! विचित्र।

एक विचित्र क्रिया

अज्ञानता की पराकाष्ठा है। सख़्त गर्मी है, रज़ाई से ढक दो और ऊपर चढ़ बैठो जैसे अश्वादि पर सवारी की जाती है।

विवाह पूर्ण हुआ बहुत ही सादा और निर्धनों की भांति दोनों पक्षों का कार्य हो गया। डोली घर आई। पहले फेरे की रस्म प्रातः काल को हो गई। वधुपक्ष वाले अपने ग्राम को वापस चले गए। उस दिन टेकचन्द का स्कूल खुलना था। सीधा स्कूल चला गया। न वधु का मुखड़ा देखा, न कोई वार्तालाप की।

सब विद्यार्थी पहुँच चुके थे। कुछ दिन बीते ही थे कि

पढ़ाई बन्द

भगवानदास नागपाल अलीपुर शुमाली का जब आया तो उसने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा कि टेकचन्द ! तुम्हें छात्रवृत्ति नहीं मिली। एक मुसलमान को दी गई है।

यह सुनकर टेकचन्द जी ने आवेदन पत्र मुख्याध्यापक को दिया कि मैं निर्धन विद्यार्थी हूँ, छात्रवृत्ति की आशा पर दाखिल हुआ था, वह मुझे मिली नहीं, इसलिए मैं पढ़ाई का व्यय सहन नहीं कर सकूंगा, मुझे छुट्टी दी जाए। मेरा नाम स्कूल से तथा छात्रावास से खारिज कर दिया जाए।

अन्य अध्यापकों ने देखा कि बालक बड़ा चतुर व सुयोग्य है, छात्रवृत्ति न मिलने पर भी इस का स्कूल में पढ़ने का प्रबन्ध कर लेना चाहिए परन्तु मुख्याध्यापक के समझाने व सहमत हो जाने पर टेकचन्द का नाम स्कूल से खारिजकर दिया गया। पढ़ाई बन्द हो गई।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारहवाँ अध्याय

जीवन निर्वाह के साधनों की खोज

टेकचन्द वापस घर पहुँच गया, सब माता नानी, बहनोई आश्चर्यान्वित हो गए, कि यह क्या हो गया, अभी थोड़े दिन हुए जा रहा था, आज वापस आ गया है। ४०) रु० व्यर्थ में नष्ट किये। टेकचन्द के भावी ऋण के भय से स्कूल को छोड़ देने की युक्ति से कोई सन्तुष्ट न हुआ, अपितु किसी ने तो यहां तक कह दिया कि नई नई शादी है अब पढ़ाई कैसे करे? परन्तु वास्तविकता से यह बात कोसों दूर थी। मुख्याध्यापक की युक्तियों ने कि ६ वर्ष बी०ए० तक पहुँचने में लगेंगे और फिर Competition (मुकाबले) की परीक्षा में अपने आप सहस्त्रों रुपया खर्च हो जाएगा, ऋण से दब जाओगे। अभी से कोई नौकरी कर लो तो ऋण से भी मुक्ति और परेशानी दूर होगी। हमारे टेकचन्द के मन पर गहरा प्रभाव डाला हुआ था। अब कुछ भी हो, इस के लिए नौकरी की तलाश होने लगी।

ला० टाकणमल पहुजा दफ्तर कानूनगो था और उनका भाई ला० झांगीराम पटवारी था। बहनोई और नानी टेकचन्द को उन के घर ले गए और उनसे कहा कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस को नौकरी लगवा दें। तब बन्दोबस्त समाप्त हो चुकी थी, लेखन कार्य पूर्ण किया जा रहा था। उसने कहा कि अलीपुर आ जावे, हम कोई प्रबन्ध कर देंगे।

पहला प्रयत्न विफल

कुछ दिनों के बाद मोहत मम बन्दोबस्त पं० हरिकिशन कौल अलीपुर आ गए। टेकचन्द ने आवेदन पत्र दिया कि मैं अंग्रेजी मिडल पास हूँ मुझे उमीदवारान पटवार में दर्ज किया जाए और काम सीखने की आज्ञा दी जावे।

टेकचन्द जब आवेदन पत्र साहिब के पास ले गया तो वह बाटिका में कई एक भूमिपत्तियों के साथ टहल रहे थे। साहिब ने पत्र ले लिया, देखा नहीं कि कैसा प्रार्थना पत्र है। टेकचन्द ने कहा, "हजूर, (श्रीमान्) मैं उमीदवारी चाहता हूँ।

अफसर—कैसी उमीदवारी? कानूनगोई की?

टेका—नहीं हजूर, पटवार की?

अफसर—अच्छा प्राइमरी पास हो।

टेका—नहीं हजूर अंग्रेजी मिडल।

अफसर—अच्छा अंग्रेजी मिडल। आश्चर्य से।

आवेदन पत्र वापस देकर कहा कि देखो, प्रथम तो हमारे पास रिक्त स्थान नहीं है, और यदि स्थान मिल भी जाए और तुम्हें पटवारी बना दिया जाए, तुम कृश, सूक्ष्मकाय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो, सरकारी कागज़ात यदि कोई आप से छीन ले और थपड़ लगाए तो हम क्या करेंगे।

सब जिमिदार—नहीं हजूर, किसी की क्या शक्ति है जो ऐसा कर सके।

टेकचन्द के सूक्ष्म कार्य ने आफिसर पर कोई प्रभाव न डाला, पहला प्रयत्न विफल रहा।

इससे पूर्व की गाथा भी सुन लीजिये :—

मिडिल का अभी परिणाम न निकला था कि टेकचन्द के लिए चौधरी तुलाराम आदि जो शहर के प्रतिष्ठित सज्जन थे, परामर्श करने लगे कि किसी प्रकार से इस की नौकरी हो जाए। श्री डाक्टर देवराज जी Sub-Assistant Surgeon अस्पताल के अध्यक्ष थे, चौधरी साहिब के बड़े मित्र थे, आर्य समाजी भी थे। उन दिनों मिडल पास मैडिकल स्कूलों में प्रविष्ट किए जाते थे, डाक्टरों का प्रारंभिक वेतन २०) रु० मासिक था और अंग्रेजी में रजिस्टर रखने वालों को २५) रुपये मिलते थे।। कम्पौंडर को ८) रुपये। अधिकार बड़ा शुल्क स्वल्प परन्तु बरकत बड़ी थी।

डाक्टर साहिब ने परामर्श दिया कि मैडिकल स्कूल में प्रविष्ट हो जाओ, यदि कोई वैद्य यह लिख दे कि यह मेरा सम्बन्धी है तो सरकारी छात्र वृत्ति भी मिल जाएगी। परन्तु यह लिख देने पर कोई तैयार न हुआ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा प्रयत्न रेलवे की नौकरी के लिए किया, परन्तु वहां तो घूंस चलती थी, वह कैसे दे सकता? यह प्रयत्न भी असफल रहा।

मौलवी मुहम्मद बखश्बाकर पुराना अनुभवी आदमी था, तब वह प्राइमरी स्कूल जतोई का मुख्याध्यापक था।

आशा की झलक

उनके स्कूल में उपाध्यापक का स्थान रिक्त था। उन दिनों मिडल पास को ६) रु० नारमल पास को ८ रु० और एस०वी० को १२) रु० मिलते थे। टेकचन्द जी ने आवेदन पत्र लिख दिया और दूसरी तीसरी को पढ़ाने बैठ गया। चार पांच दिन ही पढ़ाया था कि सिंचाई विभाग की नौकरी का १०) रु० मासिक वेतन की आज्ञा हो गई। बन्दोबस्त विभाग तो समाप्त था। इससे पूर्व बेगार के द्वारा नालों की सफाई खुदाई होती थी अब विभाग ने आबियाना (जल कर) का प्रस्ताव कर दिया। पण्डित ननिराम साहिब Deputy Collector ने पटवारी माल की तरह सिंचाई पटवारी की सिफारिश कर दी। इस के लिए सिंचाई विभाग को माल के कागजात जमाबन्दी, गिरदावरी, खतूनी, शिज़रा आदि की प्रतिलिपि की आवश्यकता थी। उस के लिए लेखक चाहियें, टेकचन्द भी आवेदन पत्र दे आया था। चौथे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचवे रोज नियुक्ति का आर्डर आ गया। अब इधर स्कूल से मुक्ति करानी कठिन हो गई, परन्तु मौलवी सिराजुद्दीन जो भूतपूर्व मुख्याध्यापक रहे थे, उनके हस्ताक्षेप से छुट्टी मिल गई और टेकचन्द प्रातः अलीपुर पहुँचा।

अलीपुर में दीवान हशमतराय के मकान पर सिंचाई लेखक खतूनी आदि की प्रतिलिपि का काम कर रहे थे।

नौकरी मिल गई

टेकचन्द भी उनमें शामिल हो गया, उन के ऊपर मियां हफ़ीजुल्लाह विमुक्त कानूनगो था वयोवृद्ध कृश, परन्तु परिश्रमी था, सज्जन और हंसमुख था। वहां बहुत से लेखक थे। बाबा मक्खनसिंह, देवीदित्तामल आदि भी सब सिंचाई विभाग के मुहर्रिर (लेखक) थे। टेकचन्द भी उन से मिलकर काम करने लगा। उपस्थित हो जाने की सूचना दे दी और सब भोजन एक ही स्थान पर बनाते, ख़र्च सब का इकट्ठा था।

दिन भर काम करते रहते, पड़ताल मुकाबला भी करते रहते। दैनन्दिनी अपने कार्य की नियमानुकूल रखते। बड़े अच्छे दिन बीत गए। कई मास काम रहा।

शनिवार को टेकचन्द जतोई जाता और सोमवार को वापस आ जाता। अब १६०२ का वर्ष समाप्त होने को आया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात्रि के समय प्रतिदिन सायं को भोजन खा कर टोपणदास नासा के पास, कि जिनके प्रेम का पीछे वर्णन आ चुका है, चला जाता। बाजार वाले कूप के साथ चौधरी टाहलियाराम बत्रा का भवन था, उस का पुत्र मूलचन्द टोपणदास का सहपाठी था। उसे शैखफैजुलहसन पढ़ाते थे। टोपणदास को भी पढ़ाने को बुलाते, वह कभी जाता परन्तु उस का मन वहां न लगता। वह टोपणदास टेकचन्द से पढ़ता। रात्रि को भी पढ़ता और प्रातः को भी।

ला० प्यारालाल अर्जीनवीस का लड़का आसूलाल भी टेकचन्द के पास आने जाने और पढ़ने लगा। ट्यूशन का उन दिनों कोई रिवाज न था। दिन भर टेकचन्द नौकरी भुगतता और अवकाश समय उनको पढ़ाता।

परोपकार और सेवा का भाव बचपन से ही पनपता आ रहा था।

बन्दोबस्त होने को आई, सब कागजात संभाल कर दिये जाने लगे। काम घट जाने से कर्मचारी दूसरी बन्दोबस्त में जाने लगे और इधर से अधिकार के बल पर जाने लगे!

राजकीय प्रस्ताव यह था कि

पटवार में दाखला

बन्दोबस्त के अधिकारी–जिलाधीश, बन्दोबस्त के तहसीलदार अपनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी तहसील के राजस्व तहसीलदार बनाए जावें। जिन अधिकारियों के निरीक्षण में काम होता रहा है, वही उज़रदारियां आदि सुनें और उन का निर्णय दें। पटवारियों की नई **हल्काबन्दी** की जावे और अपने अपने मण्डल में काम संभालें। पहले मण्डल विस्तृत थे अब सीमित बनाए जाने लगे इसलिए पटवारियों की संख्या भी बढ़ानी आवश्यक हो गई। अतः यह निश्चय हुआ कि १६०६ में पटवार का स्कूल खोला जावे।

स्कूल की घोषणा भी हो गई और दाखले की परीक्षा के लिए तिथि भी निश्चित हो गई संभवतः जनवरी मास था।

राजस्व अधिकारी (अफसर माल) शैख मुहम्मद मुनीर साहिब के समक्ष आवेदन पत्र पेश होने थे। बहुत से लोगों ने प्रार्थना पत्र दिए। टेकचन्द ने भी दिया। प्राइमरी पास तथा मिडिल पास वालों के लिए आजीविका का द्वार खुल गया। निश्चित तिथि पर सब मुजफ्फरगढ़ पहुँच गए।

अफ़सरमाल ने एक एक को पृथक् पृथक् बुलाकर साधारण सी प्राइमरी के योग्य की परीक्षा ली और पटवार में दाखिल होने की आज्ञा दे दी।

अलीपुर का प्रथम Oriental Teacher ला० केसरदास जो कोट अद्दू का रहने वाला था, वह भी दाखिल होने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आया था। निवृत्त हो जाने पर टेकचन्द को कहा कि अलीपुर वापस चलना है।

टेकचन्द ने झट स्वीकृति दे दी, मास्टर जी ने कहा, पैदल चलें। ४) रु० किराया मेल कार्ट का कौन दे? अब तो वापस जाने का समय भी बहुत है, संभवत; टिकट न भी मिले। टेकचन्द ने कहा, बहुत अच्छा। मास्टर का वेतन १२) रु० था, टेकचन्द का १०)रु०। मास्टर ने कहा, "४) रु० बचाने हैं, खान्‌गढ़ चल कर भोजन करें, एक आना घी खा लेवेंगे, दो पैसे के तेल से मालिश कर लेवेंगे, एक आना का दूध भी लेवेंगे फिर ताजा होकर चल पड़ेगे। दो इकट्ठें चलेंगे, तो मार्ग में बातें करते भी चलेंगे और यात्रा का भी प्रतीत न होगा।"

परिश्रम की पराकाष्ठा

निश्चय हो गया। मास्टर आयु में बड़ा, बलिष्ठ, वज्र समान शरीर वाला था और फिर स्थाई सेवक था। घर से भी धनी था। उन की अपेक्षा टेकचन्द दुर्बल था परन्तु साहस कर लिया कि रुपये तो बच जाएंगे।

दोनों चल पड़े चाल में वेग गति थी। सांय को ११ मील तय करके खानगढ़ पहुंच गए। आराम से भोजन किया। मास्टर जी ने मालिश की, दूध पान किया। आधी रात तक विश्राम किया। चन्द्रोदय पर फिर चल पड़े, सूर्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी उदय नहीं हुआ था कि शहर मुलतान जो खानगढ़ से १६ मील दूर था, जा पहुँचे। थकान तो बहुत प्रतीत न होती थी परन्तु माघ मास था, अधिक शीत के कारण हस्त पाद ठिठरने लगे, शहर के बाहर एक मील पर आग जलाई कि बैठ कर तापने लगे, सूर्य उदय हो गया। जाड़ा तो शरीर से दूर हो गया परन्तु बैठ जाने से शरीर काष्ठ समान हो गया अब उठा न जाए। एक दूसरे को साहस बन्धा उठे और चल पड़े परन्तु अब गति मन्द मुरदों जैसी हो गई। अलीपुर वहां से १३ मील था। मध्याह्न पश्चात लुढ़कते लुढ़कते पहुँच गए और अपने अपने स्थान पर लेट गए और प्रभु का धन्यवाद किया। रुपये चार भी बच गए और कुल उमीदवारों से पहले पहुँच गए क्योंकि मेल कार्ट तो प्रातः को चलता था और ५० मील की दूरी थी। परिश्रम की इयत्ता थी यह !!

टेकचन्द प्रातः दूसरे दिन अपनी नौकरी पर उपस्थित हो काम करने लग पड़ा, ईश्वर की कृपा से अच्छे दिन बीत गए। ४०) रु० ऋण भी उतार दिया और पटवार स्कूल के लिए भी थोड़ा बहुत बना भी लिया।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारहवाँ अध्याय

पटवार में दाखल होने की सूचना सब को मिल गई। अप्रैल १६०६ से स्कूल खुलना था। ठीक तिथि पर श्री टेकचन्द जी मुजफ्फरगढ़ पहुँच गये।

पटवार की शिक्षा

पंडित गंगाराम जिला ओवरसियर के सामने एक बड़ी कोठी थी जिसके चारों ओर कमरे, बरामदे और मध्य में एक अच्छा भवन था, वहां स्कूल लगा। ला० लछमणदास कानूनगो मुख्याध्यापक और ला० दूलाराम उपाध्यापक नियत हुए। ला० दूलाराम साहिब ने पाचक रखा हुआ था, कई लड़के तो इन के साथ खान पान में शामिल हो गए। कई अपना पकाते थे। कई गहणा नाम के रसोइया की दुकान से खाते थे। गहणा प्रसिद्ध कुशल पाचक था। बड़ा धर्मात्मा, विश्वास पात्र, शुद्ध पवित्र और सस्ता भोजन देने वाला था। बारी बारी पर सब को देता किसी का पक्षपात न करता। सैंकड़ों आदमी एक समय भोजन करने वाले होते, सबको बिना विलम्ब भुगता देता। भोजन तैय्यार करने में अति प्रवीण था। स्थाई ग्राहक से दो रुपया मासिक, घृतयुक्त लेने वाले से तीन रुपये मासिक लेता था। बहुत से लड़के

पटवार स्कूल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थाई ग्राहक बन गये, टेकचन्द भी स्थाई बन गया।

खूब परिश्रम होने लगा। विद्यार्थियों के गुट बन गए। जैसा जिस का मेल बिना, वैसे वह उस गुट में शामिल हो गया। टेकचन्द के प्राइमरी, तथा मिडल समय के कई सहपाठी थे और भी कई थे जब वायु सेवन को चलते तो टेकचन्द थोड़ा एक पग ढीला होकर चलता। बाकी लड़के तो गप्पें हांकते, यह अपने मन में। **"क्वायद पटवारियान"** को प्रारंभ से दोहराता और यदि कुछ बच जाती तो शौच के समय बैठे दोहरा लेता। मिडल में भी उस का यही स्वभाव रहा था। लड़कों से बहुत पीछे न रहता कि उसे बुलाने की आवश्यकता पड़ती। लड़कों को पता भी न चलता कि क्यों पीछे जरा ढीला सा चल रहा है।

पटवार विद्यालय काल

रात्रि को जब लड़के एक समूह बना कर बैठ जाते तो टेकचन्द सब से सम्बोधन करके कहता कि "यदि क्वायद पटवारियान" दोहराना है तो मेरी शर्त सुन लो, आओ! बैठ जाओ। एक लड़का पुस्तक हाथ में ले बैठे, मैं सुनाता हूं यदि उस 'में', 'से' इस प्रकार की किसी मात्रा का भी अन्तर पड़ जाए तो कहना।" टेकचन्द को तो ऐसे याद था जैसे वाराणसी के पण्डित वेद को कण्ठस्थ रखते हैं। लड़के सुन कर दंग रह जाते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणित साधारण था। कठिन कार्य था **"पैमायश किस्तवार** का। नाला तिलेहरी के पास मौज़ा तिलेहरी था, वहां सब लड़के जाते और **'मुरब्बा बन्दी'** करते। शिजरा खाता किश्तवार बनाते और दूसरे की सहायता से **मसावी** तैयार करते। **खतुनी** आदि सब कार्य जो पटवारी के होते हैं, सब सीखते सिखाते, तैय्यार करते।

गर्मी के दिनों में जब सख्त ऋतु होती, जरीब खींचने में पसीना पसीना हो जाते। वहां पास ही ओडों की बस्ती थी जिनको पण्डित गंगाराम जी ने शुद्ध करके आर्य बनाया था। पुरुषों की वेशभूषा में परिवर्तन हो गया था परन्तु स्त्रियां वही पुराने घाघरे आदि पहनती घर में सफाई रखती। टेकचन्द तो आर्य समाजी था। यह तो जा कर उनसे लस्सी (तक्र) ले कर पी लेता, श्रद्धा से बिठाते। परन्तु कई लड़के घृणा करते।

कागजी काम तो टेकचन्द बड़ी चतुराई और समझ से कर लेता परन्तु पैमायश का शिजरा बनाना उसे कठिन प्रतीत होता।

अवकाश के दिनों में समीप वाले विद्यार्थी तो अपने घरों को चले जाते परन्तु टेकचन्द का घर तो बहुत दूर था, इसलिए एक दो बा़र ही उसे घर जाने का अवसर मिला वह भी पैदल। कितना साहस और वीरता इस आयु में !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटवार परीक्षा उत्तीर्ण

उर्दू के कवि ने कहा हैः–

सुबह होती है शाम होती है।
उमर यों ही तमाम होती है।।

दिन बीतते गए, परीक्षा के दिन आ गए। परीक्षा लेने वाले थे दो सज्जन एक मौलवी मुहंम्मद शरीफ सीतापुर निवासी–सदर कानूनगो–सार्थक नाम–सज्जन पुरुष जो भी उम्मीदवार उसके पास गया, पास हो गया। दूसरे थे मुजफ्फरगढ़ के तहसीलदार लाला राम रंग जी–जो बड़े सख्त परीक्षक थे। पैमाइश की परीक्षा दोनों ने इकट्ठी लेनी थी।

लड़के बहुत थे, उनकी बांट होने लगी। सब की हो गई। अन्तिम दिवस दो लड़के बच गए, कंबलाराम और हमारे टेकचन्द जी। कंबलाराम सीतापुर के साहुकार का लड़का था। टेकचन्द बे वसिला। कंबलाराम की परीक्षा तो मोलवी साहिब के जिम्मे लगाई गई और टेकचन्द की तहसीलदार साहिब के जिम्मे। बहुत से लड़कों ने अध्यापक महोदय को कहा कि टेकचन्द का नाम बदल दें परन्तु स्वीकृति न हुई। टेकचन्द को पैमायश का भय था ही। अच्छा ! प्रभु रक्षक ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांय को परीक्षा के मैदान में गए, जरेब कशी के साथी टेकचन्द को उत्तमचन्द, अह्मदबखश और करीमबखश दिए गए। टेकचन्द ने क्रास (Cross) से शिस्त लगाकर झंड़ियां गाड़ दीं। तहसीलदार साहिब ने टेकचन्द के अतिरिक्त अन्य विद्यार्थियों की परीक्षा भी लेनी थी। टेकचन्द को तहसीलदार साहिब के आतंक का भय था परन्तु जब वह शिस्त के बाद अपनी मसावी पर पैन्सिल लगाने लगा, तहसीलदार साहिब आगे चल पड़े। साथ के कर्मचारी चतुर थे, समझा यह लड़का भी होशियार होगा। जिसके साथी इतने योग्य हैं, वह भी योग्य होगा। परमेश्वर ने लाज रखी। झट साथी आए और ध्यानपूर्वक देखने लगे, अत्युत्तम चित्र (खाका) बनवा दिया। **बस फिर निर्बल का बल सांई।** तहसीलदार साहिब वापस आए, देख कर खुश हो गए, अंक लगा दिया कहा **'पास** (उत्तीर्ण) सब परीक्षाएं समाप्त हो गई और सारा स्कूल सहसा रिक्त हो गया—एक भी व्यक्ति नाम को न रहा।

टेकचन्द पटवार परीक्षा में पास हो गया और यहां बालकाल भी समाप्त ही समझिए।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेहरवां अध्याय

कुछ माता व नानी के सम्बन्ध में

प्रिय पाठक ! यह जीवन चरित्र अधूरा रह जाता यदि हमारे वीर बालक टेकचन्द जी के जीवन पर जो संस्कार प्रथम गुरु माता और नानी के पड़े, उनका कुछ विस्तृत तथा रोचक परिचय न दिया जाए और सबसे उत्तम वर्णन वही है जो इन्होंने स्वयं अपने शब्दों में दिया है अतः उनके ही सौजन्य से "निराकार साकार पूजा" नामी पुस्तक से उदृधुत करता हूँ।

धारणा

"मेरी माता तथा नानी ने हमारे पालने के लिए कठोर तपस्याएं, परिश्रम तथा यातनाएं सहीं। समय समय स्वयं तो भूखी रहीं परन्तु हम बालकों को ज्ञान तक न होने दिया और यह उनकी धारणा थी कि भूखी रहेंगी, जल पीकर भगवान का धन्यवाद कर देंगी परन्तु एक दमड़ी भी ऋण नहीं उठाएंगी ताकि कहीं ऐसा न हो कि हम मर जावें और ऋण उन अनाथ बच्चों पर रह जावे।

एक बार शैशवकाल में अभी मेरी आयु ४–५ अथवा ६ वर्ष की होगी! मैं और मेरा छोटा भाई मां के साथ ही दाएं बाएं सोते थे। प्रातः काल मेरी इन्द्रिय में मां ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तेजना देखी और कड़वी आंख करके मुझे धमकाया और उठ कर द्वार को बाहर से बन्द कर दिया और मुझे बन्दी बना दिया। मैं चिल्लाया, मां ने अति कठोर बनकर जब मुझे अति व्याकुल पाया तो द्वार खोला और कहा कि नाक से लकीरें निकाले। मुझे आज की तरह वह दिन बचपन का प्रत्यक्ष होता है। बड़ा होने पर मेरी आंख सदा इतनी नीचे रहा करती कि मैं अपनी गली मुहल्ला की देवियों को नहीं पहिचानता था! मेरी दृष्टि ही कहीं पर न पड़ती सदा नीचे रहती।

ताड़ना

मेरी मां नानी बड़ी दयालु थीं परन्तु हमको शिक्षा रीति से देती थीं कि मुझे स्मरण नहीं पड़ता कि मैंने कभी सुन्धड़े (चपातियों का पात्र) से चपाती आप निकाली हो अथवा किसी खाने की वस्तु को आप उठा कर लिया हो। दयालु इतनी कि अपना पेट काट कर हमारे लिये छिपा सुरक्षित रखतीं और शिक्षा ऐसे प्रेम से देती कि हम उच्छृङ्खल होकर किसी वस्तु का दुरूपयोग न कर पाते। गली अथवा मार्ग में पड़ी हुई वस्तु को हमें स्पर्श न करने देती। एक बार खेलते खेलते गली से अथवा कहीं से लोहे का टुकड़ा व्यर्थ पड़ा मैंने उठा लिया। घर आया मां ने देखा, कहा कि यह कहां से लाये हो। मैंने कहा गली में पड़ा था तो

शिक्षा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझाया कि वहीं ही जा कर फैंक आओ। लोहा किसी का नहीं उठाना चाहिये। लोहा काला होता है, यह मुँह काला कर देता है।

पतन कैसे होता है?

गिरी हुई वस्तु को उठा लेना मनुष्य का पतन कर देता है। उस समय तो इतनी समझ नहीं थी, परन्तु आज्ञा पालन करने की प्रभु ने शैशव काल से ही दात प्रदान की हुई थी। आज कुछ 'गिरे' शब्द का रहस्य प्रतीत होता है। मनुष्य का पतन कैसे होता है तभी तो शास्त्रकारों ने कहाः—

मातृवत् परदारेषु पर इव्येषु लोष्टवत्।।

पालने की युक्ति

बच्चों को निर्धन तथा धनवान होने का क्या ज्ञान। मां को तो अपनी दरिद्रता का भी ज्ञान था और अमीरी का भी भान था। धनी हृदय पति की स्त्री थी जो शरद ऋतु में प्रतिदिन पुरानी खांसी के कारण मालपुवे बनवा कर खाता और बच्चों को खिलाता था। घर में गौ, भैंस का दुग्ध, घृत, माखन पुष्कल मात्रा में प्रभु कृपा से वर्त्तमान था। जब निर्धनता का समय आया, हम अनाथ हो गये। मां विधवा बन गई तो सर्दी के दिनों में हमें बिठा कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहती 'आज मैं तुम्हें बड़े–बड़े मालपुवे बना कर खिलाऊंगी। जो चपाती के बराबर होंगे। खूब तृप्त होकर खाना। वह गुड़ के चीले बना कर हमें खिलातीं, हम बड़े प्रसन्न होते।

कभी दिन की सब्जी नहीं बची और ४ बजे सांय मध्याह्न पश्चात् हम ने रोटी मांगी तो कहती 'आज तुम को नई वस्तु से रोटी खिलाऊंगी। कटोरी में जल डाल कर लवण मिरच घोल देती और कहती इससे बोड़–बोड़ लगा कर खाओ, बड़ा स्वाद आता है। कभी रोटी को घृत से चुपड़ कर लवण मिरच लगा कर दोहरां कर देती और कहती चके चके=(दांतों से तोड़–तोड़ खाओ)। भगवान ने मुझे बड़ा सरल स्वभाव और भोली–भाली बुद्धि का बनाया था और मुझे बड़ा स्वाद प्रतीत होता, अब तक भी याद रखता हूँ, मां की सादाजीवन बनाने वाली युक्तियों को।

मितव्ययिता

भगवान ने जहां निर्धनता दी थी वहां मेरी मां को मितव्ययिता और प्रज्ञा भी प्रदान की थी। पड़ोसिन ब्राह्मणी के शहर में बहुत यजमान थे और उसके अपने खाने वाले न थे, उस युग में गौ ब्राह्मण के लिये माताएं हंदे (चपातियां जो दान में दी जाएं) बड़ी श्रद्धा से अच्छे बनाकर रखती थीं। सर्व प्रथम गौ ब्राह्मण के लिये बनाती और तत्पश्चात्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बच्चों या घर वालों को बना कर परोसती। उसके पास बहुत से हंदे हो जाते बाहर के परदेशी श्रमी काम करने वाले भी उन ब्राह्मणों से रोटियां दो पैसे प्रति सेर के भाव से तोल कर ले जाते और अपना निर्वाह करते थे। शहर में कोई पाचक अथवा सराय न थी। धर्मशालाएं जहां गुरू ग्रन्थ साहिब रखा जाता था, होती थीं। यात्री वहां आकर ठहरते और रोटियां ब्राह्मणों से मोल लेकर निर्वाह करते थे। मेरी मां भी अपना समय और पैसा बचाने के लिए बच्चों के घर में आने से पूर्व दो पैसे के सेर भर फुलके लेकर अपना सुन्धड़ा भर रखती। लकड़ी, घी और समय सब बच जाते और सब्जी एक अंगीठी पर पकाती जिस में कोयला और उपले डाल कर अपने काम में लग जाती। सब्जी तैयार होने तक आप छापाकल्ली का करती रहती। यह दुपट्टे नव विवाहित देवियों के लिये बनाये जाते थे, सर्वसाधारण के लिए नहीं।

यह उद्योग सब देवियां नहीं कर सकती थीं, कोई कोई इससे परिचित थी।

चक्की पीसने की मजदूरी एक टोपा पांच सेर गेहूँ दानों की केवल दो पैसे मिलती थी और रात्रि के तीन बजे से प्रातः छः बजे तक पीसते रहने पर दो पैसे का काम होता था। एक दुपट्टा, छापे की मजदूरी चार आने थी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो बहुत पर्याप्त समझी जाती थी। सर्दी के दिनों में मेरी मां आधी रात तक बराबर छापती रहती थी। शायद एक दुपट्टा दो दिन में पूरा होता था।

मेरी नानी भी चक्की पीस कर दो पैसे कमाती थी चक्की पीसने के बाद मेरी नानी गौओं के बाड़े से जहां शहर की गौएं चरने के लिए एक ग्वाले के पास जमा होती थी, उस बाड़े से अन्य गरीब तथा अमीर देवियां गोबर इकट्ठा कर के ले जातीं और घर में उपले बनाती थी, उपले इकट्ठा कर लाती, यदि वहां से गोबर कम प्राप्त होता तो वह सड़क, पर गौवों के गुजरने के स्थान पर से मार्ग में जो गोबर गौवें करती, वह जमा कर लाती और अवकाश मिलने पर दोनों पुत्री और माता थाप लेतीं, इससे लकड़ी मोल न लेनी पड़ती। फिर मेरी नानी अपनी बहिन के घर से जो जमींदार थे, लस्सी हमारे पीने के लिए ले आती।

शरद ऋतु में वह सायंकाल तक कपास का वेलना बेलती, इस प्रकार कुछ मजदूरी मिल जाती।

कई वर्षों के बाद मुसलमान छापागर पंजाब से आए और वह ठप्पा (सांचा) से कई प्रकार के नमूने कपड़ों पर छापने लगे। लोगों की, स्त्रियों की रुचि नवीन वस्तु में हो गई और वह कल्ली का छापा बन्द हो गया। तब शरद्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतु में मेरी माता और नानी दोनों इकट्ठी बेलना मजदूरी पर बेलती। मेरी एक बड़ी बहिन थी और एक छोटा भाई था। बाजार में पैसा खर्च करने और पकौड़े लेने को मन सब बच्चों को चाहता है, हम भी मां अथवा नानी से पैसा मांगते और वे बेचारी इतनी मित व्ययिता और बुद्धिमत्ता से परिश्रम करके निर्वाह चलातीं। हम बच्चों को न दें तो भी उनको करूणा आए और देवें तो प्रतिदिन कैसे देंवे, कहां से देंवे। उन दिनों एक चौथाई पैसा (अर्थात् एक कसीरे के बड़े बड़े चार पकोड़े मिल जाते थे) मुझे एक कसीरा देतीं एक कसीरा १६ कौड़ियों का होता था), मैं ४ पकोड़े ले आता तो मां कहती एक एक बांट लो। बच्चे भला एक पकोड़े पर कैसे सन्तुष्ट हों तो मां बड़े प्रेम से खाना ख़िलाती कि मध्यान्ह पश्चात एक फुलका एक पकोड़े से कैसे खाया जाता है। सबसे उत्तम बात यह रही कि भगवान की दया का मंगल और भाग्य पूर्ण हाथ मेरी मां और नानी के सिर पर था। वह ज़ब भी हमें समझाती, बड़े प्यार से, युक्ति से और स्वयं आचरण करके दिखा देती। भावना उन की सन्तान पालने के लिये बहुत पवित्र और विचार धार्मिक थे। उनके आशीर्वाद से हम बच्चों को भी सन्तोष बना रहता, नहीं तो वे बालक जिन पर पिता की छत्र छाया नहीं रहती, अनाथ हो जाते हैं, वे माता की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज्ञा नहीं मानते और माता को अत्यन्त दुःखी करते हैं। माताएं बेचारी पुत्रों की बातों को सदा सहन करके अपना समय बिताती, उनको पाल पोस बड़ा कर देती हैं।

त्रटि चौड़ पुत्र

मेरी बहिन की और मेरी सगाई भी हो गई। अब मां नानी को चिन्ता पड़ गई कि लेन देन की लोक मर्यादा भी बढ़ जावेगी। विवाह भी एक दिन होना है। हम विधवाएं क्या कमा के जमा कर लेंगी। तो एक दिन माता ने मुझे कहा अब गरमी की ऋतु है। लोग दुकानदार दोपहर को सो जाते हैं और उठने (जागने) पर वे जल पिया करते हैं तुम को मैं चने का ख़ोंचा बना दिया करूं। तुम पाठशाला से जब आते हो, भोजन खा कर थोड़ा विश्राम कर लिया करो और मैं रात्रि को चने भिगो दिया करूंगी और मध्याहन् पश्चात् चने चढ़ा कर तुम्हें खोंचा बना दूं, तुम बाजार में जाकर बेच आया करो। एक घंटा लगेगा। आना दो आना प्रतिदिन कमा लिया करोगे फिर तुम बहिन भाई अपनी इच्छानुकूल जो वस्तु चाहो बाजार से सुगमता से ले सकोगे। मैं खुश हो गया।

मां ने तकड़ी व तराजू बनाया। पलड़े खजूर के पत्तों के बुन कर बना दिये क्योंकि बाजार से तुलावड़े मोल लेने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तो शक्ति न थी और बट्टे भी तोल के ईंट के बना दिये क्योंकि बनाने तो छटांक आध पाव के थे और फिर मुझे सिखा दिया कि देखो तराजू की नाभि में जब ये दोनों पलड़े बराबर हों तो एक में चने और दूसरे में बट्टा तो तब यह तोल पूरा समझा जाता है। मैंने खोंचे का श्री गणेश किया। बाजार में गया। लोग नींद से जाग रहे थे। मुझे होका (घोषणा) देने की विधि तो आती न थी परन्तु जब दुकानदारों ने देखा कि खोंचा उठाए हुए है तो मुझे बुलाया तो किसी ने कहा, एक कसीरे के दो, किसी ने कहा एक अधेले के दो तो पहिले ही दिन बाजार वाले कुआं के पास दुकानदार थे, एक ही दुकान पर एकत्र हो कर लेने लगे। मैंने तकड़ी उठाई और वे लोग अपनी इच्छा से अपने हाथ से चने उठा कर पलड़े में डालने लगे। उन्होंने बहुत उठाए और पलड़ा भारी हो गया, नीचे चला गया और मुझे उसे पूरा करने की समझ न आई तो उन में से एक दुकानदार ने कहा अंगुली चने वाले पलड़े के लिए तराजू की नाभि के पास रखो ! अब मैंने ऐसा किया तो बट्टे वाला पलड़ा भारी हो गया, कहा देखो और चने डालो तो मैं चने डालता और अंगुली को जोर से दबा कर बट्टे वाला पलड़ा भारी होता गया। वे सब हंसने लगे और अन्ततः एक ने कहा–बाबा ! गरीब अनाथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़का है, चलो, तुम कम ही ले लो, पलड़ा इस से पूरा नहीं होता। तो उस दिन सब ने ऐसे मुझ से ले लिये और मैं तुरन्त थोड़ी देर में ही निवृत्त होकर प्रसन्न होता घर आ गया। मां को पैसे दिये तो माता चकित हो गई और कहा कि तुम तो बहुत घाटा कर आए पहले दिन परन्तु वह मेरे भोले भाले स्वभाव पर दया से ही बोलती रही। मूल भी वसूल न हुआ। दूसरे दिन गया तो भी उसी दुकानदार ने बुलाया फिर सब जमा हो गए तब भी वही हाल किया। मां को जब जाकर पैसे दिये तो मां पुनः चकित। कई दिन तक यही अवस्था रही। मां सोचने लगी, "त्रटी चौड़ कबीर दी जाया पुत्र कमाल"—यह त्रटी चौड़ पुत्र टेक। इतना भोला भाला साधु स्वभाव है। कैसे कमाएगा, कैसे अपनी और परिवार की पालना करेगा।

सरल स्वभाव को लूटने का फल

मुझे पूछा कैसा तोलता है? मैंने तोल कर दिखाया, तो कहा, हाय ! तुझे तो तोलने की जांच भी नहीं तुम तो कहते हो कि वह अनाथ जानकर दया करते हैं और कहते अच्छा कोई बात नहीं तुम से तुलवाड़ा पूरा नहीं हो सकता तो हम ही कम ले लेते हैं। ये तो अत्याचारी एक अनजान अनाथ बालक से ही छल कपट करके लूटते हैं। कितने दिन हो गए। मैं विधवा निर्धन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना पुरुषार्थ करती हूं, अपना पेट काट कर चने मोल लिये और वे मेरे परिश्रम पर डाका मारते हैं। मेरी मां रो पड़ी और मैं भी रोने लग पड़ा, अब माता बेचारी को मुझे चुप कराना पड़ गया और मुझे कहा कि अब उनके पास बेचने न जाना और मुझे चने चढ़ा कर तकड़ी में डाल कर पूरा तोल करना सिखा दिया कि अंगुली न इधर रखो न उधर, वह तो अलग रहनी चाहिए। हे भगवान् ! मेरे अनाथ भोले भाले बच्चे को बुद्धि दो! मैं अपना पेट काटती हूँ, छोटे कोमल बच्चे को धूप में गर्मी में खोंचा सिंर पर उठवाती हूँ। लोगों के बच्चे इस समय आराम करते सो रहे होते हैं और इस बेचारे से श्रम कराती हूँ। अभी फिर पाठशाला में पढ़ने जावेगा, प्रभो! मेरी लाज रखो! और फिर रो पड़ी। रोना उसका बन्द ही न हो। मुझ से नाम पूछा, कौन ऐसा करते हैं। मैंने कहा, मुझे तो नाम किसी का नहीं आता। बाजार वाले कूप के साथ बैठते हैं। मां ने कभी घर से बाहर बाजार का क्या? दूसरी किसी गली का मुंह न देखा था।

भगवान की लीला

यह घटना सन् १८६५ ई० की है परन्तु सत्य कहा है :–

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीब को मत सता जालिम गरीब रो देगा।
सुनेगा उस का मालिक तो जड़ से खोदेगा।।

१६१८ में ठीक वही घटना उन व्यक्तियों की मेरी आंखों के सामने घटी। बड़ी मान प्रतिष्ठा, सम्पत्तिशाली थे, १६१८ में उनकी ऐसी दशा हो गई कि दिवाला निकालना पड़ा, मकान दुकान नीलाम हो गए। जन्मभूमि का परित्याग कर रियासत को भाग गए। जा कर वहां मजदूरी की और परिवार परेशान हो गया। व्यापार की जिन्स मुझे भी अदा न कर सके। मेरे पास आभूषण लाये। मैंने कहा किसी और स्थान पर कार्य करो मुझे (मेरी फर्म को) फिर दे देना। मुझे जब यह दृश्य स्मरण हो आता है तो मैं कहता हूं प्रभो ! ऐसे पाप अनर्थ से सब मनुष्यों को बचाओ।

फिर मैं प्रतिदिन एक आना, दो आना, तीन आना तक कमा लाता। ज्यों ज्यों मैं बड़ा होता गया, चने का खोंचा मां बढ़ाती गई और रविवार अवकाश होता था। प्रातः और मध्याह्न पश्चात दो बार खोंचा तैयार कर देती।

माता की उदारता गम्भीरता

मैं प्राइमरी पास करके जब अंग्रेजी मिडल स्कूल अलीपुर में जूनियर स्पेशल में प्रविष्ट हुआ तो हर शनिवार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात्रि को घर आता, रविवार प्रातः मेरी माता मुझे वहीं खोंचा बना देती और मध्यान्ह पश्चात् भी। मैं १० वर्ष का बालक था। पैदल १० मील चल कर आता, रात्रि को माता मेरी पिण्डलियों की तेल से खूब मालिश करती और कहती कि तू थका हुआ आया है। चने नहीं भिगोती; परन्तु मैं कहता, नहीं मां ! मैं प्रति शनिवार आता ही इसीलिए हूँ। छः मास निरन्तर ऐसा करता रहा।

धर्म संस्कार

जब मां नानी रात्रि के समय कथा सुनने जातीं तो हम बच्चों को भी साथ ले जाती। भाव उन का यह होता था यदि बालकों को घर पर अकेला छोड़ जावें तो वे भय खाएंगे अथवा हम को जाने नहीं देंगे, हम सत्संग से वंचित रहेंगी और साथ ले जावेंगी तो चाहे वहां सो जावंगे, कथा प्रसंग का भी उन को ज्ञान नहीं होगा परन्तु सत्संग के संस्कार तो पड़ जावेंगे। मार्ग में घर से लेकर कथा भवन तक कई देवालय स्थान आते थे। उस युग में ब्राह्मणों के घर में एक कमरा मूर्ति के लिए रखा होता था। कोई चिन्ह मन्दिर का बाहर न होता था। ब्राह्मण निर्धन होते थे। लोग भी निर्धन थे इसलिये ऐसे ही गुजारा करते थे परन्तु मार्ग में अपने मकान की दीवाल में एक आला बना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते थे जिन में सांय को जोत रख देते थे। तो मेरी मां नानी उस जोत स्थान पर माथा टेकती और हम से भी टिकवाती थीं और यह कहती कि ज्योति है इसे माथा टेकना चाहिये। अब समझ आ रही है कि देव मन्दिर जहां ज्ञान की ज्योति का दीपक जलता है वह स्थान सत्कार सन्मान के योग्य हैं, जनता को मार्ग प्रदर्शित होता है।

अमावस्या के बाद जब चन्द्र उदय होता, प्रति मास पर चन्द्र रात की सांय को हमें कहतीं कि जाओ ! अपनी गली मुहल्ला की सब माताओं और पुरुषों को चरण स्पर्श कर के राम राम कर आओ। जब मैं जाता तो माताएं मेरे चरण स्पर्श करने पर बड़ी उदारता से आशीर्वाद देतीं और हाथ फेरतीं।

जब मैं बच्चों में खेलने जाता तो कभी किसी ने मुझे पीटा या अपशब्द कहे तो मैं रोता हुआ मां के पास आता। मेरे चाचा यदि विद्यमान होते तो कहते वाह ! वाह ! वाह तुम तो गाडी पुत्र हो, गाडी पुत्र तो बड़े वीर होते हैं किसी से पीटे नहीं जाते। देखो। हम कैसे वीर शेर जवान हैं। ऐसे रूं रूं करते मां के पास दौड़े आते हो। जो एक लगावे उसे दो लगाया करो। (वीर) बनो। बाद में मुझे मां सिखाती पुत्र। खेलने में ऐसा हुआ करता है कभी तुमने पीटा कभी उसने पीटा परन्तु अपशब्द किसी को न दिया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना। माता बहिन सब की एक जैसी होती हैं, माता बहिन की गाली तुम कभी किसी को न दिया करना। तुम को पीटते हैं तुम से अधिक बलवान और बड़ी आयु के हैं तो उनसे खेलना छोड़ दो। घर में दोनों भाई खेला करो और समझाया करती जब किसी सहपाठी के घर जाओ, वे कोई चीज खाने लगें अथवा खा रहे हों तो तुरन्त वापस लौट आया करो। किसी को खाता देख कर पास खड़े मत रहना।

हाथ मत पसारो

अपने घर में भी कोई आए तुम को बच्चा जान पैसा अथवा कोई वस्तु दे उस के आगे हाथ मत पसारो। माता नानी की आज्ञा के बिना अपने आप मत लो। हां यदि तुम्हारे मामा (मेरी मां के मामा) आते हैं उनसे निसंकोच ले लिया करो "परन्तु मांगना कभी नहीं।"

माता की शिक्षा का इतना बड़ा प्रताप था कि जब मैं बहुत अच्छी कमाई वाला भी हो गया और कभी मुझे पिछले पहर भूख लगती और मैं घर जाता, मुहल्ला की देवियां गली में चरखा कात रही होती, मैं आंख नीचे किए घर के अन्दर चला जाता। थोड़ी देर प्रतीक्षा करता, जब मेरी माता अथवा मेरी स्त्री में से कोई न आता तो मैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वापस ही चला जाता। परंन्तु कोई वस्तु अथवा रोटी अपने आप न उठाता। कभी उन को मेरे भीतर जाने का भान नहीं रहा अथवा यह जानकर कि अपनी दुकान की कोई वस्तु थैली आदि उठाने आया होगा, भीतर न आती, रात्रि को जब पूछती और मैं भूख लगने की कहता तब उन्हें पश्चाताप होता और मेरी मां कहती अपने घर से भी भला पूछने की आवश्यकता होती है? तो कह देता घर में अधिकार देवियों माताओं का होता है दुकान पर पुरुषों का। मैं ऐसी सावधानी न करूं तो बच्चे कैसे सीखेंगे?

माता की इस शिक्षा का प्रताप इतना बढ़ा कि जब मैं वानप्रस्थी हो गया, मेरा संसर्ग आम हो गया। टोबा टेकसिंह में आश्रम बना। यज्ञों में स्त्री पुरुष बड़ी संख्या में आते तो स्वयं भी यही अभ्यास करता रहता था और अपने साधकों व्रतियों को भी यही कहता कि जब किसी देवी पर तुम्हारी दृष्टि पड़े अथवा कोई देवी तुम्हारे सामने आए तुम उस पर अपनी माता की छाप लगा लो और अपनी त्रिकुटि स्थान पर ऐसा अभ्यास हर समय करो कि मां के बाह्य स्वरूप का आकार बना रहे और अभ्यास ऐसा परिपक्व हो जाए कि किसी भी देवी पर दृष्टि पड़ते ही वह मां का रूप प्रतीत हो। मां के आकार की

माता के रूप की छाप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाप उस देवी के मुख पर बन जाए।

मेरी माता में धैर्य और सन्तोष का अथाह गुण था।

कुछ अमूल्य बातें

मैं अपनी माता की वे नित्य प्रति की बातें लिखता हूँ जिस से सर्व साधारण जनता देवियों को लाभ पहुंचे यदि कोई आचरण में लावे तो। आधुनिक युग पुरानी माताओं के अनुभवों को तो मानता नहीं, परन्तु स्यात किसी के भाग्य उदय भी हो जावें:—

चार बातें नित्य प्रति वह अपनी वाणी पर लाती थी:—

क) प्रातः जागते ही भगवान को नमस्कार करके अपने हाथ की हथेलियों को चूमती और परमात्मा से प्रार्थना करती कि मेरे हाथों में बरकत दे, किसी के आगे यह हाथ न पसारूं।

ख) दोपहर के समय भोजन सामने रखते विष्णु भगवान का नाम मन मन में लेकर हाथ जोड़ नमस्कार कर देती (न जाने मन में क्या क्या प्रार्थना करती) और भोजन कर चुकने पर हाथ जोड़ कर यह शब्द कहती :—

डेंदा पलेंदा जीवें (अर्थात् मेरा दाता, पालन करता जीता रहे)।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग) रात्रि को सोते समय दो प्रकार के शब्द बोल कर सोती :–

१) प्रार्थना रूप में–भले का भला, बुरे का भी भला।

२) हकों रखीं नाहकों रखीं अर्थात् हक नाहक से रक्षा करो।

घ) नयन प्राण कायम रखीं, हलदा चलदा टोरीं, किसी का मोहताज न करीं। जुल्म ज़ारी कनों बचावीं, हाकिम दी कचहरी कनों बचावीं।

अर्थात् मृत्यु समय तक दृष्टि तथा श्वास गति ठीक रहे, शरीर में शक्ति हो, पराधीन न करना। अत्याचारी चाटुकारी से बचाना, न्यायालय (कचहरी) में जाने से बचाना।

मां का स्वभाव

(१) अपनी सन्तान और अपनी बहुओं की कभी किसी के सामने गिला न करती थीं।

(२) झगड़े, कलह, शोर से बहुत घबराती और तुरन्त अपने घर भीतर चली जाती। किसी के अधिक बोल देने पर भी चुप रहती, प्रत्युत्तर देकर बात को न बढ़ाती।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) अपनी बहुओं अथवा पुत्र पौतों से कभी दुःख या प्रतिकूलता पाती तो उपेक्षा वृत्ति कर लेती, मुंह से कुछ न कहती, न शिकायत करती।

(४) जब खाने के लिये गेहूं लेनी हो तो पहिले दो चार दाने मुंह में चबा कर नमूना के देखती। जिस गेहूं में चीड़ होती वही लेती।

(५) आटे को इतना खूब गूंथती, बार बार मलती रसाती कि रोटी नरम और बहुत स्वादिष्ट बनाती और अन्न को बढ़ा देती।

(६) सब्जी, दाल थोड़े घृत से बहुत स्वादिष्ट बनाती खाने वाला थोड़े घी को भाँप ही न सकता।

(७) मेरा लोगों में बड़ा मेल जोल था। फिर गरीबी आ जाने पर जब कोई मेहमान मिलने आ जाते, तो तत्काल कढ़ाही तेल की रख कर बेसन के पकोड़े बना कर थाली में मेहमानों के सामने ला रखती मेरी लाज रखने के लिये।

(८) कभी अपने बरतन, मटके, सुन्धड़ा, घड़ों, छाछ मटकी को कभी खाली न होने देती। लस्सी लेने वाला कोई आता तो जितनी लस्सी देती उतना जल और डाल देती, कभी खाली न होने देती और न याचक को निराश लौटाती।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) रात्रि को सब बरतनों, वस्तुओं की दैनिक पड़ताल संभाल करती।

(१०) दिन हो अथवा रात्रि, कभी झूठे बरतन न रहने देती, सदा शुद्ध रखती। यह सब कार्य घरेलू तो और भी बहुत माताएं जो सुघड़ हैं करती हैं, शेष सब सामान्य रूप से घर के काम करती हैं। ये देवियों के लिये शिक्षाप्रद बाते हैं परन्तु इससे अधिक बातें जिन के कारण मैं अपनी माता को अपना जीवन उदर पूरक नहीं अपितु जीवन रक्षक के रूप में मानता हूँ वे बहुत ध्यान देने योग्य हैं।

इतनी अतीव निर्धनता हो, उदर पालने के लिये आवश्यकता हो, दिन रात अपने घर की चार दिवारी में बैठ कर श्रम तप करना, अपने यौवन काल में अपने सदाचार की रक्षा करना, और बच्चों के आचार विचार का ध्यान रखने और अति प्रेम की रीति से सुलझाना जो मेरे जैसे भोलें भाले सरल बच्चे के मस्तिष्क में बैठ जावें, साधारण देवियों का काम नहीं।

प्रभु देव ने मेरी मां की और हमारी लाज पूज्या नानी जी की छत्र छाया बनाकर अपने मंगल वरद हाथ द्वारा कैसी बचाई ! मैं भी समझता हूँ कि वह सविता देव मेरी मां नानी का गुप्त प्रेरक रक्षक बना रहा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी नानी ने भी सारी आयु वैधव्य में काटी। मेरी अम्मां अभी गर्भ में थी कि मेरे नाना जी का स्वर्गवास हो गया परन्तु मेरी नानी एक सच्ची तपस्विनी सती साध्वी सिंहनी ईश्वर भक्त और सदाचार की दिव्य मूर्ति प्रसिद्ध थी, उसी की छत्र छाया में भगवान ने हमारा उत्थान और कल्याण किया। मेरी नानी ६०–६५ वर्ष की आयु में दिसम्बर १६४२ में गुजरी।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज के नियम

१—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामि, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

मुद्रक : ग्रेजुएट प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली रोड, रोहतक।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.